Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान [मासिक]

(१६ नवम्बर से १५ दिसम्बर, १९८५ तक)

…पमाला की शुभकामनाएं

तमसो मा ज्योतिर्गमय

वैंदिक धर्म के पुनरुद्धारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३१ अक्टूबर :
प्रथम पुण्यतिथि
पर
राष्ट्र का नमन

श्रीमती इन्दिरा गांधी एक साहसी महिला थीं, जिन्होंने अपने कार्यकाल में राष्ट्र की प्रगति के लिए पूरी शक्ति से प्रयत्न किया। देश की जनता ने उन्हें अपना पूरा समर्थन और प्यार दिया। जीवन के उतार-चढ़ाव को उन्होंने केवल परिस्थितियों की अनुकूलता-प्रतिकूलता मात्र समझा, जीवन की जीत-हार नहीं। इसी कारण वे अपने जीवन में हार को जीत में बदल सकीं और अपनी मृत्यु को भी अमरता में।

एक वर्ष पूर्व देश ने अपने प्रधान मंत्री को अपने ही घर में अपने लोगों द्वारा शहीद कर दिया। उन्होंने शहीद होकर देश की दुर्बलता को दूर करने का संदेश दिया—हम अपने राष्ट्रीयता के लक्ष्य को अभी पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर सके। जब देश का प्रत्येक नागरिक देश को स्वयं से पहले समझ कर धर्म, जाति और सम्प्रदाय के विभागों से उठकर अपनों में अपने विश्वास को जीवित करने में समर्थ होगा, वही इस बलिदान के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:

सम्पादक—**राकेशरानी**

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली—५

दूरभाष : ५६२६३६
५६४७४१
८०१२११

वार्षिक मूल्य : ३० रुपये
विदेश में : विमान से ४२ पौंड
६० डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर

आजीवन : ५०१ रुपये
विदेश में : १५०१ रु.
यह अंक : तीन रुपये
कार्तिक संवत् २०४२
नवम्बर १९८५, वर्ष १९, अंक ७

वेदोपदेश

कर्म करो, कर्म करो!

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥

(कुर्वन्नेव) कर्मों को करते हुए ही (इह) इस लोक में तूने (शतं समाः) सौ वर्ष पर्यन्त (जिजीविषेत्) जीने की कामना करना। (एवं त्वयि) तेरे विषय में ऐसा ही निश्चय है। (इतः अन्यथा) इससे और प्रकार का मार्ग (न अस्ति) तेरे लिए नहीं है। (न कर्म लिप्यते नरे) नर मनुष्य में कर्म लिप्त नहीं होता।

प्रस्तुत मंत्र में प्रभु आदेश करते हैं कि (१) इस इस लोक में तथा इस मानव-जीवन में **कर्माणि** कर्मों को 'कुर्वन एव' करते हुए ही तूने जीना है। (क) संसार का नियम ही 'क्रिया' है। यह 'संसार' है, 'संसृति' निरन्तर चल रहा है। जगत् है, गति में है। कार्लाइल के शब्दों में "What is this universe but an infinite conjugation of the verb to do" यह संसार 'कृ' (करना) धातु के विविध रूपों के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। इस गतिमय संसार में अकर्मण्य होने का क्या मतलब ? (ख) अकर्मण्यता विनाश व ह्रास से सम्बद्ध है 'जो पानी खड़ा वह सड़ा' यह प्रसिद्ध है। 'पुष्पिण्यौ चरतो जंघे' चलने वाले की ही जांघें पुष्ट होती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

जगमग दीप जलें धरती पर···	—राकेशरानी	३
सम्पादकीय		४
महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी		७
इक्कीसवीं सदी का स्वर्ग	—क्षितीश वेदालंकार	१२
दान दाताओं की सूची		१५
दयानन्द चित्रकथा		१७
पंजाब केसरी ला० लाजपत राय	—दीनानाथ सिद्धान्तालंकार	३३
रोटी के बदले पत्थर (कांग्रेस की अन्त:कथा-५)		४३
दयानन्द चित्रकथा		४९
अब आर्यसमाज की शाखाएं क्या करें ?	—ब्रह्मचारी आर्यनरेश	६५
मानव निर्माण के लिए संस्कारों का महत्त्व	—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	७३
आह्वान—संकल्प (कवितायें)	—व्रजकिशोर 'अश्क'	७८
भाषाई विवाद खड़ा न करें	—व्रजकिशोर 'अश्क'	८१
क्या तेजमहालय ही ताजमहल है ?	—स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती	८७
राष्ट्र जीवन में आर्य तत्त्व के प्रतिष्ठाता-महर्षि दयानन्द	—योगिराज अरविन्द	९१
नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में	—प्रो० धर्मवीर (अजमेर)	९७
हत्यारों का इतिहास		११३
पैसे के पुजारी : गौ मांस के व्यापारी	—क्षितीश वेदालंकार	१२६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जगमग दीप जलें धरती पर...

जगमग दीप जलें धरती पर नष्ट सभी अंधियारा हो।
नभ का रावण अब दम तोड़े ज्योतित भारत सारा हो।

सत्यव्रती श्रीराम सभी के लिए दे गये यही सन्देश
वही मनुज है, वही सही नर माने वेदों का आदेश
नीति धर्म की रक्षा हित जो सहले हंस कर सारे क्लेश
उसी वीर पर गर्व करे यह आर्य भूमि यह भारत देश
राष्ट्र धर्म की रक्षा के हित, असिधारा व्रत धारा हो।
जगमग दीप जलें धरती पर, नष्ट सभी अंधियारा हो।

अन्यायी हो चाहे जो भी उससे ही टकराना है
अंधकार से ग्रसित धरा में उजियारा फैलाना है
त्याग तपस्या बलिदानों से अपना देश जगाना है
हिन्दु बन्धु सब एक रहेंगे यही मन्त्र दोहराना है
शिव, प्रताप का वंशज है जो, जिसे राम प्रभु प्यारा हो।
जगमग दीप जलें धरती पर नष्ट सभी अंधियारा हो।

खूब मनाएं पर्व हर्ष से आदर्शों पर ध्यान धरें
राम राज्य के स्वप्न पूर्ण हों, आओ देशोत्थान करें
हिन्दु राष्ट्र के लिए समर्पित होकर जन कल्याण करें
भारत-भू के लिए जियें हम, और इसी के लिए मरें
दयानन्द से प्रेरित होकर जिसने असिव्रत धारा हो।
जगमग दीप जलें धरती पर, नष्ट सभी अंधियारा हो।

श्रद्धानन्द-सी श्रद्धा धारें, लेखराम से हों मतिमान
सावरकर से राष्ट्र भक्त बन करें समर्पित अपने प्राण
बंदा, गोविन्द, सा व्रत धारें और जगायें हिन्दुस्थान
दीपोत्सव का तथ्य यही है, करें इसे हम ज्योतिर्मान्
एक दीप से जले दूसरा और तिमिर निस्तारा हो।
जगमग दीप जले धरती पर, नष्ट सभी अंधियारा हो।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

फिर चुनौती दे रहा हमको अंधेरा

अंधकार : अमावस्या ! दीपमालिका का अटूट सम्बन्ध है इस गहन अंधकार को मिटाने और प्रकाश फैला का संकल्प लेकर हम दीप जलाते हैं। घरों को स्वच्छ करते हैं और गह अंधियारे पर उजियारे की जीत की घोषणा करते हैं। पटाखे छुड़ाकर, फुल झड़ियां छुड़ाकर इसी वेला में हम लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। ऐश्वर्य क बुलाते हैं।

इस प्रयत्न में राष्ट्र की समृद्धि की भावना निहित होती है। इसी रक्षित होता है धर्म। मनमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के राम राज्य से सुराज्य सृजन का उल्लास जागता है। शताब्दियों से इस पावन पर्व पर समस्त राष्ट्र शक्ति सम्पन्न हो विजय का संकल्प ग्रहण कर प्रगति पथ पर गतिमान् होने का अपना दृढ़ निश्चय ही व्यक्त करता है।

किन्तु आज भी तो हिन्दुस्थान के आंगन में अंधेरा छाया ही हुआ है राष्ट्र धर्म के नंदा दीप को बुझाने के लिए षड्यन्त्र रचते हुए अनेक देशी और विदेशी शक्तियां सक्रिय हैं। समाज में सड़ी-गली कुरीतियां अभी भी समाज को विगलित कर रही हैं। अस्पृश्यता का अमानवीय कलंक एक नासूर बना हुआ है। इसी दुर्बलता का लाभ ले रहे हैं पेट्रोडालर और डालर के बल पर भारत विजय का दुस्वप्न अपने मन में संजो रहा है। निर्धनता की आंधी मे सन्त्रस्त हमारे ही बन्धुओं को बहकाने और पथभ्रष्ट करने के लिए ये शक्तियां सक्रिय हैं।

अतः इस तथ्य को समझना होगा कि यह दीपोत्सव हमारे लिए एक चुनौती की वेला भी बनकर आता है। हमें अस्पृश्यता, अभाव और असमानता को समूल नष्ट करना होगा। छुआछूत को भी जलाना होगा। समस्या का

(शेष पृष्ठ ६ पर देखें)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीप जलाओ—स्नेह सरसाओ

फिर आ गई है दीपमालिका। आप भी अपने गृह द्वार और आंगन में दीप जलाएंगे, समान्य जन की झोंपड़ी से लेकर श्रीमन्तों की ट्टालिकाओं तक सर्वत्र अनेक दीपवर्तिकायें जलेंगी किन्तु दीप जलाते समय निक विचारिये कि क्या यह नन्हा-सा दिया जो स्वयं जलकर प्रकाश दे हा है, अंधकार से जूझ रहा है, आपके मानस-पटल पर व्यक्त अंधेरे को ी दूर कर पायेगा। क्या दीपावली के इस पुनीत पर्व पर में जले ये दीप झ, आपको और यों कहिये कि हम सबको यह नहीं समझा रहे कि अज्ञान ा रावण अभी भी जला नहीं है। क्या अज्ञान और अभाव से आज भी कोटि-ोटि जन पीड़ित नहीं हैं ? शायद दीपावली के इस मंगल पर्व पर भी वे ूखे ही रात बितायेंगे। आज भी उन्हें पीड़ित और अपमानित होना ड़ता है।

बन्धुओ, दीप जलाओ, पर ऐसे घर और परिवारों में व्याप्त अंधकार ो दूर भगाने के लिए शिव संकल्प ग्रहण करो, जिनमें, भी आज गहन तिमिर व्याप्त है। उन्हें गले लगाने का व्रत लो, जिन्होंने हमारे और आपके ाथों उपेक्षा सही है। क्रान्ति की वह मशाल जगाओ जिसके प्रकाश से सबके न में आशा की ज्योति जगे। संकल्पबद्ध होकर यह घोषणा करो कि वनवासी, रिजन, गिरिजन सभी अपने हैं। उपेक्षित जनों के कष्ट हरण करने का प्रण ो। मानव को मानव समझ कर सभी के अभावों को मिटाने का संकल्प रो।

दीप से दीप जलाओ, प्यार की पुनीत गंगा बहाओ, घृणा। द्वेष, दुर्नीति ौर अन्याय का कूड़ा-करकट जलाकर इस भव्य भारत भूमि को, इस आर्य ेश को, हिन्दुस्थान को वास्तविक अर्थों में महान् बनाने का सत् संकल्प रो, इस दीपमालिका पर्व पर। आज हम सब एक प्रकार की क्रान्ति के ार पर खड़े हैं। हमें निर्माण करना होगा एक स्वस्थ समाज और समृद्ध माज का। इतना ही नहीं हमें सत्य की, धर्म की और मानवता की भी रक्षा करनी होगी। अतएव हमारा आप सबसे अनुरोध है कि आप दीपमाला की इस वेला में पिछड़े वर्गों के परिवारों की भी सुध लीजिये। उनके घरों में भी मिष्ठान्न दीजिए, अपना प्यार उनके प्रति व्यक्त कीजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म ज्योति का नया दीप जलाये रखना है तो हमें सभी प्रभु पुत्रों प्रति भी अपनत्व जताना होगा। उन्हें गले लगाना होगा। अन्य को सही मार्ग अंधकार मिटाने का, सम्पूर्ण विश्व में आलोक बिखराने क नहीं है। प्रभु आपको दीपोत्सव पर ऋद्धि-सिद्धि और समृद्धि प्रदान करें इसी प्रार्थना के साथ दीपोत्सव की शुभकामनाएं।

—राकेशरानी

(पृष्ठ ४ का शेष)

हल है निर्धनता की समाप्ति। सभी प्रभु पुत्र हैं, इसकी अनुभूति कोई छोट है न कोई बड़ा है और भारत में कोई अछूत नहीं, छूआछूत नहीं, सभी समान हैं। यही शबरी को सम्मान देने वाले बनवासी वानरों से अपनत्व दर्शाने वाले श्रीराम का आह्वान है और यही देव दयानन्द का दर्शन भी है।

उठो, जागो और समृद्ध-सबल हिन्दू समाज के निर्माण के लिए सभी को समान अधिकार प्रदान करो। जन्मता कोई छोटा या बड़ा नहीं, इस तथ्य को स्वयं समझो और समझाओ। इसी संकल्प को साकार करने से आपका जीवन ज्योतित होगा और ज्योतिर्मय होगा आर्यावर्त्त हिन्दुस्थान। □

क्या आप हिन्दू हैं ?

क्या आपको अपने धर्म, संस्कृति और परम्पराओं पर अभिमान है ?
क्या आप अपना सब कुछ बचाने की भावना रखते हैं ?
यदि आपका उत्तर हां में हो तो

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
के स्वयं सदस्य बनें

और अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें।

हिन्दू जागो ! देश बचाओ !!

मंत्री, अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, वेद मन्दिर, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

दीपमाला कैसे मनाएं ?

दीप जलाने से पहले तनिक ठहरिए, विचार कीजिए और संकल्प लीजिए कि हम अन्धकार को समाप्त करने का व्रत लेते हैं।

यह दृढ़ निश्चय कर फिर दीपक जलाइए और दीपमाला मनाइए।

ऐसे में अपने उन बन्धुओं को न भूलें जिनके घर आततायियों ने उजाड़े हैं—जिनके बच्चे भूखे हैं—जिन पर कष्टों का पहाड़ टूट पड़ा है।

यदि इस पर्व पर आपने एक भी अंधेरे घर में दीपक जला दिए तो समझ लें कि आपकी दीपमाला सफल है।

परमात्मा उन्हें ही देता है, जो औरों को देते हैं। आप उन्हें दो जिन्हें आवश्यकता है। प्रभु आपको इतना देगा कि आपका घर-आंगन समृद्धि से भर जायेगा।

अपने मानस में सभी के प्रति प्यार की गंगा बहा दो और दुःखी के आंसू पोंछ कर उसे जीवन दो। फिर देखो श्री–लक्ष्मी आप पर कितना आशीर्वाद बरसा देती है।

अपने पराये के भेद से ऊपर उठो। धरती को परिवार मानो और कम से कम आज के दिन अपने मन में स्नेह–उदारता–ममत्व उत्पन्न करो। दीन दुःखी कष्ट में पड़े मनुष्य को उठाकर गले से लगा लो, उसके साथ मिल-बांटकर खाओ। आपका जीवन ज्योतिर्मय हो जाएगा।

अभाव के कारण कोई दीप बुझने न पाये, कहीं कोई शून्य उभरने न पाए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन का यह आदर्श प्यार के मन्त्र से पूजकर अभय, सबल नव निर्माण के लिए आपको प्रेरित करेगा।

दीपमाला आपको नया ज्योतिर्मय पथ प्रदान करे।

मुसलमानों का क्या किया जाये

आज फिर हिन्दू-मुसलमानों का प्रश्न गंभीर रूप से खड़ा हो गया है। इस प्रश्न को हमारे राजनैतिक कर्णधारों ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए उभारा है। होना तो यह चाहिए था कि १९४७ में हिन्दू-मुसलमान के प्रश्न पर बंटवारा होने और पाकिस्तान बन जाने के बाद मुसलमान पाकिस्तान चले जाते और हिन्दू भारत में रहते। किन्तु यह नहीं हुआ।

मुसलमानों के लिए तो पाकिस्तान भी बन गया और हिन्दुस्तान भी उनका घर ही बना रहा। राजनीतिज्ञों ने वोट बटोरने के लिए फिर उनकी खुशामद की जिसके परिणाम स्वरूप आज फिर भारत में मुसलमान सिर उठा रहे हैं।

न्याय की मांग थी कि जो व्यवहार पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ हो रहा था वही भारत में मुसलमानों के साथ होता। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। उनके साथ भारत में समानता का ही व्यवहार नहीं हुआ, अपितु उनको नेताओं ने मेहमानों की भांति रखा और सिर पर बैठाया।

इसी का परिणाम है कि वे मुसलमान होने के नाते फिर से विशेष अधिकार मांग रहे हैं। सेना पुलिस प्रशासन में निश्चित अनुपात चाहते हैं। शिक्षा, कानून और व्यवहार में अपनी पृथक स्थिति की मांग करते हैं। तात्पर्य यह है कि बंटवारा होने के बाद भी भारत के टुकड़े कराकर, अपना भाग लेने के बाद भी हमारे हिस्से में बराबर के अधिकारी बनकर अपना नया घर मांगने की स्थिति बना चुके हैं।

इस बीच तीन बार इस्लामी—पाकिस्तानी सेनाएं भारत को मिटाने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के लिए भारत से युद्ध कर चुकी हैं। अगर उनका वस चलता तो सारे भारत पर पाकिस्तानी झंडा फहराता। किन्तु सौभाग्य से भारत की सेना और जनता जागरूक है, जिसके कारण तीनों बार पाकिस्तान को पिटना पड़ा। १७ बार हराने पर मुहम्मद गोरी को पृथ्वीराज क्षमा कर सकता है, एक बार हराने पर पृथ्वीराज को गौरी क्षमा नहीं कर सकता। पाकिस्तान और गौरी एक हैं। उनकी नीति, रीति, लक्ष्य एक हैं। इस्लाम तलवार पर विश्वास रखता है काफिर को जो इस्लाम को न माने, जीवन का अधिकार इस्लाम नहीं देता, इस सच्चाई को कोई अन्धा भी तो नहीं झुठला सकता।

आज भारत में अरबों रुपया अरब देशों से इस्लाम के प्रचार के लिए आ रहा है। मुसलमानों द्वारा अनेक विवाहों के कारण परिवार नियोजन का बहिष्कार करने से उनकी संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। हजारों मुसलमान अवैध रूप से भारत में आ रहे हैं। कश्मीर, असम में घुसपैठिये इन क्षेत्रों को छोटा पाकिस्तान बना रहे हैं। ऐसी स्थिति में भारत के हिन्दुओं के समक्ष ज्वलंत प्रश्न है कि वे क्या करें।

शासन हिन्दुओं को सांप्रदायिक और मुसलमानों को शान्ति का देवता मानता है। हिन्दू अपने को हिन्दू कहते डरता है। हिन्दू संगठन के नाम से सब कांपते हैं। चारों ओर एक ऐसी लहर चल रही है जिसे हम मूर्खता की संज्ञा ही दे सकते हैं।

भारत के इतिहास में हमारे धर्म, सभ्यता-संस्कृति पर इतना बड़ा संकट पहले कभी नहीं आया। आज चारों ओर से हमें मिटाने की तैयारियां हैं। अग्नि का ज्वालामुखी सब कुछ भस्म करने के लिए सुलग रहा है। इसलिए हमारा कथन है कि हिन्दू को जीना है तो जागना होगा। भारत की स्वतंत्रता बचानी है तो मूर्खतापूर्ण कोरे आदर्श छोड़ने होंगे। हिन्दू को संगठित करना होगा। यदि नहीं तो सर्वनाश को कोई रोक न सकेगा।

आप जानना चाहेंगे कि मुसलमानों का क्या बने ? इस प्रश्न का उत्तर हम हिन्दू के नाते नहीं, भारत के नागरिक के नाते उदारतापूर्वक दे रहे हैं—

१. मुसलमानों को चाहिए कि वे अपने को बदलें। व्यक्तिगत बातों में अपने मजहब का वे पूरी तरह पालन करें। रोजा, नमाज आदि में वे स्वतन्त्र रहें।

२. सामूहिक स्तर पर वे भारत के अन्य नागरिकों की तरह रहें। पृथक् भाषा, पृथक् अधिकार, पृथक् कानून मांगने की प्रवृत्ति छोड़ें। उनकी भाषा वेश-रहन-सहन सब में भारत के अन्य नागरिकों की भांति समानता हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३. भारत राष्ट्र के प्रति उनकी प्रथम निष्ठा हो, भारत की भाषा के प्रति, संस्कृति और परम्परा के प्रति उन्हें प्यार हो। वे यदि मक्का-मदीने के गीत गा सकते हैं तो गंगा-यमुना और भारत मां के गीत गाने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

४. उन्हें अपनी पृथक्वादी मनोवृत्ति सर्वथा छोड़ देनी चाहिए। वे भारत के बनकर रहें और समान स्तर पर रहें।

हम उन्हें समान स्तर तो देने को तैयार हैं, किन्तु उन्हें विशेष अधिकार देने को तैयार नहीं। मुसलमानों को यदि तमूरलंग, औरंगजेब, मुहम्मद गौरी और नादिरशाह से प्रेरणा लेनी है तो उन्हें भारत को छोड़ देना चाहिए।

प्रश्न उठता है कि क्या यह संभव है कि मुसलमान अपने को बदलें। उत्तर में हम कह सकते हैं कि यह उनके लिए सर्वोत्तम मार्ग है।

यदि वे नहीं बदलते तो उन्हें पाकिस्तान जाना होगा और शासन यदि इसी तरह उन्हें सिर पर चढ़ाता रहा, जामा मस्जिद का इमाम यदि इसी तरह धमकियां देता रहा तो हम चाहें या न चाहें, हिन्दुओं को या तो संगठित होना होगा या फिर मरना होगा। और कोई मार्ग है ही नहीं।

देश भीतर ही भीतर सुलग रहा है। एकता की अपीलें समस्या का हल नहीं हैं। हिन्दुओं को दबाना या कोसना भारत राष्ट्र की सेवा नहीं—हत्या है। रास्ते केवल दो हैं—मुसलमान भारत मां के पुत्र बन जायें या भारत छोड़कर अपने घर पाकिस्तान में चले जाएँ। ये दोनों विकल्प न माने गए तो हिन्दुओं को संगठित होकर भावी संकट का सामना करना होगा।

देश की संस्कृति, स्वतन्त्रता और अखण्डता यदि अब नष्ट नहीं करनी तो हमें स्थिति को समझ उसका सामना करने की तैयारी करनी होगी।

यह सब कुछ हम जोश में नहीं, सोच-समझ कर शान्ति से स्थिति का मूल्यांकन करते हुए लिख रहे हैं। हम प्यार करने को तैयार हैं बशर्ते कि कोई हम से भी प्यार करे।

पर यदि कोई हमारी मां के सिर पर प्रहार की सोचता है तो हम इतने कायर नहीं कि पिटते रहें और प्यार के गीत गाते रहें।

हिन्दुओ अब ऋषि दयानन्द के दिखाए मार्ग 'सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए' पर आचरण करना ही होगा।

रक्षा का अन्य कोई मार्ग है ही नहीं।

—वेदभिक्षुः

(जन-ज्ञान मासिक के मार्गशीर्ष संवत २०३७ के अंक से उद्धृत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की — ६० पैसे
२. भारत के मुसलमानों का क्या करें ? —वेदभिक्षुः — ६० पैसे
३. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ? — ६० पैसे
४. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षुः — ६० पैसे
५. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर — ५ रु०
६. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर — ६० पैसे
७. पोस्टर – दो प्रकार के — १ रु०
८, इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी — ६० पैसे
९. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—ज़हीर नियाजी — ६० पैसे
१०. हिन्दू जागो ! देश बचाओ ! — ६० पैसे
११. इस्लाम—एक परिचय — ६० पैसे
१२. A Challenge to the Christian Faith — ३० पैसे
१३. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षुः — ६० पैसे
१४. पादरियों को चुनौती — ६० पैसे
१५. बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी — ६० पैसे
१६. क्या ईसा खुदा का बेटा था ! — ६० पैसे
१७. ...और पादरी भाग गया — ६० पैसे
१८. Christianity Unmasked — १ रु०
१९. The Clarion Call — ६० पैसे
२०. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ? — ६० पैसे
२१. क्या भारत का एक और विभाजन होगा ? — ६० पैसे
२२. तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ? — ६० पैसे

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और

५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन

प्रत्येक आदेश के साथ १/४ धन अगाऊ भेजें ।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली—५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इक्कीसवीं सदी का स्वर्ग

—क्षितीश वेदालंकार

चिरकाल से मनुष्य जाति को स्वर्ग की कल्पना मुग्ध करती रही है। जो सुख और ऐश्वर्य मनुष्य इस पृथ्वी पर प्राप्त करना चाहता है और प्राप्त नहीं कर पाता, उसे यथार्थ में बदलने के लिए उसने स्वर्ग की कल्पना की और स्वर्ग का ऐसा मनमोहक चित्र खींचा कि आम आदमी भी उससे आकर्षित होकर ऐसे स्वर्ग का प्रलोभन देने वाले आचार्यों के पीछे आंख बन्द करके चल पड़ा।

एक समय ऐसा भी था जब ईसाई पादरी अपने भक्तों से स्वर्ग के नाम हुण्डी लिखवाया करते थे। वे अपने भक्तों से कहते थे कि तुम को स्वर्ग में ऐश और आराम के जो-जो साधन चाहिए उनकी सूची बनाओ और इस लोक में ऐश के उन साधनों को प्राप्त करने के लिए जितना पैसा खर्च होता है, वह सारा पैसा चर्च में जमा करवा दो। पादरी बाकायदा उस राशि की हुण्डी देगा। हुण्डी की एक नकल चर्च में रखी जायेगी और जब वह अमुक धर्म का अनुयायी दफनाया जायेगा तब ताबूत में उस हुण्डी की दूसरी नकल उस मृत व्यक्ति के सिरहाने रखी जायेगी। आखिर कयामत का दिन आयेगा तब सब मुर्दे कब्रों में से निकल कर खुदा के सामने हाजिर होंगे। उनके हाथ में अपने सिरहाने रखी हुन्डी की नकल होगी। वह नकल खुदा के सामने पेश की जायेगी और खुदा उस हुण्डी के अनुसार उस श्रद्धालु धार्मिक भक्त के लिए उन सब चीजों की व्यवस्था स्वर्ग में कर देंगे जिनके लिए चर्च में पैसा जमा करवाया जा चुका है।

बाइबिल में, कुरान में या पुराणों में स्वर्ग का जैसा वर्णन आता है उसमें विशेष अन्तर नहीं है। उस स्वर्ग की प्राप्ति के लिए नाना सम्प्रदायों ने अपने भक्तों के लिए तरह-तरह के कर्मकाण्डों की और नियम-कायदों की व्यवस्था की है। इस स्वर्ग के प्रलोभन में ही भक्त लोग अनेक प्रकार की तपस्या और जटिल कर्मकाण्ड की विधियों का भी विधान के अनुसार पालन करने का पूरा प्रयत्न करते हैं। जिन लोगों ने स्वर्ग की कामना से यज्ञ का विधान किया था, शायद उन याज्ञिकों के मन में भी किसी ऐसे स्वर्ग की कल्पना रही होगी। ऐसा लगता है कि वही कल्पना कालान्तर में पुराण, कुरान और बाइबिल में रूपान्तरित होती हुई चलती चली आई। शायद इस धरा पर जीवन संघर्ष से घबरा कर और अल्प श्रम से अधिकतम लाभ प्राप्त करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की पलायनवादी मानसिक वृत्ति के कारण मनुष्य जाति में स्वर्ग प्राप्ति की यह लालसा बद्धमूल होती चली गई।

आचार्य रजनीश ने इसी नये नगर को इस सदी का नहीं, बल्कि अगली सदी का स्वर्ग बनाने का प्रयत्न किया है। ऐसा स्वर्ग जिसकी कल्पना बड़ी दिमागी उड़ान भरने वाले लोगों के लिए भी मुश्किल होगी। इस नगर के निर्माण पर भगवान् रजनीश ने १५ करोड़ डालर खर्च किए हैं और प्रति वर्ष इस पर लगभग ५ करोड़ डालर खर्च होता है। इस नगर में रजनीश के अनुयायियों के सिवाय कोई और नहीं रह सकता। लगभग ५ हजार चेले-चेलियों के साथ भगवान् यहां विराजते हैं।

स्वर्ग सुख की कल्पना करने वालों के लिए इतना बता देना ही काफी है कि यहां ५ सितारों वाले नहीं बल्कि ६ सितारों वाले होटल मौजूद हैं। शानदार जलपान गृह हैं। अत्याधुनिक फैशन की पोशाकें तैयार करने वाले डिजाइनर हैं, नग्न वस्तियां हैं, डिस्को नृत्यों की व्यवस्था है और काम वासना की तृप्ति के सब साधन सुलभ हैं। सही मायनों में 'कामरूप' प्रदेश कोई है तो यही है। यही ऐसी विशेषता है जिसके कारण दूर-दूर से चेले-चेलियां बंधे हुए यहां चले आते हैं। भगवान् के ठाठ-बाट का जहां तक प्रश्न है, उनके पास ५ हवाई जहाज हैं और ६१ रौल्स रौयस कारें हैं (रौल्स रौयस कार सबसे मंहगी मानी जाती है।)

परन्तु इस स्वर्ग की एक विचित्रता भी है। सब निवासी संन्यासी हैं या संन्यासिनियां हैं। सब महंगे गुलाबी परिधान पहनते हैं और सिर पर चमकदार नीले रंग की टोपी धारण करते हैं। हरेक के गले में भगवान् रजनीश के नाम के तावीज वाली माला है। भले ही इन चेले-चेलियों की आंखों में काम वासना झलकती हो, परन्तु "रजनीशपुरम्" की रक्षा के लिए जिस प्रकार की किले बन्दी की गई है वह भी इन संन्यासियों के माध्यम से ही की गई है। संन्यासी और हाथ में बन्दूक? पर "रजनीशपुरम्" की यही विशेषता है। सारे नगर में क्लोज सर्कट के टेलीविजन लगे हुए हैं। सब तरफ निगरानी के लिए चौकियां बनी हुई हैं। कोई भी यात्री यदि वहां जाना चाहे तो बन्दूकधारी संन्यासियों के पहरे में ही उसे जाना पड़ता है और ये पहरेदार एक क्षण के लिए भी दर्शक का साथ नहीं छोड़ते। मशीनगनों से लैस हैलिकाप्टर लगातार ऊपर घूमते रहते हैं। स्थान-स्थान पर पिल बाक्स बने हुए हैं और सारे नगर के चारों ओर कांटेदार तारें लगी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुई हैं, जिनमें निरन्तर बिजली की धारा प्रवाहित होती रहती है। उस तार को छूने का अर्थ है क्षण भर में मौत का आह्वान। इतनी तैयारी किस लिए है? यह सारा एक जासूसी उपन्यास जैसा दृश्य लगता है।

जब से पुणे से पलायन किया तब से पिछले चार वर्षों में रजनीश बिलकुल अलग-थलग रहे। कहा जाता है कि पिछले चार चार वर्षों से उनका बोलना बन्द था। किसी से बात नहीं करते थे। अपने निकटतम व्यक्तियों से भी नहीं। दर्शन भी सर्वथा बन्द। पर चार साल बाद वे बोले हैं और बोलते ही पत्रकारों के समक्ष उन्होंने घोषणा की है कि मैं भगवान् नहीं हूं। मेरा कोई वाद नहीं है। इससे पहले तो यह भी खबर थी कि वे अपना अलग "रजनीश सम्प्रदाय" अलग धर्म पुस्तक, अलग चर्च और अपने अनुयायियों के लिए बिल्कुल एक अलग धार्मिक विधान तैयार कर रहे हैं। पर अब अचानक उन्होंने स्वयं अपने पुराने रिकार्ड पर पानी फेर दिया।

अचानक यह परिवर्तन क्यों हुआ है, यह कहना मुश्किल है। परन्तु रजनीश के आश्रम में हमेशा उनकी संन्यासिनी शिष्याओं को लेकर बगावत होती रही रही है। पुणे में जब मां योगलक्ष्मी की जगह मां आनन्दशीला को गद्दी पर बिठाया गया था, तब बगावत हुई थी और अब मां आनन्दशीला को हटाकर किसी और नई को गद्दी पर बिठाया गया है तब यह परिवर्तन हुआ है। आनन्दशीला को रजनीशपुरम् से निकाल दिया है या वह छोड़कर चली गयी है। वह हमेशा अपने साथ रिवाल्वर रखती थी। कहा जाता है कि वह भगवान् को मारने पर उतारू थी, इसीलिए उसे आश्रम से निकाल दिया गया। वह बारंबार यूरोप के देशों की यात्रा करती थी और हर बार नशीली दवाइयों की तस्करी के आरोप में हवाई अड्डों पर पुलिस उसकी तलाशी लेती थी। अब इस आनन्दशीला ने और उनके कुछ संगी साथियों ने भगवान् पर अदालत में मुकद्दमा किया है जिसमें यह आरोप लगाया है कि करोड़ों रुपया जो भगवान् को कर्ज के तौर पर दिया गया था वह उन्होंने हड़प कर लिया है। (इधर महर्षि महेश योगी पर भी उनके शिष्यों ने ६ करोड़ रुपए का दावा ठोका है।)

क्या इक्कीसवीं सदी इन भगवानों के लिए प्रलयंकारी सिद्ध होगी और रजनीश ने पहले ही इसलिए अपने भगवान् के पद से त्यागपत्र दे दिया? अब इस इक्कीसवीं सदी के स्वर्ग का क्या होगा? □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दान-दाताओं की सूची

१५१) श्री गिरधारी लाल, बम्बई—

१०१) देने वाले

१. सर्वश्री, गुरु दयाल लाल, मेरठ। २. दिनेश के० झालानी, बम्बई। ३. जगदीशप्रसाद सिंह, चन्द्रपुर। ४. डा० एस. के., अकोला ५. श्रीअमरनाथ, अमृतसर।

१००) देने वाले

१. सर्वश्री, कौशल्या चड्डा, दिल्ली। २. जानकीदास बंसल, दिल्ली। ३. नारायण दास लालचन्द बम्बई। ४. कान्ति अग्रवाल बटाला।

७०) श्री धर्मपाल आर्य, पंजाब।—

५१) देने वाले

१. सर्वश्री,हंसराजशर्मा, शाहदरा। २. राधेलाल, आगरा। ३. शंकरलाल आर्य, अलीगढ़। ४. नरेन्द्र कुमार, अलीगढ़। ५. हरदेव सिंह, सहारनपुर। ६. देना त्रिवेदी, भावनगर। ७. राधेलाल अग्रवाल, बम्बई। ८. जानकी वाला गंदड़, नागौर ९. बनवारी लाल, कलकत्ता। १०. गोयलकांक्षी, पाली।

५०) देने वाले

१. सर्वश्री सत्यवती शर्मा बरेली। २. रामसखी देवी कटिहार ३. शिवजी पाठक बलिया। ४. बुद्ध प्रकाश पंजाब। ५. हरिवंश लाल वर्मा मुरादाबाद। ६. बदरी लाल रावत बीकानेर।

४१) श्री सुन्दरलाल गुहा दिल्ली।

३०) देने वाले

१. सर्वश्री, वासुदेव छांछीडया, खन्ना। २. सचिच्चदानन्द, रामगढ़। ३. वनेचन्द्रअमरदीप, कर्नाटक। ४. सूरजप्रकाशगोयल, दिल्ली। ५. अमरदीप, बैल्लारि। ६. प्यारेलाल गुप्त, खुरजा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२५) देने वाले

१. सर्वश्री सुखानन्द चुरू। २. पं० विमलेश आर्य बड़ौदा। ३. डगरराम प्रजापति मिर्जापुर। ४. सूर्यनारायण पादेवर जामतार। ५. प्रेमसिंह सहारनपुर। ६. डी. एस. इसकर धनबाद। ७. श्रीराम भाटिया भिवानी।

२२) श्री आर. एस. शर्मा दिल्ली।

२१) देने वाले

सर्वश्री —

१. डाह्या भाई जादौन। २. लीलाधर रमेशचन्द पहासू, बुलन्दशहर। ३. यशपाल आर्य कुरुक्षेत्र। ४. सत्यवती शर्मा दिल्ली। ५. राकेशकुमार शर्मा रामपुर। ६. लक्ष्मीराम शाहजहांपुर। ७. सावित्री देवी मुरादाबाद। ८. टी.पी.चन्द्रा आगरा। ९. श्रीमतीपुष्पाचौधरी कविनगर। १०. व्यवस्थापक आर्यसमाज अहमदाबाद। ११. महेश्वरजी धनवन्तरिधाम। १२. हरिशंकर दिल्ली। १३. धर्मप्रकाश मुजफ्फरपुर। १४. अवधबिहारीलाल गुप्ता मु०पुर। १५. श्यामलालआर्य फीरोजपुर। १६. अग्रवाल फर्नीचर हाउस करतारपुर। १७. राण साहेबराम मुन्नालाल महाराष्ट्र। १८ अशोककुमार तोदी बेतिया। १९. पं० बुधराम शर्मा फरीदाबाद। २०. रामगोपाल गौरीशंकर सिरसा। २१. राधाकृष्णराठी नागौर। २२. मोहनदास गुप्त गाजियाबाद। २३. मैं० लक्ष्मीचन्द एण्ड संस सहारनपुर। २४. बचनाराम प्रजापति, कुरुक्षेत्र। २५. प्राणनाथवर्मा जालन्धर। २६. कन्हैयाप्रसादपेशकार बस्ती। २७. बनवारी लाल राजस्थान। २८. हजारीलाल दिल्ली। २९. रामदास मुन्शीराम आर्य हरयाणा। ३०. रामप्रसाद सीतापुर। ३१. त्रिनाथ सदनजी उड़ीसा।

२०) देने वाले

१. सर्वश्री रामानन्द कुमार नागौर। २. श्रीचन्द महेशचन्द्रआर्य हलैना। ३. मानवकल्याण पुस्तकालय जालन्धर। दुर्गाप्रसाद शर्मा दिल्ली। ५ अरुण कुमार मु० नगर। ६. रमेशचन्द पबार बासोही। ७. श्री लक्ष्मण भीवादास राव महाराष्ट्र।

सभी दान-दाताओं का धन्यवाद।

राकेशरानी अध्यक्ष,
दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली—५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

दयानन्द चित्र कथा

दयानन्द संस्थान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेद भिक्षुः स्मृति ग्रन्थमाला

प्रकाशक :
पंडिता राकेशरानी अध्यक्ष
दयानन्द संस्थान, १५६७ हरध्यानसिंह
मार्ग नई दिल्ली-५
करोल बाग

पंचम संस्करण : १९८५

मूल्य ३ रुपये मात्र :

प्रधान कार्यालय :

दूरभाष : ५६२६३९/५६४७४१/८०१२१

वेद मंदिर, शहीद लेखराम नगर दिल्ली-३६

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए

पवित्र धर्म-ग्रन्थ : परमात्मा की वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य : ५०० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

पुस्तकालय संस्करण : २७५ रु०

उपहार संस्करण : लागत मूल्य : १,००० रु०

अभी केवल ७०० रुपये में लीजिये ।

आदेश के साथ ५० रु० अग्रिम भेजें । रेलवे स्टेशन लिखें ।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-५

दूरभाष : ५६२६३९-५६४७४१-८०१२११

मुद्रक : गोयल आफसैट प्रिन्टर्स, दिल्ली-110035

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

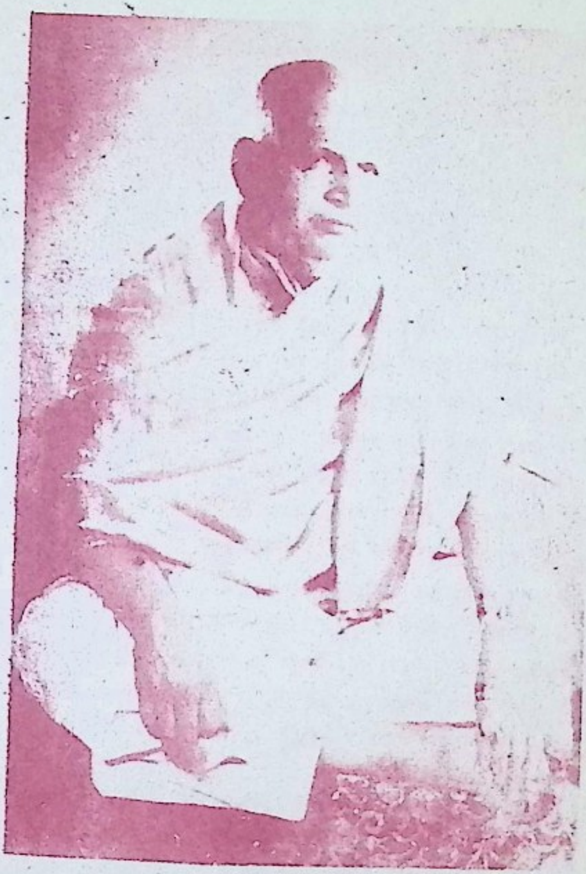

स्व० पं. महात्मा वेदभिक्षुः (लेखक—भारतेन्द्रनाथ)
[जन्म : १४ मार्च, १९२८ निधन : २१ दिसम्बर, १९८३]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महापुरुष का जन्म

मुसलमानों ने ६०० वर्ष तक हमें मिटाने का प्रयत्न किया। अंग्रेज • अपने पूरे बल से राम-कृष्ण वेद-शास्त्र की परंपरा को समाप्त कर ईसाइयत का प्रचार कर रहे थे।

चारों ओर निराशा थी। अज्ञान छाया था। कुरीतियों, पाखंड और अंधविश्वासों ने संसार के सब से महान् देश को जर्जर बना दिया था।

हम अपने गौरव को भूलते जा रहे थे। दासता और दमन से भारत की आत्मा अंधेरे में भटक रही थी। कोई नहीं समझ पा रहा था कि क्या करें ? कहाँ जाएं ? कैसे बचें ?

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद सभी के मन बुझे हुए थे। और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ईसा की आंधी में राम-कृष्ण का नाम लेने वाला कहीं भी दिखाई न देगा।

ऐसे संकट काल में गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम में १२ फरवरी सन् १८२५ को श्री करषन लाल त्रिवेदी के घर एक बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम था मूलशंकर।

यही मूलशंकर आगे चलकर महर्षि दयानन्द के नाम से भारत के धर्म, संस्कृति और परंपरा का रक्षक बना।

इसी महापुरुष ने भारत को स्वतन्त्र कराने की आधार शिला रखी। इसी ने तिलक-गोखले-गांधी-सावरकर को आगे बढ़ने की प्रेरणा की।

राम-कृष्ण ऋषि मुनियों की पावन परम्परा को पुनः जागृत करने और वेद का प्रचार करने के लिए मानव जाति सदा दयानन्द की जय-जयकार करेगी।

धरती अम्बर में गूंजेगा—दयानन्द का गौरव गान।
युग निर्माता देव पुरुष को, सब जन करते कोटि [redacted] ।।

आओ उस महापुरुष के जीवन को पढ़ें और अपना जीवन सफल बनाएं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

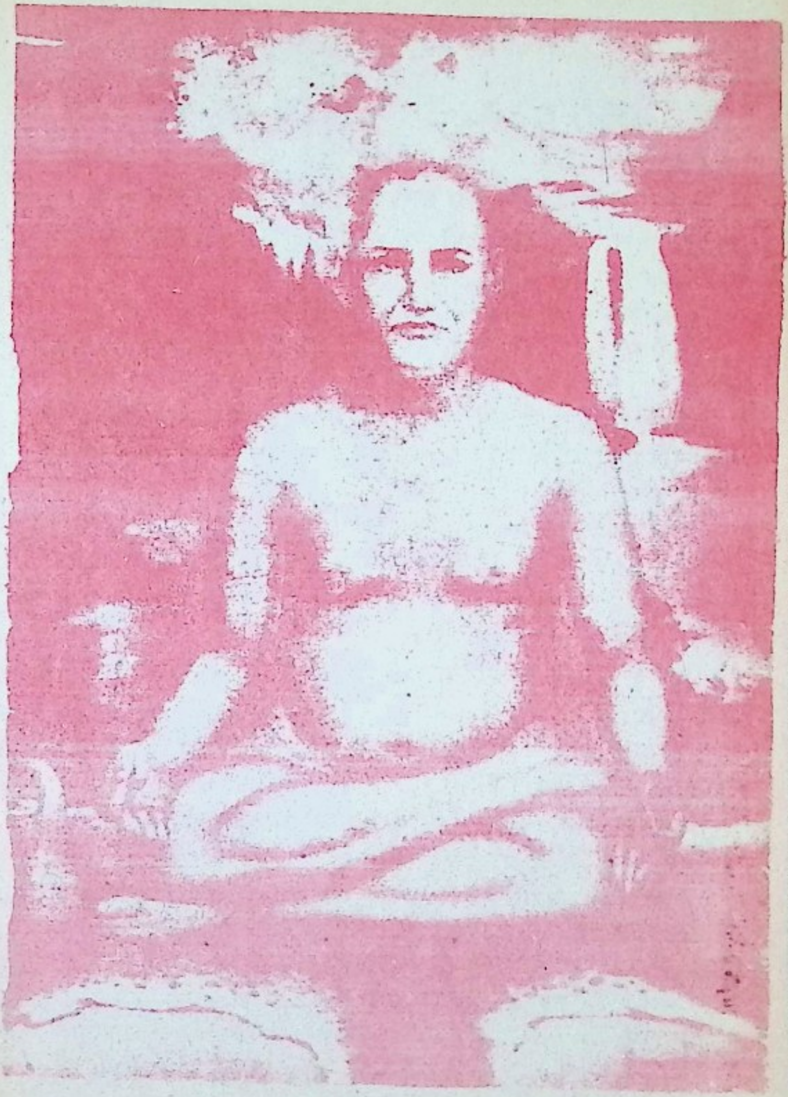

स्वामी दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छोटी-सी घटना : जागरण का मंत्र

शिवरात्रि थी !

बालक मूलशंकर के पिता धार्मिक विचारों के पवित्र ब्राह्मण थे। उन्होंने "मूल" को आज्ञा दी कि आज तुम्हें व्रत रखना होगा। रात को जागना होगा।

मूलशंकर ने पूछा—इससे क्या लाभ होगा ?

पिता का उत्तर था कि व्रत और जागरण से सच्चे शिव के दर्शन होंगे ?

बालक ने श्रद्धा से व्रत रखा और रात को जागता रहा। सारे बड़े-बड़े व्यक्ति सो रहे थे और बालक मूलशंकर जाग रहा था। उस के मन में आशा थी 'शिव' दर्शन की।

इतने में उसने देखा कि एक चूहा शिव की मूर्ति पर चढ़कर कूद रहा है। भोग खा रहा है। बालक का मन प्रश्न कर उठा—नहीं यह मूर्ति शिव नहीं हो सकती। जो एक चूहे को नहीं भगा सकता वह संसार को कैसे चला सकता है।

बालक ने पिता को उठाया और अपने मन का प्रश्न पूछा, पर पिता कोई समाधान न कर सके। बालक को डांट दिया।

मूलशंकर घर चला आया और खा पीकर सो रहा। पर मन में तो ज्ञान ज्योति जग चुकी थी।

कहां है 'शिव', कैसे मिलता है वह, कहां रहता है वह, कैसे उस से मिलें,? पर प्रश्नों का उत्तर किसी के पास नहीं था।

तभी प्रिय बहन और चाचा की मृत्यु ने मूलशंकर के मन को व्याकुल कर दिया। मृत्यु क्या है ? क्या यह टल सकती है ? क्या शिव से मिल कर मृत्यु से बचने का मार्ग मिल सकता है ?

'शिव' से मिलने की चाह ने 'मूलशंकर' को जागरण का मंत्र दिया। और...............

फिर मूलशंकर माया ममता छोड़ शिव की खोज में निकल पड़ा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

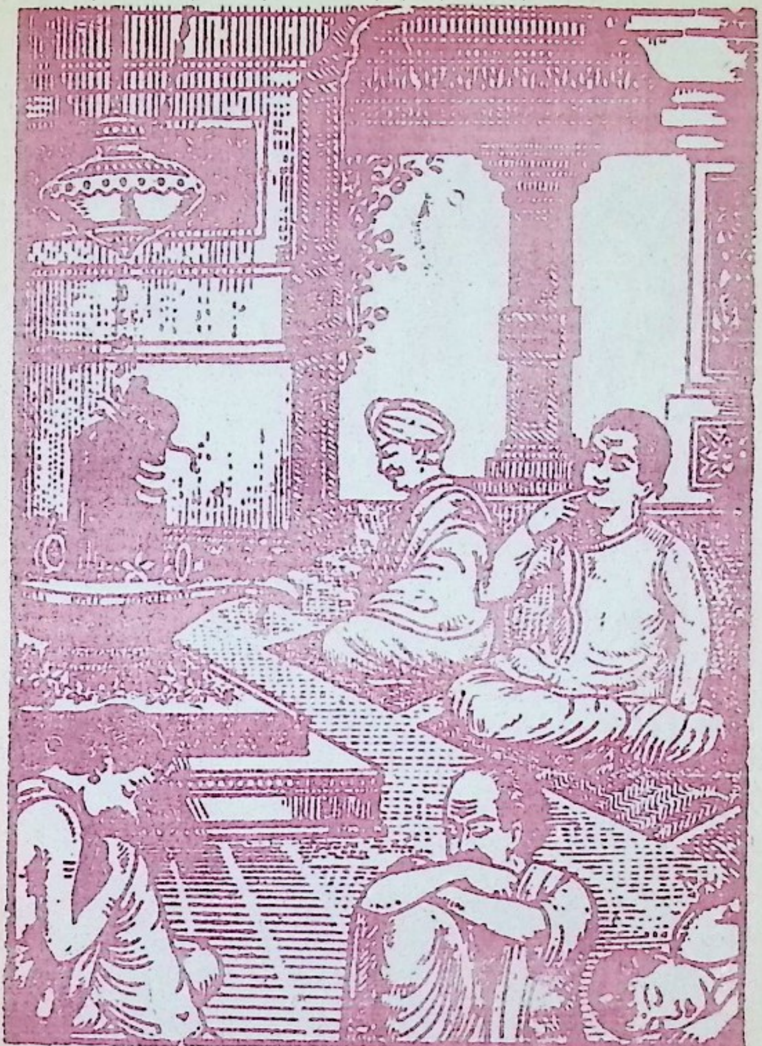

सोता देख जगाया, बोध रात्रि के दिव्य प्रहर ने ।
कहाँ देव है रहता सच्चा, प्रश्न उठा था मन मन्दिर में ॥
बालक 'मूल' सत्य भाव से, जाग उठा ले सच्चा ज्ञान ।
आओ हम भी बनें साधक, 'वेद' ग्रंथ का पीके ज्ञान ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

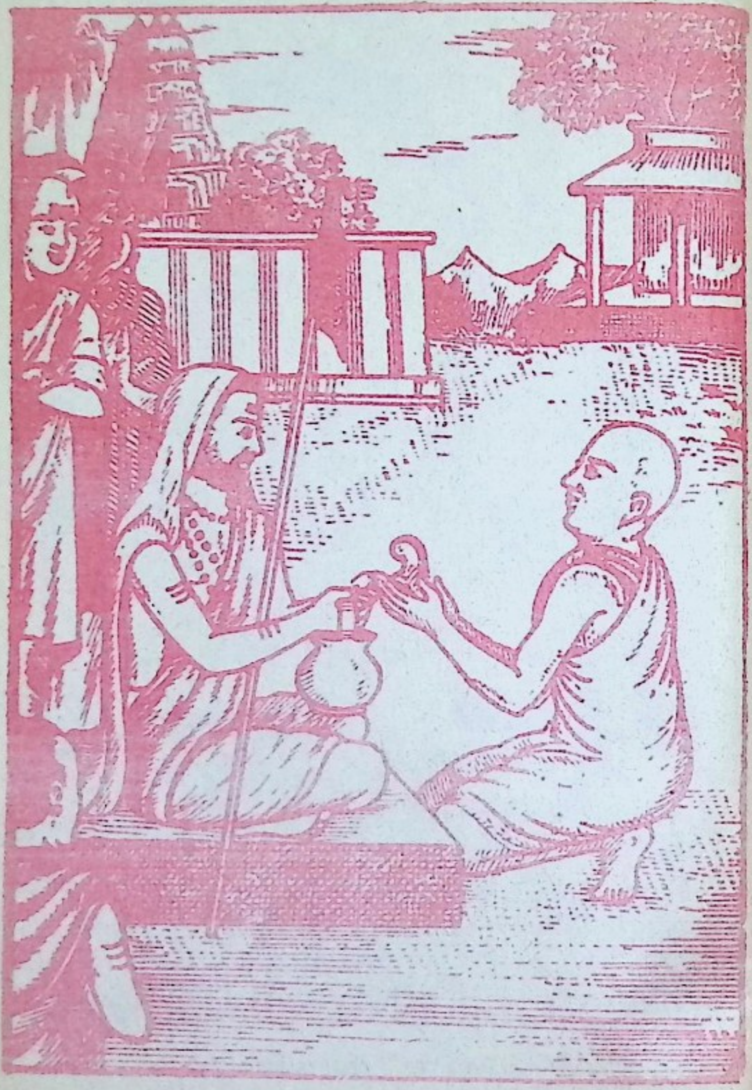

ज्ञान की खोज में भटकता मूलशंकर ब्रह्मचारी शुद्धचैतन्य बना और फिर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास ग्रहण कर स्वामी दयानन्द ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

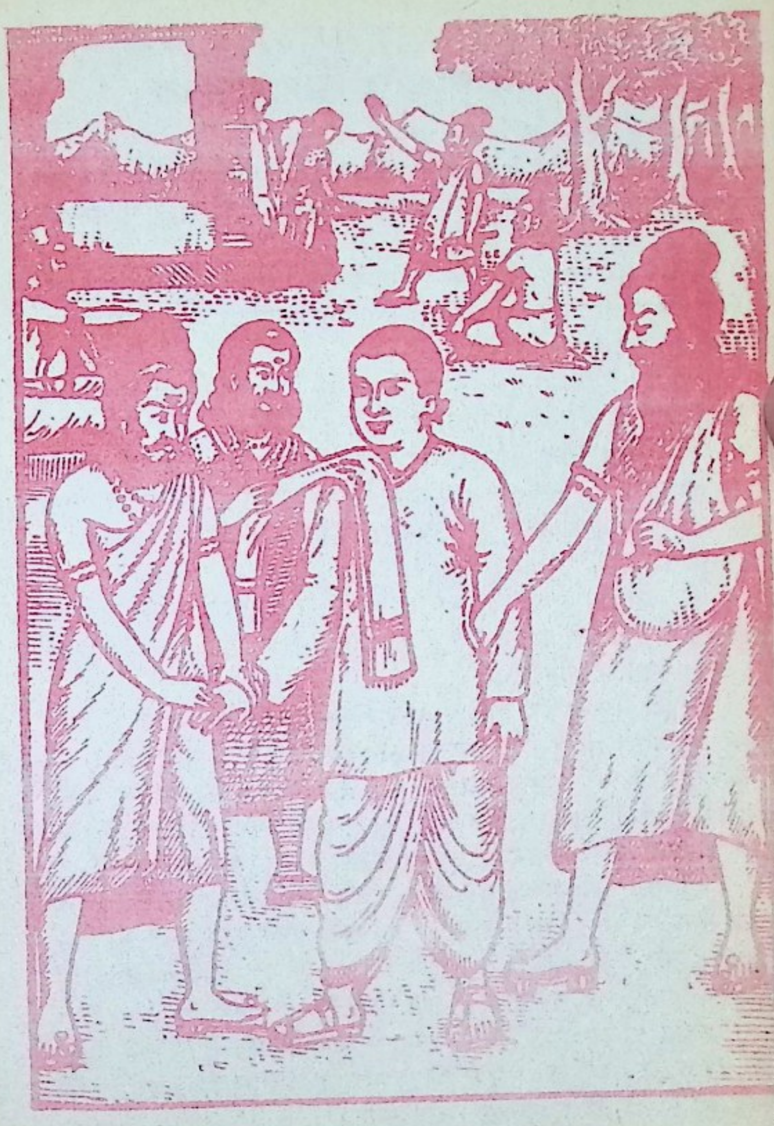

सच्चे शिव को जानने 'मूल' घर से निकल पड़ा तो ढोंगी साधुओं ने उसके वस्त्राभूषण उतरवा लिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरु दक्षिणा और शिष्य का व्रत

मूलशंकर घर से निकल गया।

ज्ञान की खोज में स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यास ग्रहण कर वह स्वामी दयानन्द बन गया। नाना स्थानों पर ज्ञान की खोज में भटकता रहा, पर कहीं तृप्ति न मिली।

तभी उसे ज्ञान हुआ कि मथुरा में एक महान् विद्वान् दंडी स्वामी विरजानन्द जी रहते हैं। स्वामी दयानन्द ने जाकर दंडी स्वामी का दरवाजा खटखटाया।

भीतर से प्रश्न हुआ—तुम कौन हो ? स्वामी दयानन्द ने उत्तर दिया कि यही जानने तो आया हूँ कि मैं कौन हूँ ?

द्वार खुल गया, शिक्षा आरम्भ हुई। योग्य शिष्य पाकर नेत्रहीन गुरु को प्रकाश मिल गया। गुरु के चरणों में बैठकर स्वामी दयानन्द ने सच्चा ज्ञान पाया। ज्ञान-अज्ञान का भेद समझा, धर्म-अधर्म का रहस्य जाना।

गुरु दक्षिणा का दिन आया। लौंग लेकर स्वामी दयानन्द गुरु-चरणों में उपस्थित हुए। गुरु ने पूछा, दयानन्द क्या लाये हो ? थोड़े से लौंग लाया हूँ गुरुदेव !

स्वामी विरजानन्द बोले ? वत्स ! मुझे तुमसे गुरु दक्षिणा में लौंग नहीं चाहिएं। मैं तुम से तुम्हारा जीवन मांगता हूँ। संसार वेदों को भूल चुका है, चारों ओर अज्ञान छाया है। दयानन्द जाओ, अपने पूरे बल से वेदों का प्रकाश फैलाओ। अज्ञान का अन्धेरा मिटाने के लिए तुम्हें अपना सारा जीवन भी आहुत करना पड़े तो करना दयानन्द।

दयानन्द का मस्तक गुरु के चरणों में झुक गया। आँखों से आँसू बह निकले ! और बोले—गुरुदेव ! दयानन्द अपने प्राण देकर भी 'वेद' ज्योति फैलाएगा। आपने जो ज्ञान दिया है उस ज्ञान को संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने का व्रत लेता हूँ।

इतिहास साक्षी है कि दयानन्द ने कितनी तपस्या साधना से गुरु के समक्ष की गई प्रतिज्ञा पूर्ण की। और अपने प्राण देकर वह ज्योति जलायी कि धरती का अन्धेरा भाग गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

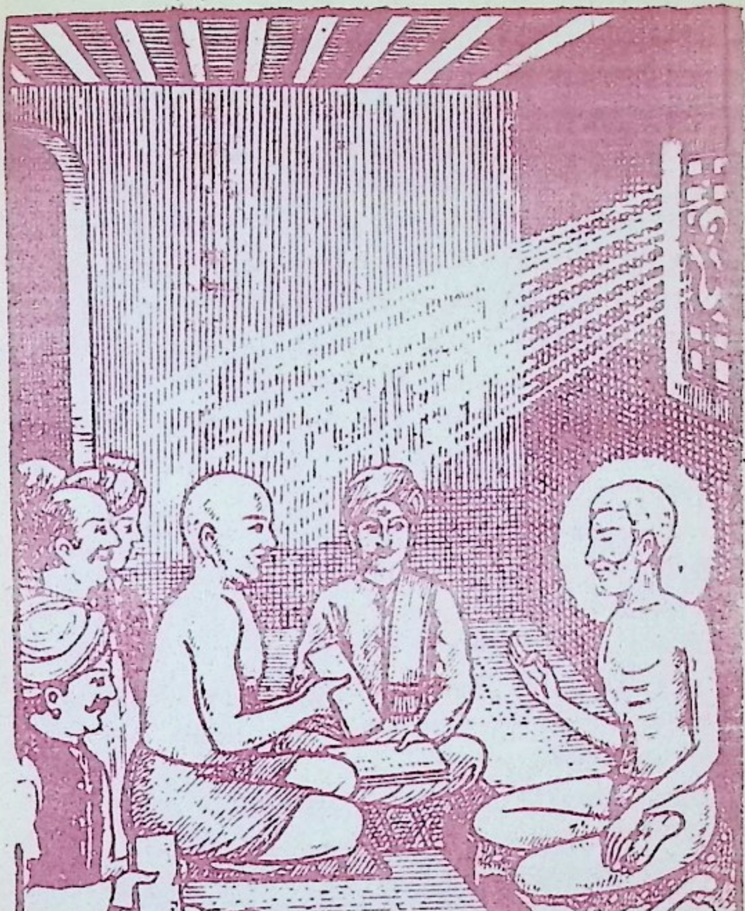

गुरु विरजानन्द जी सरस्वती के चरणों में : शिष्य दयानन्द —

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुम्भ में पाखंड—खंडिनी पताका

शिक्षा पूर्ण कर स्वामी दयानन्द गुरु का आदेश पूर्ण करने कर्म क्षेत्र में निकले। उन्होंने चारों ओर अज्ञान को देखा। अन्धविश्वासों की आंधी में सभी कुछ बिगड़ता पाया। वेद का नाम था, पर वेद नहीं थे। धर्म का घोष था पर धर्म के स्थान पर अधर्म छाया था।

पुण्य के नाम पर पाप का चारों ओर बोल-बाला था तभी उन्हें पता लगा कि हरिद्वार में कुम्भ का मेला हो रहा है। वे भी मेले में पहुँचे और वहीं पाखंड खण्डिनी पताका फहरा दी।

मेले में हलचल मच गयी। तर्क के तीरों से पाखंड कांपने लगा। धर्म के प्रकाश से अधर्म भागने लगा। बड़े-बड़े पाखंडियों के आसन हिल गए। चारों ओर भगदड़ मच गयी।

सत्य का प्रचार भारत की जनता ने पहली बार सुना। हजारों वर्षों के बाद धरती पर एक महापुरुष को धर्म का नाम लेने वालों ने देखा। ज्ञान का अमृत गंगा के जल के साथ बहने लगा तो हजारों के मन में नयी ज्योति जाग गयी।

पाखंडी—धर्म के ठेकेदारों ने स्वामी दयानन्द को अपना शत्रु समझा पर सच्चे सत्य के पुजारियों ने उन्हें धर्म के रक्षक के रूप में देखकर आशा की किरण जाना।

स्वामी दयानन्द ने भी अपनी दूर दृष्टि से अनुभव किया कि काम बहुत बड़ा है। पापों का पर्वत हिमालय-सा ऊंचा है इसे मिटाने के लिए अभी और तप-त्याग-साधना-बल चाहिए।

बस वहीं सब कुछ स्वाहा कर दिया, दान दे दिया। एक लंगोट था और था दयानन्द। चल पड़ा हिमालय की ओर शक्ति प्राप्त करने, प्रभु से मिलने।

प्रभु के चरणों में बैठे तपस्वी दयानन्द कुछ समय बाद अजेय दयानन्द बन कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

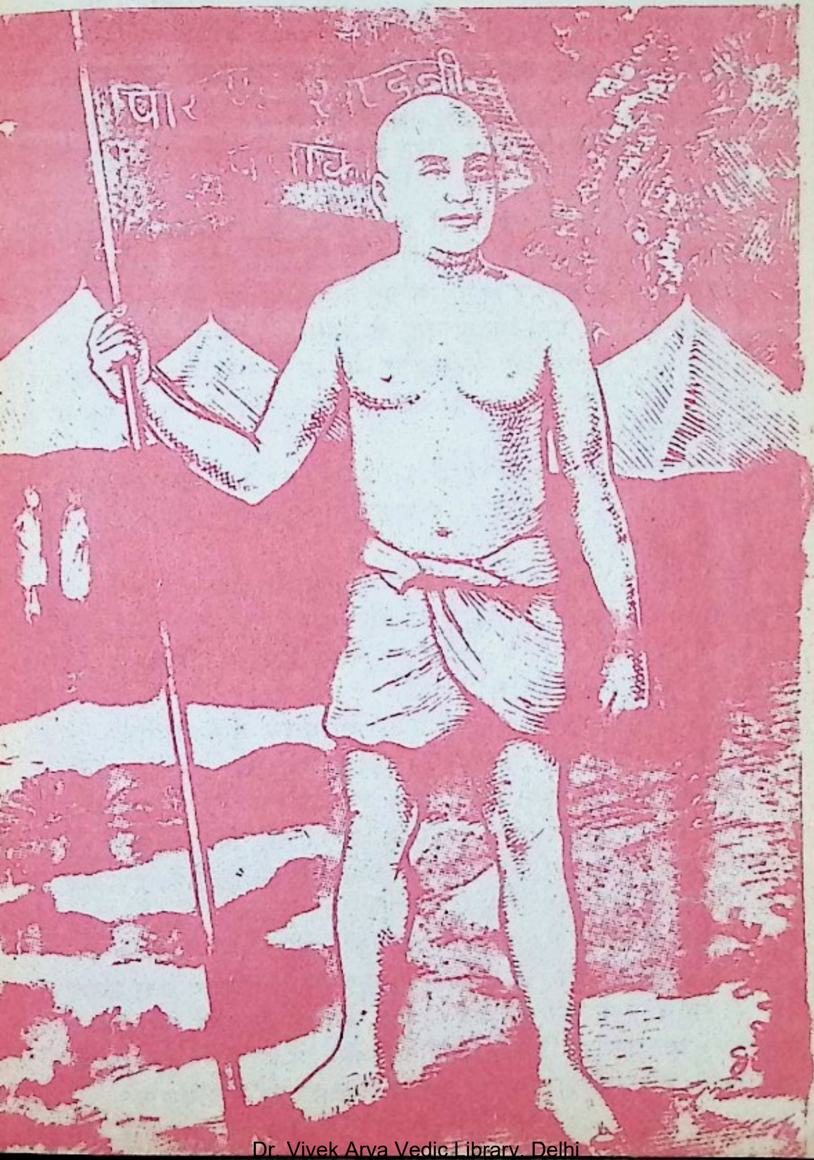

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संसार को कैद कराने नहीं, कैद से छुड़ाने आया हूँ

कठिन तपस्या, साधना और समाधि स्थिति में प्रभु का साक्षात्कार कर स्वामी दयानन्द भारत को पुन: जगाने के महान् कार्य में लग गए।

पोप-पादरी-मुल्ला-पाखंडियों को ललकारते हुए दयानन्द विजय के डंके बजाते हुए बढ़ते गए। चारों ओर हर्ष छा गया। राम-कृष्ण के अनुयायियों ने अनुभव किया कि उन का रक्षक आ पहुँचा।

सत्य के प्रबल प्रसार से असत्य के अनुयायी स्वामी जी के शत्रु बन गए। एक पाखंडी ने अनूपहशर में उन्हें पान में विष दिया। स्वामी जी को पता लग गया तो योग बल से उन्होंने विष के प्रभाव को दूर कर दिया।

उन के भक्त तहसीलदार को घटना का ज्ञान हुआ तो उसने विष देने वाले को वन्दीगृह में डाल दिया और फिर स्वामी जी की सेवा में उपस्थित हुआ।

स्वामी जी प्रसन्न होने के स्थान पर तहसीलदार को फटकारते हुए बोले—"तुमने यह क्या किया? मैं संसार को कैद कराने नहीं, कैद से छुड़ाने आया हूँ। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता तो हम अपनी सज्जनता कैसे छोड़ दें।"

सभी उपस्थित व्यक्ति स्वामी जी के वचन सुन रोमांचित हो गए। तहसीलदार ने विषदाता को छोड़ दिया, और हजारों व्यक्ति इस घटना के बाद स्वामी जी के भक्त बन गए।

कितना महान् था दयानन्द कितना उदार था, कितना प्यार था उसमें, अपने विषदाता पर भी उसे क्रोध नहीं था। स्वामी दयानन्द के जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं मिलती हैं।

स्वामी दयानन्द ने सत्य की साधना की थी। इसी सत्य के बल पर वे बड़ी से बड़ी आपत्तियों से जूझते रहे। विजय सदा उनके साथ रही। परमात्मा के अमर ज्ञान 'वेद' के प्रसारक दयानन्द ने सर्वत्र सत्य प्रचार किया। उन्होंने स्वप्न में भी कभी एक पल के लिए सत्य को नहीं छोड़ा। यही उनकी सफलता का मूल मंत्र था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

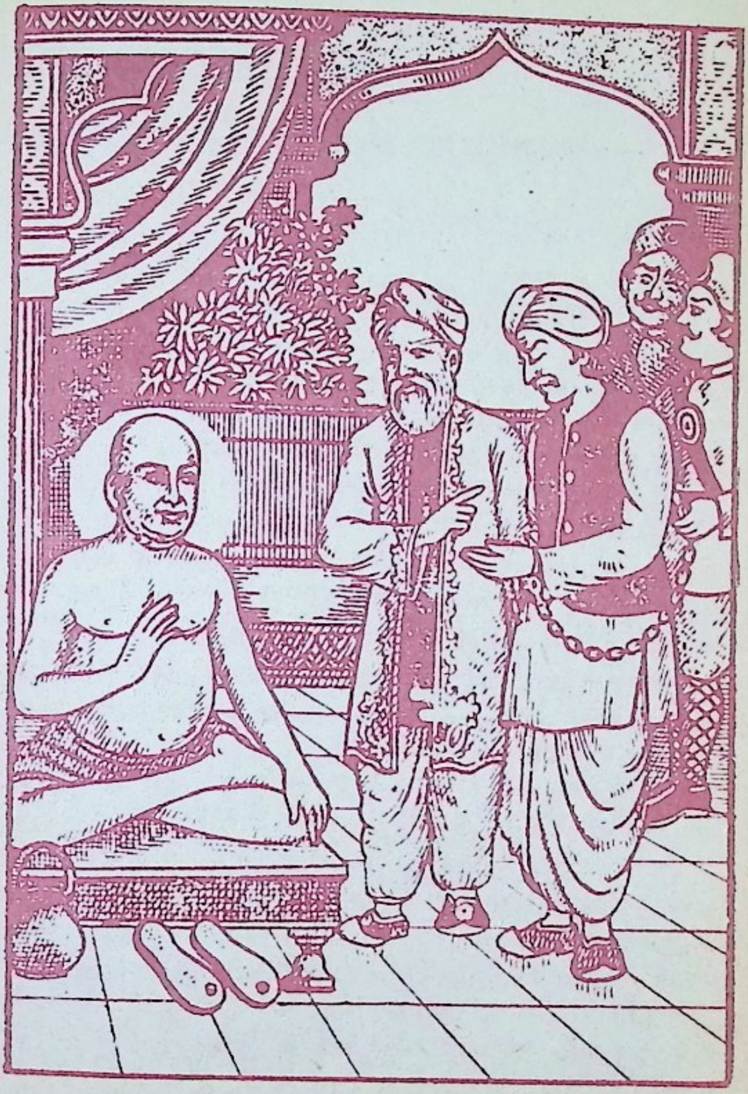

अनूपशहर में जब उन्हें विष दिया गया और स्वामीजी के भक्त तहसीलदार ने अपराधी को पकड़ स्वामीजी के सम्मुख उपस्थित किया तब स्वामीजी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काशी शास्त्रार्थ : अपूर्व विजय

अपने प्रचार कार्य में स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया कि काशी पाखंडों का गढ़ है। जब तक वहां सत्य का प्रकाश नहीं होगा, तब तक देश में ज्ञान नहीं फैलेगा।

अकेले स्वामी दयानन्द काशी के गढ़ को विजय करने पहुँच गए। पंडित मंडली में खलबली मच गयी। स्वामी जी के व्याख्यान होने लगे मस्तिष्क पर पड़ा अज्ञान का परदा अपने आप हटने लगा।

किन्तु जिन्होंने अज्ञान को ही ज्ञान समझ रखा था वे ज्ञान का प्रकाश कैसे सहन कर सकते थे? स्वामी दयानन्द की सिंह गर्जना से कांपती पंडित मंडली को शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार करनी पड़ी।

एक ओर अकेला दयानन्द सत्य का अमोघ अस्त्र लिये थे, दूसरी ओर काशी की सारी पंडित मंडली भौतिक साधनों से सजी खड़ी थी। राज्य बल उनके साथ था। काशी नरेश पंडितों की पीठ पर थे। और दयानन्द के साथ था परमात्मा का आशीर्वाद।

शास्त्रार्थ हुआ, डटकर हुआ, पंडितों ने अनुभव किया, दयानन्द साधारण पंडित नहीं है। वह तो वेद-वेदाङ्ग-शास्त्र-व्याकरण का सागर है। उसे कोई हरा नहीं सकता।

बस यह समझते ही वे चालाकी पर उतर आए और अपनी जय स्वयं बोलते सभा स्थल से उठ कर चल दिए। षड्यन्त्र पहले से ही था, गालियां-ईंट-पत्थर-धूल—कागज-चप्पलें सभी की बौछार सत्य के प्रसारक दयानन्द पर की गयी। पर उनके मुख पर न घबराहट थी, न चिन्ता।

वे मुस्कराते रहे, धैर्य से सब कुछ सहते रहे। समाचारपत्रों, और विवेकी जनों ने अनुभव किया स्वामी दयानन्द के जयी विचारों को और काशी की जनता हृदय से स्वामी दयानन्द की जय-जयकार कर उठी। और बाद में स्वयं काशी नरेश को भी स्वामी जी की महत्ता स्वीकार करनी पड़ी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७ नवम्बर जिनका बलिदान दिवस है

पंजाब केसरी ला० लाजपतराय

—दीनानाथ सिद्धांतालंकार

"इस समस्त प्रचार का संचालन तथा संगठन आर्यसमाज की एक गुप्त समिति द्वारा होता है। यह संस्था (आर्यसमाज) आरम्भ में तो धार्मिक थी परन्तु पंजाब में इसकी प्रबल राजनीतिक प्रवृत्ति है। इस समस्त आन्दोलन के केन्द्र तथा आदिस्रोत एक खत्री वकील लाला लाजपतराय हैं जो पंजाब के कांग्रेस-प्रतिनिधि के रूप में इंग्लैण्ड भी हो आये हैं। क्रांतिकारी हैं और उनके हृदय में अंग्रेजी राज्य के प्रति घृणा कूट-कूट कर भरी है। (लाजपत राय) स्वयं तो चतुरता से पीछे-पीछे रहते हैं परन्तु सभी देशी सज्जनों ने लेफ्टिनेंट-गवर्नर (पंजाब) को कायल कर दिया है कि मुख्य संचालक वही हैं।"

ये शब्द ७ मई १९०७ को भारत के तत्कालीन वाइसराय लार्ड मिंटो द्वारा अपने सर्वोच्च अधिकारी ब्रिटेन-स्थित भारत-मंत्री और उदार दल के नेता लार्ड मार्ले को दिये गए उस लम्बे समुद्री तार के अंश हैं जो 'भारत—मिंटो तथा मार्ले १९०५-१० पुस्तक में अंकित है। मई १८५७ के भारत के प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध जिसे ब्रिटिश सरकार ने सिपाही-विद्रोह व गदर का नाम दिया है, को १९०७ में ५० साल पूरे हो जाते थे। मिंटो ने इसी खरीते में आगे कहा, "१८५७ की मई के मध्य को याद रखो। मेरा प्रबल विश्वास है कि राजनीतिक कारणों को छोड़ते हुए भी १८५७ की स्मृतियां ही वर्तमान वर्ष को असाधारण बना रही हैं।" गोरी नौकरशाही के दिल में सरकारी जासूसों और अब गोरे समाचारपत्रों—जैसे 'पायोनीयर' (लखनऊ), सिविल ऐंड मिलिटरी गजट' (लाहौर), 'इंग्लिशमैन' (कलकत्ता) इत्यादि—ने मजबूती से यह डर बैठा दिया था कि १८५७ की स्मृति में अर्ध-शताब्दी मनाने के गुप्त प्रयत्न हो रहे हैं और इस सारे षड्यंत्र के सूत्रधार तीन व्यक्ति है—लाल, बाल, पाल—अर्थात् पंजाब के लाला लाजपत राय, महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक और बंगाल के विपिन चन्द्र पाल। समूचा सरकारी तंत्र इन तीनों के नाम से कांपता था। लार्ड मिंटो ने अपने इस तार में लालाजी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के सम्बन्ध में पंजाब के तत्कालीन लेफ्टिनेंट-गवर्नर इब्बटसन से प्राप्त गुप्त सूचनाओं के आधार पर यह भी कहा कि "लालाजी के काम करनेके दो तरीके हैं—पहला लाहौर, अमृतसर, रावलपिंडी, फीरोजपुर, मुलतान, पेशावर आदि छावनियों में जाकर फौजों में बगावत फैलाना और दूसरा देहात में जाकर उन लोगों को भड़काना जो किसान हैं और जिनमें से प्रायः सेना की भरती की जाती है।"

लालाजी के सम्बन्ध में एक तीसरा बे-बुनियाद आरोप इन अध-गोरे पत्रों और नौकरशाही के जासूसों ने यह लगाया था कि उसी साल काबुल के अमीर हबीबुल्लाह शाह ब्रिटिश सरकार के निमंत्रण पर जब भारत आये थे, तब लालाजी उनसे गुप्त रूप से मिले और उन्होंने बादशाह के भारत पर हमला करने और भारतीय जनता द्वारा पूरा सहयोग देने का वचन दिया था।

लाहौर के यूरोपियनों में आतंक

इस शताब्दी के पहले दशक के सरकारी खरीतों और भारत-स्थित यूरोपियनों के निजी पत्रों और अधगोरे समाचारपत्रों को पढ़ने से प्रतीत होता है कि उस समय ब्रिटिश सरकार—विशेषतः पंजाब की—लालालाजपत राय से घबरायी हुई थी और उन्हें हौआ समझती थी। लाहौर-स्थित यूरोपियनों में गुप्त रूप से यह समाचार फैला दिया गया था कि १९०७ के प्रथम सप्ताह में किसी भी दिन लाहौर पर लाजपत राय के नेतृत्व में हमला हो जाएगा, गोरों और उनके परिवारों को चुन-चुन कर उसी प्रकार मार दिया जाएगा, जिस प्रकार सन् ५७ में कानपुर, मेरठ और दिल्ली में मार दिया गया था। इसलिए सब यूरोपियनों को पिस्तौल, बन्दूक से लैस रहना चाहिए। इसका परिणाम यह निकला कि १९०७ की ७ मई को लाहौर से लगभग सभी यूरोपियनों ने अपने परिवारों को शिमला और कलकत्ता भेज दिया और स्वयं लारैन्स बाग स्थित 'यूरोपियन क्लब' में आकर सशस्त्र रहने लगे, जहां रात भर कड़े पहरे की व्यवस्था थी।

"आर्यसमाज मेरी माता है"

राजनीतिक क्षेत्र में भारत के शीर्षस्थ नेता होते हुए भी लालाजी सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करने में कभी संकोच नहीं करते थे कि "आर्य-समाज मेरी माता है और मैं अपने जीवन में जो कुछ भी तुच्छ सेवा भारत माता की कर सका हूं, वह सब महर्षि दयानन्द की सजीव और क्रांतिकारी शिक्षा और आन्दोलन के फलस्वरूप ही है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लालाजी अपने रक्त की अन्तिम बूंद तक कट्टर देशभक्त, निर्भीक, संकटों साहस से मुकाबला करने वाले और बड़े जोशीले वक्ता थे। भाषणकला दृष्टि से उस समय भारत में दो ही व्यक्ति थे, जो इस कला में पारंगत और जिनके एक-एक शब्द का जनता पर जादू-सा असर होता था। इनमें से बंगाल के विपिनचन्द्र पाल जो बाद में गांधी-युग में काफी पिछड़ गए थे दूसरे थे पंजाब के लाला लाजपतराय, जिन्हें जनता ने प्रेम से 'शेरे-पंजाब' उपाधि से आभूषित किया था। लालाजी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न थे और जीवन के अन्तिम क्षण तक हिमालय के सदृश देशभक्त और मातृभूमि सेवा में अविचल रहे। अपने विचारों को वे सदा निर्भीकता से स्पष्ट में प्रकट करते थे और देश के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग और आत्म-आहुति में वे प्रथम पंक्ति में थे। १९०७ के दिसम्बर में सूरत-कांग्रेस में सर रोजशाह मेहता और श्री गोखले के नेतृत्व में नरमदलीय और लोकमान्य तक तथा श्री खापर्डे के नेतृत्व में गरमदलीय कांग्रेस नेताओं में जो कलह और जिसकी चरम सीमा कांग्रेस पंडाल में जूता, लाठी और कुर्सी चलने तक हुई, उसका मूल कारण यह था कि गरमदलीय लाला लाजपत राय कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहते थे। लालाजी इसी साल नवम्बर में पहले जेल से देश निर्वासन के ६ मास बाद छूटकर आये थे।

लालाजी के जीवन को अत्यन्त निकटता से देखने के बाद ब्रिटिश मजदूर के प्रमुख पत्रकार श्री नेविन्सन ने कहा था —

"लालाजी का जीवन तपस्या तथा उदारता से पूर्ण था। उन्होंने निर्धनों अशिक्षितों की सेवा के लिए, भारी सांसारिक सफलता का जीवन त्याग था था वे उन पुरुषों में से थे, जिनकी आत्माओं में अपने देशवासियों के दुःख श कर जाते हैं।

लालाजी के ऐसे अदम्य, उत्साहपूर्ण और अत्यन्त लोकप्रिय नेतृत्व से री नौकरशाही का घबराना स्वाभाविक ही था। जिस प्रकार लोकमान्य तक अपने अध्यापन कार्य को छोड़कर, देश की तत्कालीन अवस्थाओं से य हो, राजनीति में आये, ठीक इसी प्रकार, लालाजी सफल वकील हुए भी अवस्थाओं द्वारा राजनीति में घसीट लिये गए, पर राजनीति रहते हुए भी उन्होंने कभी अपने को आर्यसमाज की विचार-धारा से च्छिन्न नहीं किया। प्रथम युद्ध के समय जब उन्हें कई वर्ष तक अमेरिका रहना पड़ा तब उन्होंने सबसे पहला काम अंग्रेजी में 'आर्यसमाज का हास' लिखने का किया। इस पुस्तक ने विदेशों में आर्यसमाज का परिचय या।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन्म, बचपन, शिक्षा

लाजपतराय का जन्म २८ फरवरी सन् १८६५ को अपनी ननि जिला फीरोजपुर (पंजाब) के ठोड़ी ग्राम में हुआ। इनके पिता राधा लुधियाना (पंजाब) के जगरावां कस्बे में रहते थे। पिता सरकारी प्रा स्कूल में अध्यापक थे। लाजपतराय के तीन भाई और दो बहनें थीं। का वेतन, कई वर्ष के बाद, ३५ रु० मासिक तक पहुंचा था। पिता ने स्कूल में शिक्षा पाई थी जिसका मुख्य अध्यापक एक मौलवी था। इस राधाकृष्ण पर इस्लाम का गहरा प्रभाव था। वे घर में नमाज पढ़ते, रखते, तहमद बांधते और कुरान का पाठ करते थे। वैश्य और जैनी हो मांस-भक्षण तो नहीं करते थे पर मुसलमानों को प्रायः अपने घर भोजन क और कभी उनके घर खा आते अथवा उनका पका भोजन अपने घर ले आ मास्टर राधाकृष्ण को धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का बड़ा शौक था। विश्व के मुख्य धर्मों की उन्हें अच्छी जानकारी थी। लालाजी ने १९११ में अपने की स्मृति में जगरावां में 'राधाकृष्ण हाईस्कूल' स्थापित किया और प्राइमरी स्कूल खोले।"

आर्य समाज में प्रवेश

लाजपत राय कुशाग्रबुद्धि छात्र थे। १५ वर्ष की आयु में उन्होंने १ में पंजाब और कलकत्ता—दोनों विश्वविद्यालयों से मैट्रिक परीक्षा पास फिर लाहोर गवर्नमेंट कालेज में दाखिल हो गये। इंटरमीडियेट की के साथ-साथ कानून की पढ़ाई भी शुरू कर दी। पिता मुश्किल से आठ रु० मासिक इस किशोर को भेजते। लाजपतराय को अत्यन्त कम खर्च हुए लाहौर जैसे नगर में पढ़ना पड़ता था। मुख्तारी पास करके १ में पहले जगरावां, फिर हिसार में और अन्त में १८९२ में लाहौर में वक आरम्भ कर दी। हिसार में आप लगभग ६ वर्ष रहे। मासिक आय ह डेढ़ हजार रु० था। इनके कालेज जीवन के सहपाठियों में पं० गुरुदत्त वि महात्मा हंसराज, राजा नरेन्द्रनाथ इत्यादि थे। इनके सहवास से इन प आर्यसमाज का प्रभाव पड़ा और हिसार में रहते हुए आपने आर्यसमा में सोत्साह भाग लेना आरम्भ कर दिया था। आर्यसमाज के साप्ता सत्संग प्रायः उनके मकान पर ही होते। पांच वर्ष बाद लाजपत जी के उद्योग से ही हिसार में भव्य आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण हु हिसार में वे नगर पालिका के सदस्य और कई वर्ष तक इसके अवै सचिव भी रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डी० ए० वी० कालेज के स्तम्भ

नि: १८६२ में आप लाहौर आ गये। वे गुरुदत्तजी और हंसराजजी के साथ
धा लकर खूब उत्साह से आर्यसमाज की सेवा करने लगे। १८८६ में महर्षि
ाशानन्द की स्मृति में लाहौर में डी० ए०-वी कालेज स्थापित हो चुकाथा।
पका इस संस्था के साथ अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। लालाजी की
ने तृत्व कला में तो दैवी शक्ति थी। आपका भाषण मुर्दा दिलों में भी
इसा पैदा कर था। डी० ए० वी० कालेज के लिए अपनी इस अद्भुत
, कृशाक्ति का प्रयोग कर इन्होंने लाखों रुपया दौरा कर इकट्ठा
होंा और स्वयं भी अपने पास से पुष्कल दान देते रहे। इस कालेज की
कार्य समिति के आप वर्षों तक मंत्री और उपप्रधान भी रहे। लाहौर आर्य
आज के उत्सव पर धर्मप्रचार और कालेज के लिए अपील लालाजी ही किया
केते थे। हजारों की संख्या में श्रोता मंत्रमुग्ध हो आपका भाषण सुनते थे।
ने लि के वाद अनायास ही धन की वर्षा आरम्भ हो जाती थी। लालाजी
ार वर्ष तक डी०ए० वी कालेज में बिना वेतन लिए इतिहास और राजनीति
ते रहे।

अकालग्रस्त क्षेत्रों में सेवा-कार्य

१८ आर्यसमाज की शिक्षा के प्रभाव से लालाजी दरिद्रनारायण की सेवा में
स दे अग्रसर रहते थे। १८९६ में संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) के आगरा
- पलखण्ड इलाके में और १९०० में राजस्थान में भयंकर अकाल पड़ा।
ाठ १९०७-८ में उड़ीसा और मध्यप्रदेश में दुर्भिक्ष हुआ। हजारों हिन्दू
ा र्मी होने लगे। ईसाइयों ने जनता की गरीबी से अनुचित लाभ उठाने के
१न शुरू कर दिये। लालाजी ने अपने सहयोगी आर्य सदस्यों और स्वयं
कों के साथ सहायता और राहत का काम संगठित रूप से प्रारम्भ कर
ह। हजारों हिन्दुओं की रक्षा हुई। करीब ३०० अनाथ बच्चों को लेकर
दह लालाजी लाहौर स्टेशन पहुंचे तो नगर-वासियों ने हजारों की संख्या में
पर पहुंच उनका स्वागत किया। अनाथ बच्चों को इससे बड़ा आश्वासन
मा ा कि इतनी विशाल जनता उनके साथ है। इन अनाथ बच्चों के लिए
ता ाजी ने उसी समय लाहौर, फीरोजपुर और मेरठ में अनाथालय कायम
पत। देश-विभाजन तक ये अनाथालय जनता की ठोस सेवा करते रहे।
हु १९०५ में पंजाब के कांगड़ा नगर में भयंकर भूकम्प आया। जन-धन की
वेत क्षति हुई। लालाजी कालेज के छात्रों और अन्य आर्यसज्जनों के साथ
लम्ब सहायता के लिए वहां पहुंच गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तपेदिक के रोगियों के औषध-उपचार और खुले स्वच्छ वाताव
रहते हुए भोजन-निवास आदि की समुचित व्यवस्था के लिए लाला
अपनी स्वर्गीय पत्नी की स्मृति में लाहौर में गुलाबदेवी तपेदिक अस
खोला था। विभाजन के बाद जालन्धर में इसकी पुन:स्थापना की गयी

लाहौर की जनता ने लालाजी को कंधों पर उठा लिया

पंजाब के नौजवान तो आप पर इतने फिदा थे कि नवम्बर १९
जब आप इंग्लैंड में कांग्रेस शिष्ट-मंडल की ओर से प्रचार-कार्य समा
भारत वापस आये और लाहौर पहुंचे तो वहां अपार जन-समूह स्टे
आपके स्वागत के लिए मौजूद था। उस समय लाहौर के वयोवृद्ध ने
जोगेन्द्र बोस ने आपको अपने कंधों पर उठा लिया। जब बग्घी में
बैठाया गया तो युवकों ने घोड़े हटाकर अपने हाथों से उस गाड़ी को
में दो मील से अधिक दूरी तक खींचा।

लालाजी के जीवन पर अन्य जिन व्यक्तियों का गहरा प्रभाव
थे इटली के स्वाधीनता-संग्राम के नेता मेजिनी व गैरीबाल्डी और भा
महापुरुष भगवान् श्रीकृष्ण तथा वीर शिवाजी। आपने उर्दू में इन स
पुरुषों के जीवन-चरित्र प्रकाशित किये।

सर सय्यद अहमद के नाम खुले पत्र

लाला जी को राजनीति में लाने वाली एक और मार्के की घट
समय हुई, जब हिसार में उन्होंने अपनी वकालत आरम्भ की थी।
का पहला अधिवेशन सन् १८८५ में बम्बई में श्री उमेशचन्द्र बन
अध्यक्षता में हुआ। इस कांग्रेस का संचालन वस्तुत: एक अंग्रेज स
अधिकारी श्री ए० ओ० ह्यूम के हाथ में था। इस समय मुसलम
तत्कालीन नेता और बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सं
सर सैयद अहमद ने कांग्रेस का विरोध करते हुए मुसलमानों को इससे
रहने की सलाह दी। सर सैयद ने इस सम्बन्ध में कई लेख लिखे और
दिये। लाला जी के पिता मुंशीराधा कृष्ण इस मुस्लिम नेता के बड़े
और अनुयायी भी थे। इन्हीं के कारण मुंशी जी घर में मुसलमानों
नमाज पढ़ते व रोजा वगैरह रखते थे, यद्यपि भोजन में वे कट्टर शा
और गो-हत्या के विरुद्ध थे। लाल जी ने 'आपके एक पुराने अनुयायी
नाम से सर सैयद के 'कोहिनूर' पत्र में एक दर्जन से अधिक खुली
लिखकर कड़ाकेदार विरोध किया। सर सैयद इससे बहुत घबरा गये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ह्यू म ने इन पत्रों को खूब पसन्द किया और अंग्रेजी में अनुवाद करा बड़ी संख्या में देश में बंटवाया। इससे युवक लाजपतराय को काफी ख्याति मिली और इसी समय १८८८ के इलाहाबाद में हुए कांग्रेस अधिवेशन में पं० मदन मोहन मालवीय तथा पं० अयोध्यानाथ ने आपका विशेष स्वागत किया। आपके भाषणों को वहां खास पसन्द किया गया।

बंग-भंग और अकाल

१९०५ में भारत के वाइसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल के राजनीतिक आन्दोलन को निर्बल करने और मुसलमानों को खुश करने के लिए बंगाल के दो टुकड़े कर दिये, पूर्व और पश्चिम बंगाल। इससे सारे देश में विरोध की ज्वालाएं भड़क उठीं। गुप्त षड्यन्त्र दल कायम हो गये। कई जगह यूरोपियन मारे गये। इस समय लाला जी देश के प्रमुख राजनीतिक नेताओं में थे। १९०३ में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ। इस अधिवेशन में लाला जी लोकमान्य तिलक और श्री गोखले से परिचय हुआ। जो बाद में घनिष्ठ हो गया।

कुछ गोरे शासकों ने संकेत किया कि "सारी शरारत की जड़ तो लाला लाजपतराय है पर वह अभी तक स्वतंत्र घूम-फिर रहा है और जल्दी ही उसकी बारी आने वाली है।" आखिर ९ मई १९०७ को प्रातः जब लाला जी कचहरी जाने को तैयार ही थे, तभी अनारकली थाने के दो पुलिस अधिकारी उन्हें बुला ले गये। कोठी से अपनी बग्घी पर व बाहर निकले ही थे कि दो पुलिस अफसर पायदान पर चढ़ गये। यहीं से बन्द गाड़ी में स्टेशन पर तैयार एक स्पेशल द्वारा—जिसमें पुलिस का कड़ा पहरा था और जिसकी सब खिड़कियां तथा दरवाजे बन्द थे—उन्हें कलकत्ता और वहां से जहाज द्वारा वर्मा और अन्त में १५ मई को मांडले जेल में बन्द कर दिया गया। लाला जी को यह पता लग गया था कि स० अजीतसिंह को भी यह निर्वासन-दंड दिया गया था। दोनों मांडले जेल में होते हुए भी एक-दूसरे से मिल नहीं सकते थे। यहां पर एक गोरे अधिकारी ने लाला जी से मुलाकात करते हुए कहा, 'आपने सेनाओं को लाया था ओर ब्रिटिश सरकार आपको दूसरा नाना साहब समझती है।" १८५७ में जो नाना साहब द्वारा सिपाही-विद्रोह के लिए हुआ वही १९०७ में लाजपतराय द्वारा होगा। यह विश्वास आमतौर पर ब्रिटिश सरकार, यूरोपियनों और अधगोरों में व्याप्त था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर लाला जी का यह देश-निर्वासन सरकार को बड़ा महंगा पड़ा। सारे देश में प्रबल आन्दोलन, असन्तोष और विरोध की भयंकर अग्नि भड़क उठी। इसकी गूंज ब्रिटिश संसद् में भी लगातार उठने लगी। वहां सदस्यों द्वारा, प्रायः हर रोज ही, लाला जी के इस निर्वासन और भारत में व्याप्त घोर असन्तोष के बारे में प्रश्न पूछे जाते और भारत-मंत्री लार्ड मार्ले के लिए सन्तोषजनक उत्तर देना कठिन हो जाता। स्थिति को संभालना दिन-प्रतिदिन कठिन हो रहा था। यह भी स्पष्ट हो चुका था कि लाला जी के विरुद्ध ऐसा गम्भीर आरोप नहीं था जिसके लिए सामान्य अदालती कार्रवाई न कर विशेष कानून के अधीन ऐसी कठोर सजा को न्यायसंगत ठहराया जा सकता। आखिर ११ नवम्बर १९०७ को लाला जी को मुक्ति का सन्देश मिल गया। फिर उसी प्रकार बंद गाड़ी और कड़े पुलिस पहरे में लाला जी को मध्य प्रदेश के रास्ते से लाया गया। स० अजीतसिंह को दूसरी गाड़ी से लाया गया।

कलकत्ता कांग्रेस की अध्यक्षता

कांग्रेस का प्रचार करने और विदेशों में भारत की दशा से जनता को परिचित कराने तथा स्वतंत्रता-आन्दोलन में सहायता व सहानुभूति प्राप्त कराने के लिए लाला जी कई बार योरुप-अमरीका गये। प्रथम युद्ध के समय उनके भारत वापस आने पर रोक लगा दी गयी थी। जब वे वापस आये तो कांग्रेस का नेतृत्व गांधी जी के हाथ में आ चुका था। लाला जी ने इसमें पूरा सहयोग दिया। १९१९ में गांधी जी के असहयोग कार्यक्रम पर विचार करने के लिए कलकत्ता में विशेष कांग्रेस अधिवेशन हुआ जिसके लिए लाला जी को अध्यक्ष चुना गया। इसके बाद लाला जी के सहयोग से देश भर में गांधी जी का सविनय अवज्ञा का आन्दोलन जोरों से चलने लगा। १९२१ दिसम्बर में लाला जी को गिरफ्तार कर लिया गया और लाहौर जेल में दो वर्ष के कारावास दंड के साथ बन्द कर दिया गया।

कांग्रेस से मतभेद: स्वराज्य पार्टी में

इसके बाद भारतीय राजनीति में परिवर्तन आने लगा। एक ओर देश में साम्प्रदायिक दंगे शुरू हो गये और दूसरी गांधी जी के पंचसूत्री बहिष्कार कार्यक्रम की व्यर्थता देख जेल से छूट कर आये नेताओं ने इस पर पुनः विचार किया। इसी के फलस्वरूप स्वराज्य पार्टी का जन्म हुआ। पंजाब का चार्ज लाला जी को दिया गया था पर कांग्रेस से लाला जी के मतभेद बढ़ते गये क्योंकि गांधी जी तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं की नीति अत्यधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम पक्षपाती थी। हिन्दू हितों की खुले आम हत्या हो रही थी। काकीनाडा कांग्रेस में अध्यक्ष पद से मौलाना मुहम्मद अली ने प्रस्ताव किया था कि अछूतों का हिन्दुओं और मुसलमानों में बंटवारा कर दिया जाए। लाला जी इस प्रस्ताव से बहुत दुःखी और विक्षुब्ध हुए। आपने सन् १९२५ के आरम्भ में अछूतोद्धार का आन्दोलन शुरू किया। देश में राजनीतिक जागरण पैदा करने के लिए लाला जी ने लाहौर में "तिलक स्कूल आफ पालिटिक्स" स्थापित किया। कांग्रेसी आन्दोलन के समय आपने उर्दू में वन्दे मातरम्' दैनिक आरम्भ किया था और अब 'पीपुल' नामक अंग्रेजी में साप्ताहिक जारी किया। यह पत्र राजनीति-प्रधान था। आपने कई पुस्तकें लिखीं जिनमें 'अनहैप्पी इंडिया' का बहुत प्रचार हुआ। लाला जी जानते थे कि निष्ठावान् कार्यकर्ताओं के बिना राष्ट्र कभी उन्नत नहीं हो सकता। इसी दृष्टि से 'आपने लोक सेवक मंडल' (सर्वेण्ट्स आफ पीपुल सोसाइटी) कायम किया। लाला जी ने इस संस्था को अपना ४० हजार पुस्तकों का पुस्तकालय और डेड़ लाख रु० का अपना भवन दान दिया था। १९२५ में लाला जी स्वराज्य पार्टी की ओर से केन्द्रीय असेम्बली में जालन्धर क्षेत्र से निर्विरोध चुन लिये गये।

साइमन कमीशन का बहिष्कार और लाठी प्रहार

साइमन कमीशन भारत की संवैधानिक पात्रता की जांच के लिए १९२८ फरवरी में भारत आया। कांग्रेस ने इसके पूर्ण बहिष्कार की घोषणा की। ३० अक्टूबर को कमीशन लाहौर पहुंचा। इस बहिष्कार आन्दोलन का नेतृत्व लाला जी कर रहे थे। भारी जुलूस 'साइमन लौट जाओ' के नारे लगाता हुआ स्टेशन पर सर्वथा शांत और अनुशासन में खड़ा था। अधिकारियों ने उसी समय शान्त जुलूस पर पुलिस को डंडे चलाने का आदेश दे दिया। लाला जी पर खास तौर से लाठी-प्रहार किया गया और स्वयं सीनियर सुपरिण्टेण्डेण्ट स्काट ने यह कार्य किया। स्काट का साथी साण्डर्स भी इसमें सहायक था। आपने ललकार कर पुलिस अफसर का नाम पूछा पर इसका उत्तर अधिक दंड प्रहार से मिला। इस मार से ६४-वर्षीय वृद्ध लालाजी चारपाई से फिर न उठ सके। लाला जी व जनता की ओर से इस कांड की खुली और निष्पक्ष जांच की मांग की गई, पर नौकरशाही राजी न हुई।

"प्रत्येक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन पर कील"

इस बीमारी में भी लालाजी कार्य करते रहे। १६ नवम्बर को उनको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हालत बिगड़ गयी। ३० अक्टूबर की शाम को सार्वजनिक सभा में लालाजी ने जो शब्द कहे थे वे सचमुच ब्रिटिश अत्याचारियों के लिए भयंकर चेतावनी के रूप में थे और इतिहास में सदा स्मरण किये जाएंगे। उन्होंने कहा था—"मुझ पर किया हुआ प्रत्येक प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की एक कील सिद्ध होगा।"

१७ नवम्बर भोर वेला में, देश का लगभग आधी सदी का यह साहसी, वीर, अदम्य, उत्साही और बहुमुखी प्रतिभाशाली नेता समूचे देश को शोक-सागर में डुबोकर मातृभूमि पर बलिदान हो गया। □

आर्यसमाज के कैसेट

मधुर एवं मनोहर संगीत में आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशकों द्वारा गाये गये ईश्वर भक्ति, महर्षि दयानन्द एवं समाज सुधार से सम्बन्धित उच्चकोटि के भजनों के सर्वोत्तम कैसेट मंगाकर-

आर्यसमाज का प्रचार जोरशोर से करें।

कैसेट नं. 1-पथिक भजन सिन्धु- गीतकार एवं गायक सत्यपाल पथिक का सर्वाधिक लोकप्रिय कैसेट।

2-सत्यपाल पथिक भजनावली-सत्यपाल पथिक का दूसरा नया कैसेट।

3-श्रद्धा-प्रसिद्ध फिल्मी गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान।

4-आर्य भजनावली-फिल्मी संगीतकार एवं गायक वेदपाल वर्मा।

5-वेद गीताञ्जलि-गीतकार एवं गायक- सत्यकाम विद्यालंकार

6-भजन सुधा-आचार्या प्रज्ञादेवी वाराणसी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन।

मूल्य प्रति कैसेट 1 से 3, 30 रु. तथा 4 से 6, 35 रु. है। डाक व्यय अलग विशेष- 5 या अधिक कैसेटों का अग्रिम धन आदेश के साथ भेजने पर डाक व्यय फ्री। वी.पी.पी. से भी मंगा सकते हैं।

प्राप्तिस्थान- आर्य सिन्धु आश्रम 141, मुलुण्ड कालोनी बम्बई-400082

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कांग्रेस की अन्तः कथा–५

रोटी के बदले पत्थर

श्रीमती (बाद में डाक्टर) एनी बिसैण्ट कलकत्ते में होने वाले १९१ के कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्ष बनाई जाने वाली थीं। उन्हों तिलक और गोखले के बीच समझौता कराने की कोशिश की थी, और अप "होम रूल लीग" की स्थापना की थी। इसलिए वे उस समय बेहद लोव प्रिय हो उठी थीं। दार्शनिक प्रचार की उनकी मनमौजी उड़ानें कुछ सम के लिए लोग भूल गए थे। यही समय था, जब यक्ष्मा के उपचार के लि उन्हें सैनिटेरियम जाना पड़ा, जहां उन्हें लार्ड पेण्टलैण्ड के आदेश से नज बन्द कर दिया गया। गोरी नौकरशाही के खिलाफ आग जोरों से भड़क र थी और भारतीय राजनीतिक शत्रुओं की इस सरगर्मी को कुचलने के लि एड़ी चोटी का जोर लगा रहे थे।

अपने साप्ताहिक पत्र में मैंने कांग्रेस को राय दी कि वह अविच विश्वास के साथ आगे बढ़ती जाए और श्रीमती बिसैण्ट को राय दी कि अपना अध्यक्षीय भाषण तैयार करें, जिसे उनकी अनुपस्थिति में अध्यक्ष कुर्सी पर उनका चित्र रखकर पढ़ा जाए और उसके बाद प्रस्ताव पास वि जाएं। समाचारपत्रों ने मेरे प्रस्ताव पर निर्विरोध स्वीकृति दे दी, मगर पर अमल करने का अवसर कभी न आया (या यों कहिए कि आने ही न दिया गया) क्योंकि श्रीमती बिसैण्ट को पहले ही नजरबन्दी से रिहा दिया गया।

दिल्ली में होने वाले १९१८ के कांग्रेस अधिवेशन के पहले पेशव करने की नीयत से मिस्टर माण्टेगू भारत आ गए थे और उन सुधारों जिनसे भविष्य में देश को अपना शासन मिल सकता था, भारतीय राजनैति नेताओं को परामर्श दे चुके थे। यह एक समय के अनुकूल उठाया गया लन का कदम था, उस सहायता के बदले में जो राजनैतिक हिन्दुस्तान ने ब्रिटि सरकार को उसकी जर्मन शक्ति से लड़ाई में दी थी और उस जर्मनी विजय दिलाई थी, जिसकी व्यापारिक और आर्थिक सत्ता से संसार भयाक्रा हो उठा था। उस समय प्रत्येक नेता परामर्श मांगे जाने की प्रत्याशा में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ी उंगलियों पर खड़ा था। एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाने वाला ा।

मगर जो सलाह मैंने उन राजनेताओं को, जिन्हे मैं जानता था, दी वह ह थी कि वे किसी गोलमेज सम्मेलन में विस्तार के साथ कोई राय न । जो कुछ मैंने उन्हें लिखा, उसका सार यह था—

"ब्रिटिश लोग जन्मजात कूटनीतिज्ञ हैं। उनकी कुटिल नीति ने विश्व दोनों गोलार्धों पर पिछले एक हजार वर्षों से सत्ता जमा रक्खी है। उनके ाथ किसी गोलमेज सम्मेलन में बैठ कर सूफियाना हिन्दुस्तानी राजनीति नेता मिथ्यावाद में उनसे पार नहीं पा सकते। इसलिए आपको मेरी लाह है कि मि० माण्टेगू के साथ अलग-अलग कान्फ्रेन्स करने से बचे रहें। ातचीत सबको एक साथ मिलकर करनी चाहिए और उसके सामने यह युक्त मांग पेश करनी चाहिए कि वे भारत के टैक्स देने वालों पर चढ़े ारी बोझ को हल्का करने के लिए कोई रास्ता निकालें।

मगर मेरी सलाह बहरे कानों पर पड़ी। और यह मुमकिन भी कैसे हो कता था कि जनता के पोलिटिकल लीडर एक ऐसे आदमी की रत्ती भर ी सलाह पर ध्यान दें, जिसके सर पर उनकी राय में धर्म का भूत सवार ा, और जिनका कार्यक्षेत्र उनकी लक्ष्मण-रेखा के बाहर हो ?

मि० माण्टेगू के प्राइवेट सेक्रेटरी मि० किश ने मुझसे हरिद्वार में लाकात की। मि० सी० होवार्ट ने जो गुरुकुल के प्रशंसक थे, और उस मय रुड़की में जाइण्ट मजिस्ट्रेट थे, मुझे उनका परिचय दिया। आगन्तुक ारों पर हम लोगों के बीच बड़ी दिलचस्प बातें हुई। उन्होंने वे कठिनाइयां रे सामने पेश कीं, जो मि० माण्टेगू के राह का रोड़ा थीं और मैंने उनका ारण-निदान बताया।

जब मुझसे यह पूछा गया कि इस कठिनाई को कैसे पार किया जाए कानून बनाने का अधिकार उन लोगों को कैसे सौंपा जा सकता है जिनका स कानून को अमल में लाने में कोई हाथ ही न हो ? इस पर मेरा वाब था कि अगर एग्जीक्यूटिव काउन्सिल (कार्यकारी परिषद्) के सब दस्य विधान सभा द्वारा चुने जाएं और वे उसके प्रति उत्तरदायी हों तो तों में कोई वास्तविक झगड़ा उठ ही नहीं सकता। मैंने मि० किश को लाह दी कि वे मि० माण्टेगू को महात्मा गांधी से मुलाकात करने लिए राजी रें। बाद में मैंने सुना कि मि० माण्टेगू की मुलाकात गांधी जी से हुई, किन प्रस्तावित सुधारों के अमल में लाने के विषय में कोई राय दिये बिना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा गांधी गोलमेज सम्मेलन के प्रसंग पर पूर्वोक्त परामर्श के अनुसार संक्षेप में केवल इतना ही कहा कि "मेरा देश भयंकर गरीबी से पीड़ित है और आपका प्रशासन बुरी तरह खर्चीला है। अगर भारत को उसके द्वारा यूद्ध में दी गई सेवा के बदले में आप कोई पुरस्कार देना चाहते हैं, तो कृपया उस पर लदे करों के बोझ को कुछ कम कीजिए।"

अगर मेरी सुनी यह वात सच है तो कौन इनकार कर सकता है कि अकेले महात्मा गांधी ही वह व्यक्ति थे जो स्थिति को समझते थे और उन्होंने एक राजनीतिज्ञ की तरह अपनी राय दी ?

परिस्थितियां ऐसी थीं, जिनमें दिसम्बर १६१८ में कांग्रेस का अधिवेशन दिल्ली में हुआ। सभी पार्टियां—माडरेट लोग विप्लववादी, होम रूल लीग के लोग, आदि—एक जुट थे और सबकी आवाज "पश्चिमोत्तान हो!" की गुहार लगा रही थीं। यह राय कि केवल कांग्रेस को ही डेपुटेशन भेजना चाहिए, ठुकरा दी गई और प्रत्येक पार्टी ने अपने प्रतिनिधि इंग्लैण्ड भेजे। मैंने इस मामले में कोई दिलचस्पों नहीं ली।

दिल्ली में पंडित मदन मोहन मालवीय दुवारा अध्यक्ष बने और हकीम अजमल खाँ स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष बनाए गए। मैं केवल एक दिन अधिवेशन में उपस्थित हुआ, और वह भी एक दर्शक की है सियत से, और उस दिन जो मेरे देखने में आया उसमें बहुत कुछ ऐसा था, जिसके कारण मैंने बाद में कांग्रेस से दूर रहना ही मुनासिब समझा। जैसे—मैंने देखा कि पंजाब के कुछ नौजवान विप्लवादियों ने किस तरह हो-हल्ला और चोंख-पुकार करके सदन का काम उप्प कर दिया। मैं उनके निजी आचरण जानता था, और जब वे मार्शलला की चपेट में आए और जेल में बन्द कर दिये गए, तो उन्हें नीचे उतर कर जेल से बाहर निकलने के लिए सबसे अधिक मानहानिकारक उपायों का अवलम्ब लेने में कोई संकोच न हुआ।

अस्तु, कांग्रेस अधिवेशन समाप्त हो गया, और उसके संयोजकों की कारगुजारियों के बारे में सब कुछ दिमाग से हटा कर मैं अपने साहित्यिक कार्य-क्रम में संलग्न हो गया, जिसे मैंने दो वर्ष पहले उस समय बनाया था जब मैंने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया था। लेकिन मनुष्य कुछ चाहता है, परन्तु ईश्वर कुछ और।

वाइसराय की लेजिस्लेटिव कौंसिल के सामने रौलट बिल पेश कर दिये गए थे, और हिन्दुस्तानी लोग जो स्वादिष्ट थालियों की आशा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगाए बैठे थे, परोसे गए पत्थरों को पाकर घबड़ा गए। इस पर जो विरोध उठ खड़ा हुआ, वह केवल देशव्यापी ही नहीं, अपितु उग्र भी था। मैंने अपने संरक्षण में "विजय" नामक एक हिन्दी दैनिक प्रकाशित किया, जिसका सम्पादक मैंने प्रोफेसर इन्द्र विद्या वाचस्पति को बनाया, जो गुरुकुल के स्नातक थे। पत्र ने आम जनता को उत्तेजित कर दिया, केवल दिल्ली में ही नहीं बल्कि पंजाब के सभी दिल्ली-पड़ोसी जिलों, सारे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थन, विहार आदि में भी सरगर्मी पैदा हो गई। हजारों प्रतियां प्रतिदिन छपती थीं, मगर मांग पूरी न पड़ती थी।

तुर्किस्तान के बाहर यही वह पहला पत्र था, जिसने तुर्किस्तान के हितों की रक्षा के लिए आवाज उठाई और हिन्दुओं को मुसलमानों के कन्धे से कन्धा भिड़ाकर उनके हितों की रक्षा के लिए खड़े होने को प्रेरित किया। अगर सरकारी खबरों में सच्चाई हो सकती है, तो यह सच है कि मि० माण्टेगू के साथ पत्रव्यवहार में लार्ड चेम्सफोर्ड ने उन्हें लिखा कि यह पत्र उनकी आंखों का कांटा है और मेरा बेटा इस वाहियात हिन्दी पत्र का सम्पादक है, जो अधिकारियों के लिए बड़ी मुसीबतें पैदा कर रहा है।"

वाइसराय की कौंसिल का इस साल का सारा अधिवेशन इन दो विधेयकों पर बहस-मुबाहसे में ही बीत गया। लगभग सभी हिन्दुस्तानी सदस्यों ने इन बिलों का मिलकर विरोध किया। श्री श्रीनिवास शास्त्री ने एक बड़ा शानदार भाषण दिया। उनके तर्क अकाट्य थे। प्रत्येक देशभक्त ने बड़े जोश और दलीलों के साथ भाषण दिया था, लेकिन श्री शास्त्री का भाषण मुझे बहुत जोरदार जान पड़ा। परन्तु सरकार अपनी जिद की पक्की थी, उसने अपना कदम एक इंच भी पीछे नहीं हटाया।

पंडित मदन मोहन मालवीय यह खबर लेकर मेरे पास आए कि अगर सरकार अन्ततोगत्वा कोई अनुकूल उत्तर नहीं देती, तो समस्त सदस्य कौंसिल से बहिर्गमन कर जाएंगे, मगर उन्हें श्री शास्त्री पर यकीन नहीं था। उन्हें राजी करने को मुझसे कहा गया, क्योंकि कि वे जानते थे कि स्वार्गीय गोपाय कृष्ण गोखले के साथ मेरा सम्बन्ध होने के कारण मेरा श्री शास्त्री पर कुछ प्रभाव पड़ सकता था।

तदनुसार मैं मेटकाफ़ हाउस गया। मेरे आसन ग्रहण करते ही श्री शास्त्री ने कहा—अपने महात्मागांधी की नई सनक आपने देखी ? कृपया इसे पढ़िये। मैं इसका जरूर विरोध करूंगा।" ये शब्द अमिट अक्षरों में मेरी स्मृति में अंकित हो गए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"लीडर" का वह अंक, जिसमें महात्मा गांधी की सत्याग्रह की दलील छपी थी, शास्त्री जी ने मुझे थमा दिया। लेख की केवल प्रस्तावना पढ़कर मैंने कहा—"यह तो मानव अधिकारों का पहला प्रस्ताव है। इस पर मैं स्वयं हस्ताक्षर करने को तैयार हूं। क्या यहां घोषणापत्र जारी होने से पहले आपमें से किसी को नहीं दिखाया गया ?

उत्तर था—केवल यही नहीं कि गान्धीजी ने अपना घोषणापत्र कौंसिल के सब सदस्यों को और यहां तक कि वाइसराय को भी भेजा, बल्कि उन्होंने उनसे कहा कि अगर उनकी कोई त्रुटि हो, वे उसे उन्हें समझावें। उनका घोषणा पत्र बहस के लिए सबको छूट देता है।

मैंने शास्त्री जी को समझाया कि एक न्यायोचित लक्ष्य सिद्ध करने के रास्ते में रुकावट न डालें, और कहा, "एक ऐसे काम के विरुद्ध, जिसकी जिम्मेदारी आपके ऊपर नहीं है, रुकावट डालने के लिए आप अपना रास्ता छोड़कर क्यों आगे बढ़े ? अगर आप गांधी जी के विचारों से सहमत नहीं हैं, तो आप उस आन्दोलन में क्यों शामिल होते हैं ?

श्री शास्त्री का उत्तर था कि वे गांधी जी के घोषणापत्र के विरुद्ध अपना वक्तव्य अवश्य प्रकाशित करेंगे, तो मैंने प्रत्युत्तर दिया मैं इसी समय महात्मा को तार से सूचित करने जाता हूं कि मैंने रौलट विधेयकों के विरोध में सत्याग्रह के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।

जब मैं अपने आश्रम पहुंचा और उस दिन का "लीडर" खोला, तो देखा कि श्री शास्त्री का विरोधपत्र उसमें प्रकाशित हो चुका था। इस पर तुरन्त मैंने निम्नलिखित तार महात्मा गांधी के पास भेज दिया—

"अभी सत्याग्रह शपथ पर मैंने हस्क्षाक्षर कर दिये हैं। इस धर्म युद्ध में सम्मिलित होकर में प्रसन्न हूं।"

जिस समय मेरा तार महात्मा गांधी के पास जाने के अभी रास्ते में ही होगा, उस समय वे स्वयं दिल्ली के लिए रवाना हो चुके थे। दूसरे दिन गांधी जी दिल्ली पहुंचे और स्टीफन कालेज, दिल्ली, के प्रिंसिपल रुद्र के यहां ठहरे। वे किसी अन्य व्यक्ति के यहां न ठहर कर श्री रुद्र के ही यहां क्यों ठहरे, यह उनके मुझे लिखे निम्नलिखित पत्र से स्पष्ट हो जाएगा—

प्रिय महात्मा जी,

मि० ऐंड्रूज ने आपके नाम से मुझे परिचित करा दिया है। मैं अनुभव करता हूं कि मैं किसी अपरिचित को यह पत्र नहीं लिख रहा हूं। इसलिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं आशा करता हूं कि आप मुझे सम्बोधन में वह पद लिखने के लिए क्षमा करेंगे, जिसे आपके नाम की जगह प्रयोग करके मैं मि० एंड्रूज से आपके और आपके कार्यों के बारे में बातें किया करता हूं। मि० ऐंड्रज ने भी यह बताया है कि आप, गुरुदेव और श्री रुद्र ने उन्हें कितना प्रभावित किया है। उन्होंने मुझे बताया है कि आपके शिष्यों ने सत्याग्रहियों के लिए कितना काम किया था, और गुरुकुल के जीवन के विषय में वे शाब्दिक चित्र प्रदर्शित किये कि इस समय जबकि मैं यह पत्र लिख रहा हूं, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मैं गुरुकुल में बैठा हूं। सचमुच मि० एंड्रूज ने जिन तीन हिन्दुस्तान के अच्छे बटों का वर्णन किया है और जो इन संस्थाओं के प्रधान हैं, उनसे मिलने को मैं बेचैन हूं।

मैं हूं,

आपका

मोहनदास के० गांधी

इस पत्र के कुछ संकेतों के लिए स्पष्टीकरण आवश्यक है। गांधीजी ने १९२४ में दक्षिण अफ्रीका में सविनय अवज्ञा आन्दोलन फिर शुरू कर दिया था। श्री गोखले ने सत्याग्रहियों की मदद के लिए कुछ लाख रुपयों के लिए अपील निकाली थी, मगर उसकी कोई उचित प्रतिक्रिया नहीं हो रही थी। लेकिन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने घी और दूध खाना त्याग कर और हरिद्वार का बांध बनाने वाले मजदूरों के साथ तीन दिन को छुट्टियों में मजदूरी करके १५०० रु० एकत्र किये थे। यह रुपया श्री गोखले को तार द्वारा भेज दिया गया और यह खबर उन्हें उस समय मिली, जब वे नितान्त हताश हो गए थे। मेरे शिष्यों के विषय में कहते हुए उसी त्याग की ओर गांधी जी का संकेत है।

गुरुदेव से उनका मतलब विश्वकवि डा० रवीन्द्र नाथ टाकुर से था। यह वह पहल पत्र है जो मुझे महात्मा जी से, जिस नाम से बाद में, जब वे अप्रैल १९२५ में गुरुकुल पधारे मैंने उनको सम्बोधित किया, प्राप्त हुआ यह अन्तिम पत्र था, जो अंग्रेजी में था। कारण यह कि उसका जवाब मैंने हिन्दी में इस उल्लेख के साथ दिया था कि जो व्यक्ति हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहता है, उसे अपने देशवासियों के साथ किसी विदेशी भाषा में पत्र-व्यवहार करने का कोई अधिकार नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पौराणिकों के दुर्ग काशी में जा पाखण्डों पर प्रबल प्रहार करते हुए : स्वामी दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद के प्रचारक

काशी में वेद ध्वजा फहरा कर स्वामी दयानन्द ने सारे देश में भ्रमण किया। वे जहाँ भी गये उन्होंने 'वेद' प्रचार किया। सैकड़ों वर्षों के पश्चात् 'वेद' ज्ञान को सत्य रूप में उपस्थित करने का, वेद ही ईश्वर का ज्ञान, यह प्रचारित करने का श्रेय एक मात्र स्वामी दयानन्द को दिया जा सकता है।

स्वामी जी ने बताया कि कुरान, बाइबिल, पुराणों में जो लिखा है वह धर्म नहीं है। धर्म तो सब समय में, सब देशों में एक-सा ही रहता है।

सच्चा धर्म-ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामदेव और अथर्ववेद के रूप में मानव मात्र के कल्याण के लिए दिया था।

स्वामी जी ने कहा कि जब से संसार 'वेदों' को भूला है तभी से यहाँ दुःख अज्ञान फैला है। मनुष्य को मनुष्य बन कर रहने की शिक्षा केवल 'वेद' ही देता है।

'वेद' के मन्त्रों की पावन ध्वनि जब स्वामी जी के मुख से गूंजती थी तब सुनने वाले समझते थे कि अमृत बरस रहा है। अंधेरा मिट रहा है। 'वेद' ही धर्म है यह सत्य स्वामी जी ने सभी को बताया और इसी प्रकार का सर्वत्र प्रचार कर कहा कि—

'वेद' सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। 'वेद' का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

स्वामी जी की इस घोषणा ने असत्य के उपासकों को हिला दिया। अज्ञान के दुर्ग कांप गए। और परमात्मा की वाणी के नाम पर जितने भी मनुष्य जाति को बहकाने वाले ग्रंथ थे, उन सब की वास्तविकता प्रगट हो गयी और चारों ओर गूंज उठी ध्वनि—

"वैदिक धर्म की जय"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

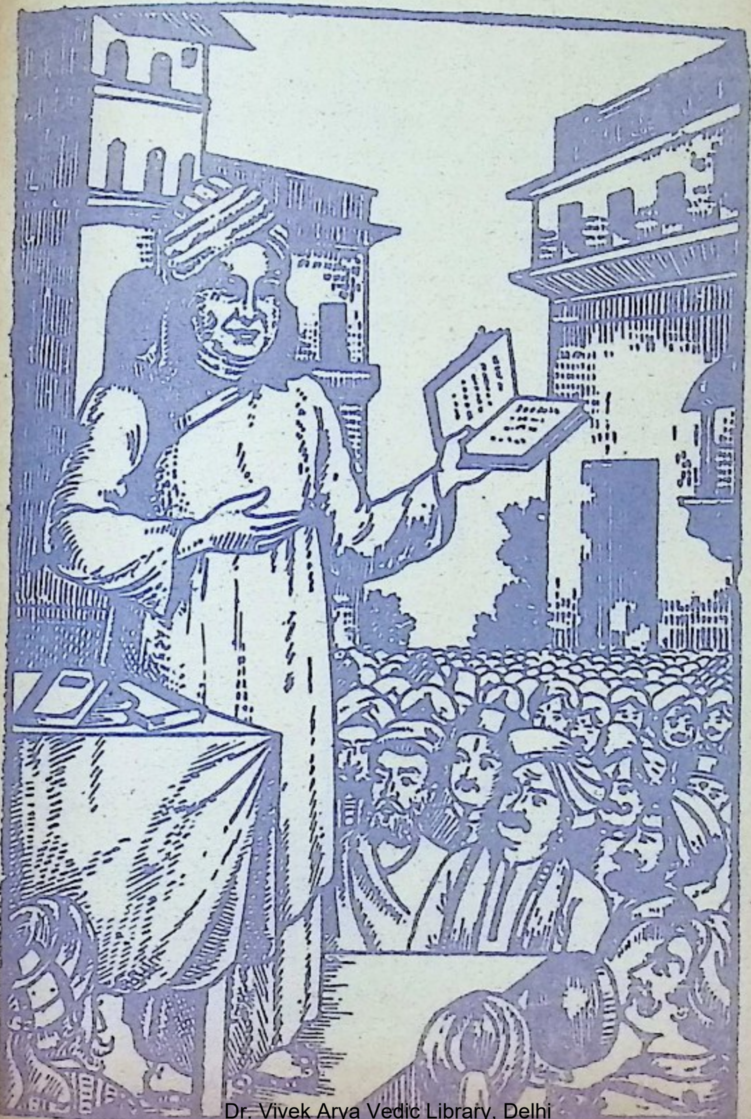

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

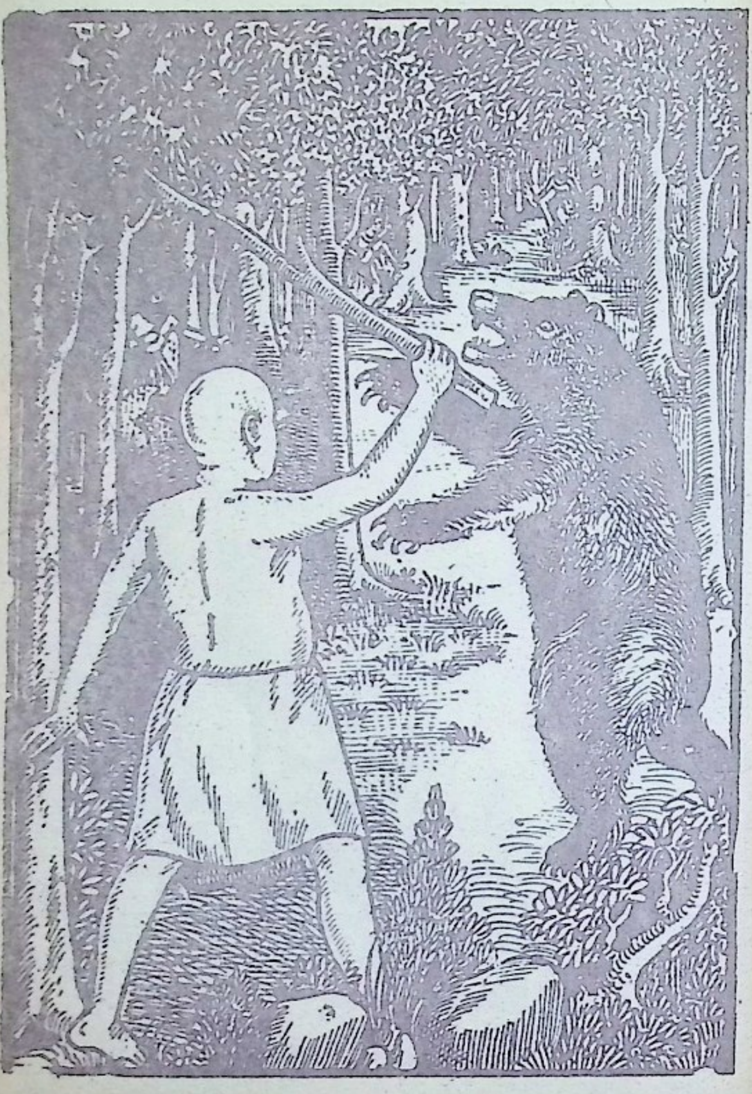

योग की अपूर्व शक्ति से बलशाली रीछ स्वामी दयानन्द की हुंकार से भाग गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

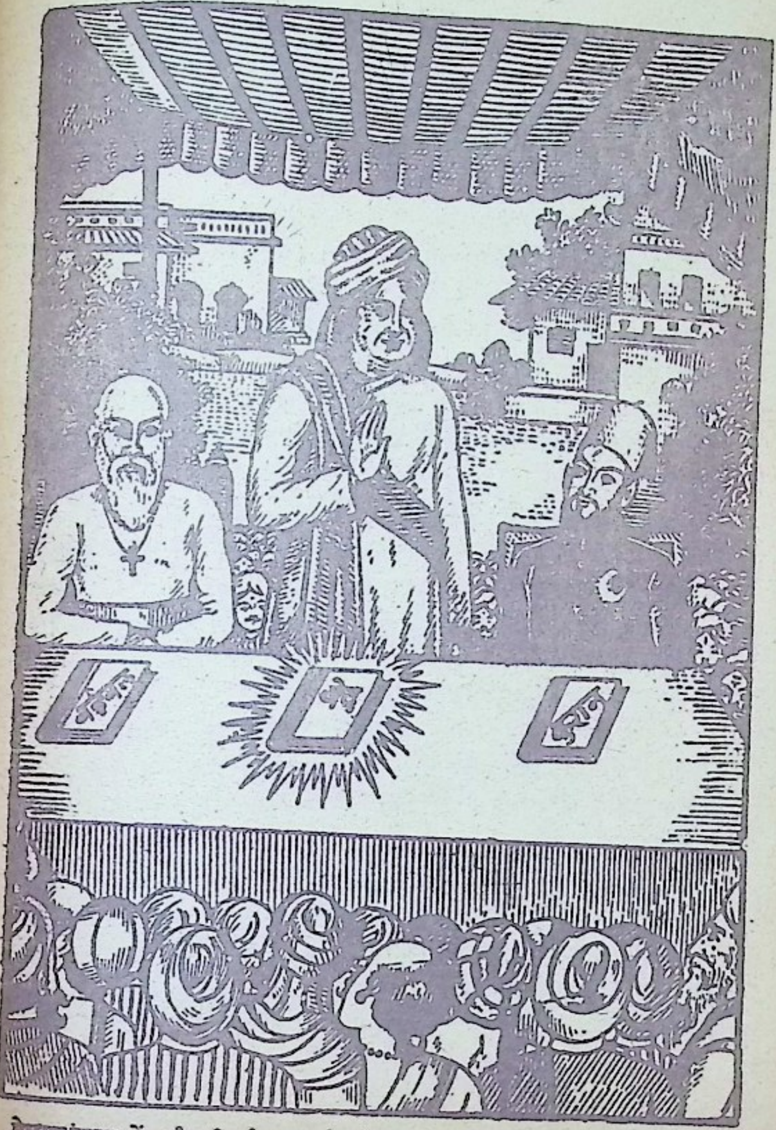

मेलाचांदपुर में मौलवी और पादरी को पराजित कर Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi वैदिक धर्म की महत्ता

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्रह्मचर्य का बल

स्वामी दयानन्द बाल ब्रह्मचारी थे। उनका जीवन ब्रह्मचर्य के तेज से चमकता था। जालन्धर (पंजाब) में एक दिन सरदार विक्रमसिंह ने जब ब्रह्मचर्य की महिमा पर स्वामी जी का भाषण सुना तो बोले—आप भी तो ब्रह्मचारी हैं। हमें तो आप में कोई विशेष बल प्रतीत नहीं होता।

उस समय स्वामी जी मौन रहे। किन्तु जब विक्रमसिंह अपनी दो घोड़ों की बग्घी में सवार हो कर चले तो घोड़े टस से मस नहीं हुए। कोचवान ने बहुत कोड़े मारे पर घोड़े आगे न बढ़ पाए!

सरदार विक्रमसिंह ने जब पीछे मुड़कर देखा तो पता चला कि स्वामी दयानन्द ने पहिया पकड़ा हुआ है। स्वामी जी ने पहिया छोड़ दिया और बोले कि आपको ब्रह्मचर्य के बल का प्रमाण मिला या नहीं। सरदार विक्रमसिंह लज्जित हुए और उन्होंने स्वामी जी के चरण पकड़ लिए।

स्वामी जी का शरीर बल का भंडार था। अकेले ही रीछ को डंडे से भगाना, सांड़ को हाथों से ढकेलना, अनेक शत्रुओं के छक्के छुड़ाना स्वामी जी के जीवन के प्रेरक प्रसंग है।

स्वामी जी में जहाँ आत्मिक बल था, वहाँ वे शारीरिक बल के भी भंडार थे। यही कारण है कि अनेकों बार विष दिए जाने पर भी उन का शरीर सब कुछ सहन कर सका।

तूफान, आंधी और भयंकर संकटों में भी अडिग स्वामी दयानन्द का सारा जीवन शक्ति और शौर्य का उज्ज्वल उदाहरण है। आज भी हम उन के जीवन से प्रेरणा लेकर असत्य से टकराने का साहस मन में भर सकते हैं।

वे प्रत्येक दृष्टि से बली थे। संसार की सारी आसुरी शक्तियों को अकेले ललकारा। स्वामी जी के आत्म बल का अनुपम उदाहरण है। वे कभी असत्य के सम्मुख चूके नहीं, कभी भी उन्होंने हार मानी नहीं, वे सदा विजयी रहे और मुस्कराते रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

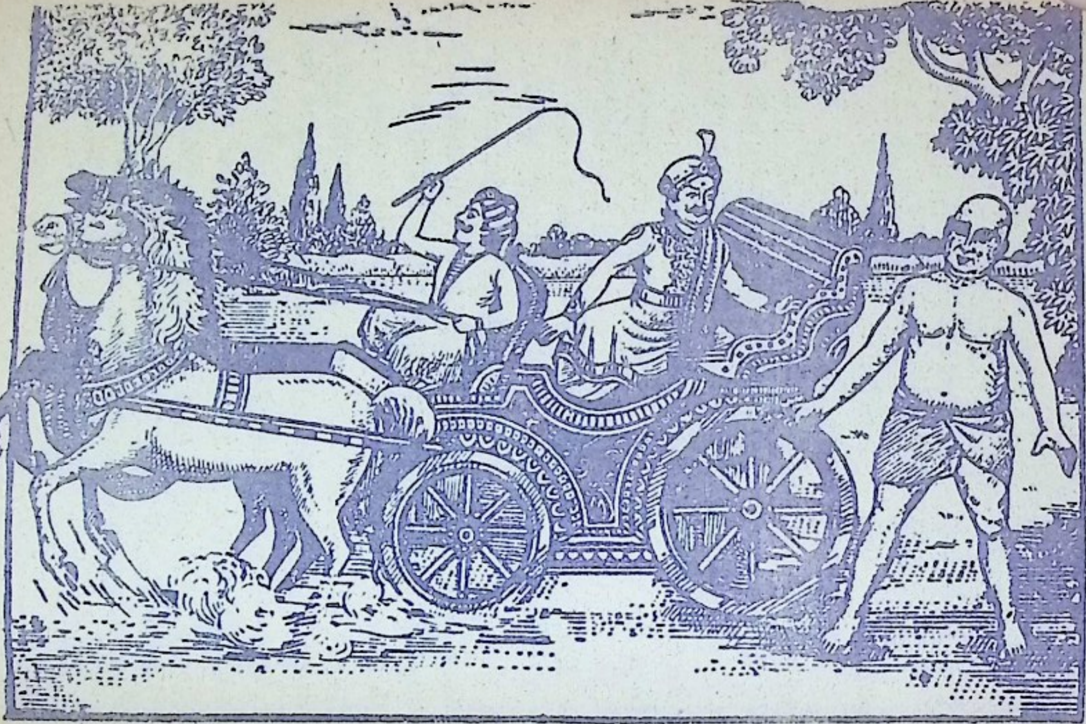

अपूर्व बली दयानन्द: [illegible] दो घोड़ों की बग्घी एक हाथ से रोक ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तलवार के टुकड़े

वेद प्रचार करते हुए स्वामी दयानन्द कर्णवास पधारे। यहां का राव कर्णसिंह महाभिमानी और बिगड़ा हुआ व्यक्ति था।

कुरीतियों और पाखंडों का खंडन स्वामी जी पूरे बल से करते थे। राव कर्णसिंह ने जब स्वामी जी द्वारा रास लीलाओं के खंडन की बात सुनी तो क्रोध में भर कर स्वामी जी के पास पहुंचा और व्यर्थ की बकवास करने लगा। स्वमी जी की खरी-खरी सुनकर वह आपे से बाहर हो गया और उसने भीषण रूप धारण कर स्वामी जी पर तलवार का प्रहार किया।

स्वामी जी ने बायें हाथ से उसे धकेल कर तलवार भूमि पर टेक दी। तलवार के दो टुकड़े हो गए। राव महाशय भय से थर-थर कांपने लगे। उन का मुंह पीला पड़ गया।

स्वामी जी बोले—मैं संन्यासी हूं, क्रोध में आकर या तुम्हारे व्यवहार से रुष्ट हो कर तुम्हारा अहित नहीं करूंगा। जाओ, अपना काम करो।

कांपता हुआ कर्णसिंह वहां से चला गया, पर इस घटना की चर्चा सारे क्षेत्र में फैल गयी। लोग स्वामी जी के ज्ञान से तो पहले ही प्रभावित थे। इस घटना के बाद उन्हें सिद्ध पुरुष मानने लगे।

किन्तु स्वामी जी पर घटना का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा। वे पहले की ही भांति अपने प्रचार कार्य में लगे रहे। जहां भी वे जाते थे, उन का यश उन से पहले ही पहुंच जाता था।

इसी भांति अनेक बार दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने स्वामी जी के प्राण लेने की चेष्टा की पर सदा ही उन्हें मुंह की खानी पड़ी।

उन्हें अनेकों बार विष दिया गया, उन्हें समाप्त करने के षड्यन्त्र रचे गये। किन्तु स्वामी जी ने सभी विरोधियों को अपने धैर्य शौर्य से परास्त कर दिया। सारे ही दुष्ट हृदयों के उन्होंने टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

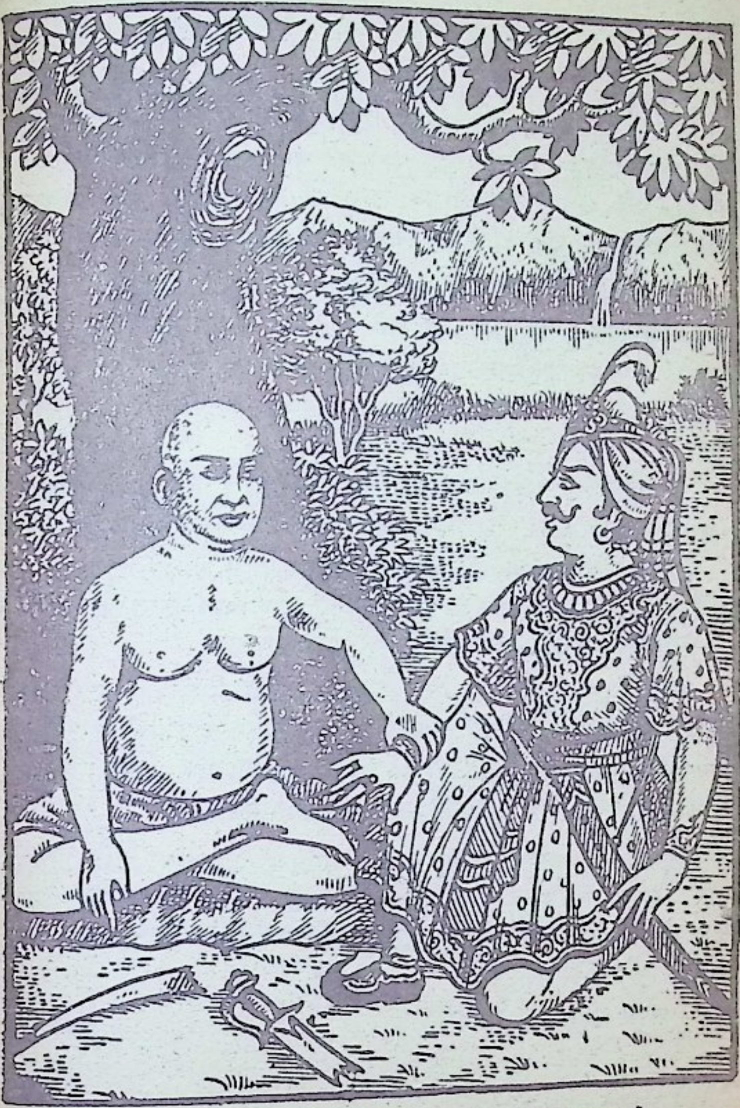

अभिमानी राव कर्णसिंह की तलवार के स्वामी दयानन्द ने
बाएं हाथ से ही दो टुकड़े कर दिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जोधपुर नरेश को फटकार

जोधपुर के राजा यशवन्तसिंह का नन्हीं जान नाम की वेश्या से गहरा संबंध था। एक दिन निश्चित नियम के अनुसार स्वामी जी महल में पहुंचे। महाराज उस समय नन्हीं जान को विदा कर रहे थे। डोली उठने से पहले ही स्वामी जी के पहुंचने पर राजा यशवन्त सिंह घबरा गए और डोली को स्वयं कन्धा लगाकर उठवा दिया।

नन्हीं जान तो चली गयी परन्तु यह दृश्य देख कर स्वामी जी का हृदय अत्यन्त दुःखी हुआ। वे बोले, राजन् ! राजा लोग सिंह समझे जाते हैं और स्थान-स्थान पर भटकने वाली वेश्या कुतिया के समान है। सिंह का कुतिया पर आसक्त होना किसी भी दृष्टि से शोभा नहीं देता।

स्वामी जी के शब्द नन्हीं जान तक भी पहुंचे। वह स्वामी जी को मिटाने पर तुल गयी। प्रतिहिंसा की ज्वाला में वह जल उठी।

अंग्रेज स्वामी जी से शत्रुता रखते थे। वे भी इस षड्यन्त्र में शामिल हो गए। मुसलमान भी मिल गए और फिर भारत के भाग्य पर चमकते सूर्य को बुझाने की तैयारियाँ होने लगीं।

जीवन भर जिस महापुरुष ने धर्म को जीवित किया। जो सदा सत्य का प्रचार करता रहा, पाखंडों पर किए जिस के प्रहारों ने सर्वत्र नयी ज्योति को जन्म दिया उस देव पुरुष को समाप्त करने का षड्यंत्र जोधपुर में नन्हीं जान वेश्या के द्वारा संचालित हुआ—

भारत का भाग्य विधाता, आर्य जाति का उद्धारक, रक्षक और नारी जाति का संरक्षक एक भटकी हुई नारी की क्रोधाग्नि की भेंट चढ़ गया। एक बार फिर महानाश ने निर्माण को समाप्त करने में सफलता प्राप्त की।

हाय रे दुर्भाग्य…………

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

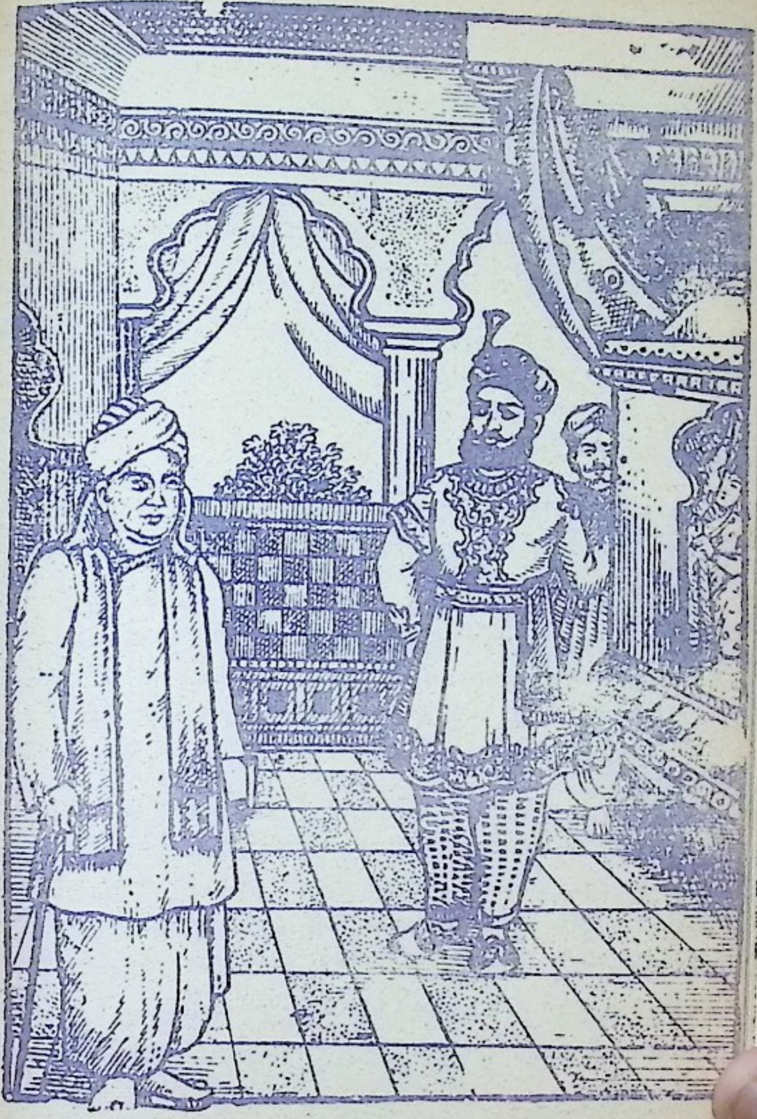

जोधपुर नरेश को फटकारते हुए : स्वामी दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विष दाता को क्षमादान !

धरती पर कोई उदाहरण ऐसा ढूंढने पर न मिलेगा जब मरने वाले ने मारने वाले को बचाया हो ! किन्तु स्वामी दयानन्द ने अपने विषदाता जगन्नाथ को ५००) देकर दूर भाग जाने की प्रेरणा देकर उस की प्राण रक्षा की !

जोधपुर में जब स्वामी जी ने महाराजा को वेश्या-वृत्ति के लिए फटकारा तो नन्हीं जान उन की शत्रु बन गयी ! अनेक विरोधी इकट्ठे हो गए और जैसे भी संभव हो स्वामी जी का जीवन समाप्त करने की योजनाएं बनने लगीं !

बहुत सोच विचार के बाद निश्चय किया गया कि जगन्नाथ पाचक को तैयार किया जाए और वह सोते समय स्वामी जी को दूध में विष मिलाकर पिला दे।

२६ सितम्बर १८८३ की रात्रि को पापी जगन्नाथ ने दूध में जहर मिला कर स्वामी जी को पिला दिया। थोड़ी देर बाद ही भयंकर उदर वेदना हुई। अनेक यत्न किए। पर दर्द बढ़ता गया और रोग भी घातक बन गया !

स्वामी जी ने अपनी दिव्य दृष्टि से विषदाता जगन्नाथ को पहचान लिया, परन्तु उसे कुछ नहीं कहा। उस पर दया बरसाते हुए स्वामी जी बोले, जगन्नाथ ! मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य सर्वथा अधूरा रह गया! पर जैसी प्रभु इच्छा; लो ये पाँच सौ रुपये और नेपाल भाग जाओ! तुम्हारे काम आयेंगे !

दयानन्द धन्य था, उस की क्षमा धन्य थी ! कितना अद्भुत था यह दृश्य ! विषदाता को भी प्राण दान ! सचमुच दयानन्द दया का सागर था !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

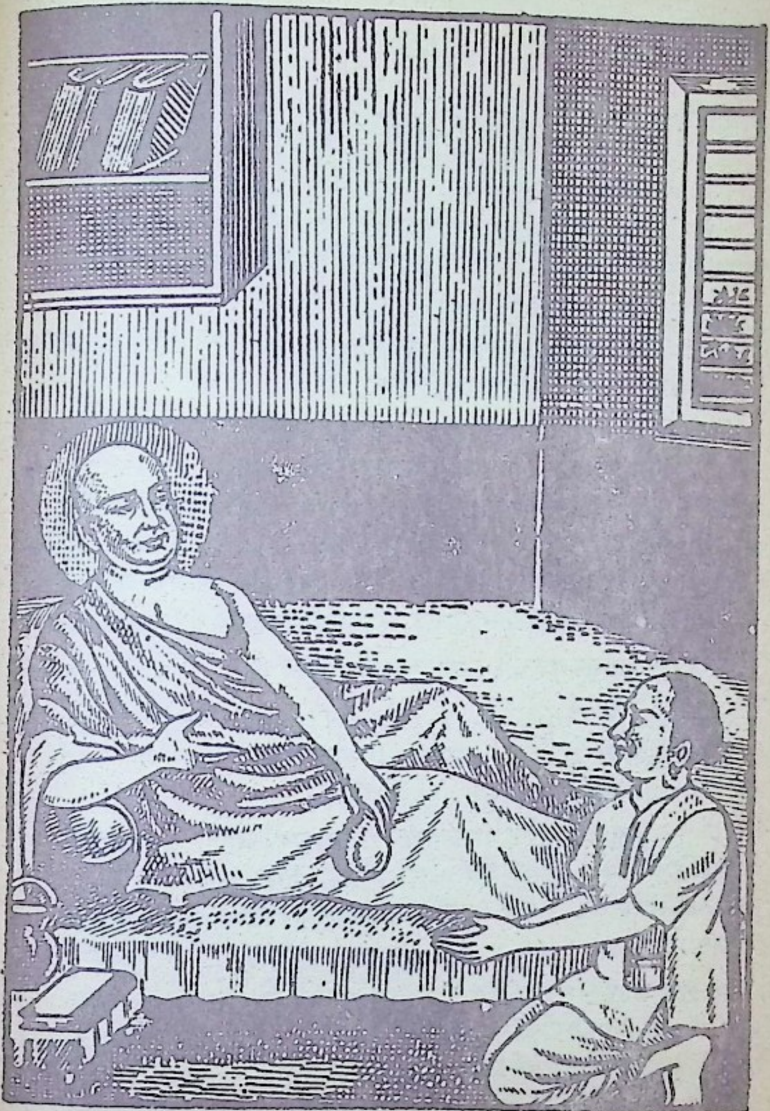

विष देने वाले पाचक जगन्नाथ को—क्षमादान देते हुए : दयालु दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महाप्रयाण !

३० अक्तूबर १८८३

दीप पंक्तियों से सारा भारत जगमगा रहा था। किन्तु भारत के भाग्य को नया जन्म देने वाला महापुरुष संसार से विदा हो रहा था।

सायं ५ बजे का समय था।

स्वामी जी ने पूछा आज कौन-सा मास, पक्ष और दिन है ? उत्तर मिला मंगलवार कार्तिक अमावस्या है।

स्वामी जी ने सब दरवाजे, रोशनदान खुलवा दिए। ऊपर की ओर दृष्टिपात किया और वेद मंत्रों का पाठ करना आरम्भ कर दिया। फिर संस्कृत में उपासना की। प्रभु गुणगान के साथ आनन्द मग्न हो गायत्री मंत्र का उच्चारण किया और शान्त समाधिस्थ हो गये। पुनः आंखें खोल कर "ओ३म्" का उच्चारण किया और बोले

हे दयामय सर्वशक्तिमान् ईश्वर, तेरी यही इच्छा है, तेरी यह इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो ! अद्भुत तेरी लीला है।

इन शब्दों के साथ करवट ली। एक बार श्वास को रोक पुनः सदा के लिए बाहर निकाल दिया। दीपमाला, सायं ६ बजे का समय था, देव दयानन्द की लोक-लीला पूर्ण हुई।

जिस महान् आत्मा ने भारत को बचाया, धर्म, संस्कृति, ज्ञान, सत्य को नया जन्म दिया। प्रभु की वाणी "वेद" का उद्धार और प्रचार किया वह सच्चा महामानव परमात्मा का संदेश फैलाने वाला दीपकों की जगमग के साथ धरती से विदा हुआ।

नया युग दयानन्द का युग है। सत्य की साधना, ज्ञान की कामना और धर्म की स्थापना के लिए संसार का प्रत्येक व्यक्ति ऋषि का ऋणी रहेगा—उस का मन सदा गुंजायेगा।

ऋषि दयानन्द की जय !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

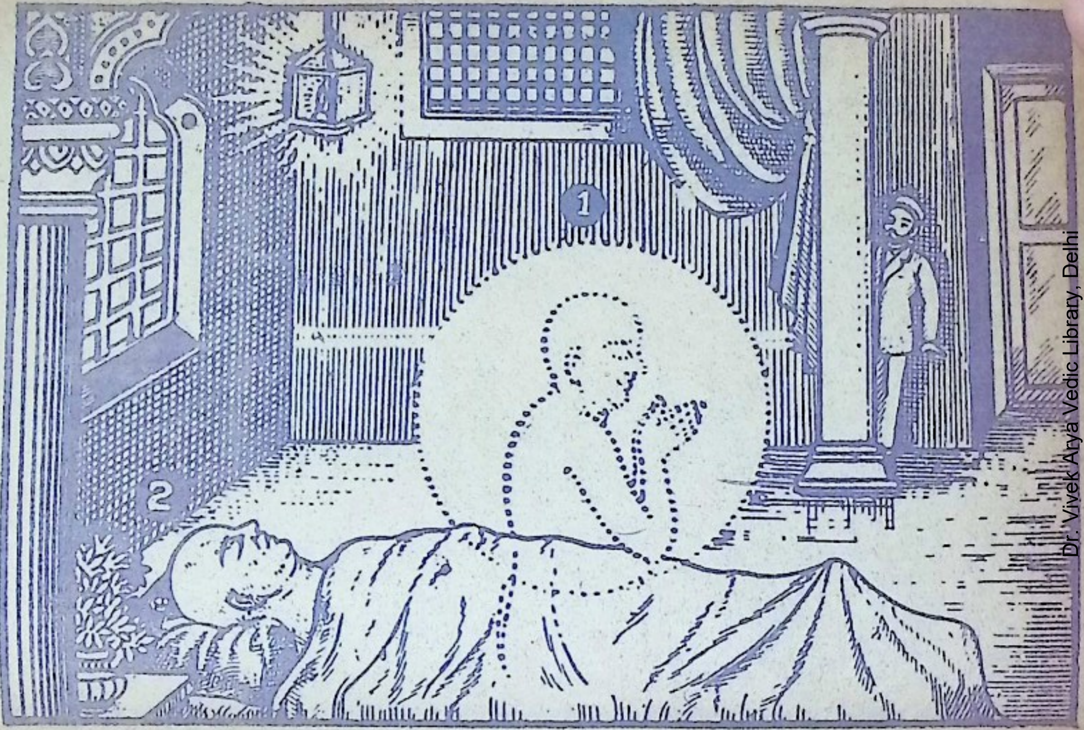

मृत्युञ्जय दयानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीपमाला के दिन ज्ञान ज्योति जला कर ज्योति पुंज दयानन्द
धरती से विदा हो गये ।

लेखक—भारतेन्द्रनाथ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब आर्यसमाज की शाखाएं क्या करें ?

--ब्रह्मचारी आर्य नरेश

१. सभी डी०ए०-वी० तथा अन्य आर्य संस्थाओं के नाम हिन्दी में ही लिखे जाने चाहिए जिससे बच्चों को आर्यसमाज की जानकारी भली भांति हो सके। डी०ए०-वी० स्कूल अथवा ए०एस० स्कूल के स्थान पर दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक विद्यालय तथा आर्यसमाज विद्यालय लिखने का तुरन्त विधान किया जाए। खेद है कि जब कुछ बच्चों से डी०ए०-वी० का अर्थ पूछा गया तो उन्होंने दाल, आलू, बड़िया बताया।

२. सभी आर्य शिक्षण तथा अन्य संस्थाओं में आर्य सिद्धांतों में सुपरिचित युवकों को ही नौकरियों में प्राथमिकता दी जाए। इसी से आर्य विद्यालयों में वैदिक धर्म की सेवा करने वाले विद्यार्थी प्राप्त हो सकेंगे तथा आर्य युवकों में बेकारी की समस्या टल सकेगी।

३. प्रत्येक आर्य संस्था में यज्ञशाला अनिवार्य हो व यज्ञ तथा संध्या के सत्संग के कार्यक्रम अनिवार्य किए जायें और इसके साथ-साथ धर्म शिक्षा के अंक भी परिणाम में जोड़े जायें। धर्म शिक्षक गुरुकुल के स्नातक लिए जायें जिससे गुरुकुल प्रणाली व आर्य धर्म सुरक्षित रहता हुआ सफलता को प्राप्त कर सके।

४. सभी आर्य संस्थाओं के काम-काज को हिन्दी भाषा में भी किया जाए तथा सूचना पट्ट, नाम पट्टिकायें तथा उपस्थिति संचिका आदि में हिन्दी भाषा का ही उपयोग किया जाए। सभी कर्मचारी, कार्यकर्त्ता तथा अध्यापक हिन्दी में हस्ताक्षर करें तथा संस्कृत को अनिवार्य प्रोत्साहन किया जाए।

५. आर्य शिक्षण संस्थाओं में सह-शिक्षा, नेकटाई तथा अन्य विदेशी व्यवहारों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए। ऐसा करने से ही आर्यसमाज ऋषि दयानन्द के मार्ग पर चलकर वैदिक संस्कृति की सेवा कर सकेगा। इसके साथ ही शिक्षा के लिए अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं को एक साथ न रखा जाए। कन्या विद्यालयों में अध्यापिकायें ही लगाई जायें।

६. सभी आर्य संस्थाओं के सभी कमरों में महर्षि दयानन्द तथा आर्य क्रान्तिकारियों के चित्र तथा संक्षिप्त परिचय पत्र लगाये जायें और इसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साथ ही संस्थाओं के अन्दर तथा बाहर की दीवारों पर आर्यसमाज के नियम तथा अर्थ सहित वेद-सूक्तियां भी लिखवाई जायें।

७. प्रत्येक प्रान्तीय सभा अपनी-अपनी विद्या सभा तथा शिक्षण संस्थाओं की सहायता से विद्यालयों की पाठ्य पुस्तकों में वेद तथा आर्य धर्म के प्रति किये गये अनर्गल प्रलाप यथा आर्य लोग मांस खाते थे, यज्ञों में मांस डालते थे, शराब पीते थे, जड़ वस्तुओं की पूजा करते थे तथा नंगे रहते थे और वेदों में जादू टोना है आदि, आदि शब्दों को तुरन्त निकलवाया जाय। तभी युवा पीढ़ी की आर्य धर्म के प्रति रुचि तथा श्रद्धा बढ़ सकेगी।

८. आर्य शिक्षण संस्थाओं में युवकों और युवतियों को योग, आसन एवं ध्यान की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी भाए। प्रतिदिन प्रार्थनाओं के पश्चात् किसी एक अध्यापक द्वारा बच्चों की वैदिक सिद्धान्तों पर किए गये सफल आविष्कारों के समाचारों को बताया जाए।

९. आर्यसमाजों के उत्सवों तथा पर्वों पर सभी सम्बन्धित विद्यालयों को अध्यापकों सहित भाग लेना अनिवार्य कर दिया जाए। पर्वों तथा रविवारों की इन दिनों की छुट्टी न करके इनके स्थान पर आगे छुट्टियां दी जायें। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि हम अपनी संस्थाओं में बैठे बच्चों तथा युवकों की तो छुट्टी कर देते हैं और फिर उपस्थिति के लिए मारे-मारे फिरते हैं।

१० सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर आर्य संस्थाओं में लड़कियों को नचाना तथा उनके द्वारा पुरुष अतिथियों का पुष्पमालाओं से स्वागत कराना बन्द किया जाए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के द्वारा वैदिक महापुरुषों तथा आर्य वीरों एवं आर्य वीरांगनाओं के ही कार्यक्रम जनता को दिखाये जायें।

११. आर्य शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों के साथ अध्यापकों की भी वेश भूषा निश्चित की जाए।

१२. वानप्रस्थ से रहित किसी भी व्यक्ति को अधिकारी अथवा उपदेशक के रूप में कार्य करने पर रोक लगाई जाए और प्रत्येक समाज में अधिक से अधिक आर्य युवकों को ही अधिकारी बनाया जाए।

१३. समाजों में युवा पीढ़ी को लाने के लिए स्थायी रूप से कम से कम ५०० रुपये दक्षिणा पर (संस्कारों की दक्षिणा को छोड़ कर) गुरुकुलों एवं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चारक विद्यालयों के स्नातकों को अनिवार्य रूप से पुरोहित रखा जाए, जिससे वहां प्रतिदिन ध्वनियंत्र पर प्रातः व सायं के मन्त्रों सहित संध्या, वेद पाठ-उच्चारण, आर्य सिद्धांत प्रशिक्षण, आर्य संस्कार, पारिवारिक सत्संगों का आयोजन, कुमार सभा तथा आर्य युवकों की सभा नियमित चलाकर उन्हें आर्य समाज के प्रति आकर्षित किया जाये। ध्यान रहे कि जैसे डाक्टर के बिना औषधालय बेकार है वैसे ही पुरोहित के बिना समाज।

१४. प्रत्येक आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्था में व्यायामशाला तथा रुचिकर क्रांतिकारी धार्मिक साहित्य केन्द्र स्थापित किया जाए और आर्य क्रांतिकारियों की चित्र प्रदर्शनी लगी रहे।

१५. रविवार व सत्संगों, पर्वों तथा उत्सवों पर विद्यार्थियों की भाषण, आसन, मंत्र स्मरण तथा अन्य क्रीड़ाओं की प्रतियोगितायें रखी जायें। बच्चों को उपरोक्त सभी अवसरों पर आकर्षित करने के लिए पारितोषिक एवं प्रसाद वितरण किया जाये।

१६. घर पर यज्ञ-संध्या और संस्कार करवाने वालों एवं बालक तथा बालिकाओं के सहित आर्य सत्संग में भाग लेने वाल को ही विशेष अधिकार के लिए प्रोत्साहन दिया जाये। परिवार सहित समाज में आने वालों को उत्सवों पर सम्मानित किया जाए।

१७. (क) ग्राम-प्रचार व पिछड़ी बस्तियों में प्रचार कार्यक्रमों को रख कर आर्य युवकों को उसमें प्रेम सहित जिम्मेदारी सौंपें और उन्हें नेता मान कर चलें। जो केवल ऐसा सोचकर कि युवकों को अनुभव नहीं है, उन्हें आगे नहीं आने देते, वे लोग ही युवकों को आर्यसमाज में लाने के मार्ग में बाधक हैं।

१७. (ख) हमारा अनेक स्थानों का यह कटु अनुभव है कि जिन समाजों में बड़े माता-पिता ही समाजों में अधिकारी बन कर आगे रहते हैं वहां उनके अपने घरों में पुत्र-पुत्रियां तथा पुत्र वधुएं भी हिचकिचाते हुए समाज के कार्यक्रमों में भाग नहीं लेतीं।

१८. आर्य पिताओं को चाहिए कि वे वैदिक-धर्म के सिद्धान्तानुसार जीते-जी अपने बेटों को पगड़ी सौंप दें तथा आर्य मातायें अपनी पुत्र वधुओं को ताली। इससे समाज में एक युवा जीवन का सञ्चार हो सकेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९. आर्य युवा संगठनों के अधिकारी ४८ वर्ष तक की आयु वाले ही रखे जयें। खेद है आज कि बेटे-पोतों वाले लोग युवा संगठनों के अधिकारी बने हुए हैं। हमारा उनसे अनुरोध है कि यदि वे अपने पद किसी और व्यक्ति को नहीं सौंपना चाहते तो कम से कम अपने बेटों-पोतों को ही सौंप दें। आश्चर्य है कि समाजें हैं तो वहां प्रायः वृद्धों की भरमार और ये युवा-संगठन हैं तो वहां भी वही प्रकार।

२०. प्रत्येक आर्यसमाज अपने खर्चे से प्रतिवर्ष कम से कम एक ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविर लगाए। इससे सब प्रकार के युवक अधिक से अधिक आर्यसमाजों के सम्पर्क में आ सकेंगे।

२१. प्रत्येक आर्यसमाज में प्रतिदिन नियम-पूर्वक बाल तथा युवा व्यायाम संध्या शाखा चले तथा आर्यसमाज की निजी व्यायाम शाला हो। इन कुमार सभाओं के पश्चात् प्रसाद अवश्य बांटा जाये।

२२. प्रत्येक आर्यसमाज व शिक्षण संस्था में युवा-पीढ़ी तथा अलग पुस्तकालय हों, जिसमें वैदिक सिद्धान्तों को समझाने तथा देश-भक्ति की भावना भरने के लिए सुन्दर चित्रों से युक्त रोचक जीवन कथायें तथा विज्ञान की पुट लिए हुए सरल साहित्य रखा जाए।

२३. किसी भी आर्यसमाज में ऐसा शौचालय न हो जिसमें कि मल को सिर पर उठवाया जाता हो। निम्न कहे जाने वर्गों में युवकों के द्वारा ही यज्ञों के आयोजन हों तथा उनमें यजमान भी अधिकतर युवकों को ही बनाया जाये। उन वर्गों का मांस-अण्डा, मछली, शराब व जुआ छुड़वा कर प्रीति भोजों का आयोजन किया जाये। यह बात प्रायः देखने में आती है कि युवकों का ही युवकों पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

२४. युवकों को युवक ही अधिक आकर्षित कर सकते हैं अतः आर्य संगठनों को चाहिए कि वे पढ़े-लिखे युवकों को प्रचारक बनाने के लिए प्रचारक विद्यालय खोलें। खेद है कि आर्य सभाओं के लाखों रुपये क्षणिक जलसे-जलूसों पर व्यय हो जाते हैं पर वे इस उपरोक्त स्थायी कार्य को कोई महत्व न देकर भयंकर भूल कर रहे हैं।

२५. युवा पीढ़ी को समाज में आकर्षित करने के लिए यह आवश्यक है कि साप्ताहिक सत्संगों में प्रवचन, चरित्रवान् बुद्धिजीवी और वैज्ञानिक दृष्टि वाले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदर्श लोगों के ही रखे जायें। प्रवचनों में युवा पीढ़ी की वर्तमान काल की समस्याओं की भी चर्चा हो।

हर विषय को तर्क तथा विज्ञान के दृष्टिकोण से समझाया जाये। प्रवचनों में दैनिक जीवन के लिए उपयोगी ब्रह्मचर्य-रक्षक, सुन्दर स्वास्थ्य तथा कुशाग्र-बुद्धि बनाने के भी यौगिक उपायों पर प्रकाश डाला जाये।

२६. युवकों में महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा पैदा करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक आर्य समाज में उनके मुख्य-मुख्य सिद्धान्तों तथा राष्ट्र के प्रति सेवाओं को मोटे अक्षरों में बोर्डों पर अंकित करके रखा जाये जिससे अत्यन्त सहज में उनका परिचय मिल सके। और इसके साथ ही महर्षि दयानन्द के अनुययियों के भी संक्षिप्त चरित्र सहित चित्रावली लगाई जाये।

२७. सत्संग भवनों को सुन्दर, सुगंधित, प्रकाशित व शान्त रखने से युवक अधिक आर्कषित हो सकेंगे। इसके लिए आवश्यक है कि स्नानागार तथा शौचालय को अत्यन्त स्वच्छ रखा जाये। मंच ऊंचा, सुन्दर व आकर्षक हो। दरियों पर चादरें हों, यज्ञ के आसन व पात्र टूटे तथा पुराने न हों। ध्वनि यंत्र व वाजा मधुर आवाज वाला हो।

२८. आर्यसमाज की ओर से कभी-कभी रमणीक स्थानों पर एक दिन का रोचक पर्यटन कार्यक्रम रखा जाये। वहीं पर सत्संग, भजन तथा सम्मिलित भोजन किया जाये। इन में योगासन प्रतिस्पर्धा को आधार बनाया जा सकता है। ऐसे कार्यक्रम युवकों तथा युवतियों के अलग-अलग रखे जायें।

२९. प्रत्येक समाज में यज्ञशाला आदि के चारों ओर एक सुन्दर पुष्प-वाटिका बनाई जाए। यज्ञशाला तथा सत्संग-भवन में वेद मंत्र व बलिदानी महापुरुषों के चित्र लगाए जायें।

३०. सत्संग व यज्ञ के मध्य अथवा पश्चात् किसी भी प्रकार की, बिना वक्ता अथवा पुरोहित के संकेत के कोई शंका या सिद्धात का विवाद न उठाया जाये। अच्छा तो यही है कि शंका समाधान सत्संग की समाप्ति व शान्तिपाठ के पश्चात् ही रखा जाये जिससे सुने हुए प्रवचन का प्रभाव ही अन्त में स्थायी संस्कार व प्रभाव डाल सके।

३१. यज्ञ, संध्या व सभा का संचालन कार्य योग्य शुद्ध उच्चारण वाला पुरोहित और उसकी अनुपस्थिति में कोई योग्य अधिकारी ही करे। पुरोहित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को सर्वदा उच्चासन दिया जाये। सामूहिक प्रार्थना व मंत्र पाठ में स
सज्जन उपरोक्त विद्वान् पुरोहित के पीछे ही एक स्वर व मधुर ध्वनि
बोलें ।

३२. आर्यसमाज के सत्संगों में संख्या (और शोभा) को बढ़ाने
लिए अधिकारियों का यह परम कर्तव्य है कि वे शनिवार अथवा सत्संग
पूर्व न आने वाले लोगों को अवश्य ही प्रेमपूर्वक निमन्त्रण दे दें। इसके सा
ही यह भी आवश्यक है कि आगे आने वाले रविवार के यज्ञ के लिए
रविवार को ही यजमानों की घोषणा कर दी जाये। सपत्नीक लोगों को
यजमान बनाकर रविवार का यज्ञ श्रद्धापूर्वक किया जाये और इसमें भी न
विवाहित अथवा युवा दम्पतियों को सादर-सप्रेम निमन्त्रित किया जाये
यज्ञशाला सुसज्जित हो, यज्ञ-सामग्री सुगन्धित तथा पर्याप्त घृत मिश्रित
और यजमान कुर्ता-धोती में हों।

३३. आर्यसमाज का मुख्य द्वार अत्यन्त सुन्दर और उचित ढंग
प्रकाशित हो। झण्डा सदा नया, गाढ़े रंग वाला और ऊंचा हो। उस
झण्डे पर सदा एक सुन्दर प्रकाश देने वाला बल्ब भी लगा हो। भवन
ऊपर उच्च ध्वनि वाला ध्वनि यंत्र सदा लगा रहे। प्रदेश द्वार के साथ
जूते रखने तथा हाथ पैर धोने के लिए जल की उचित व्यवस्था हो
चाहिए। एक ही शब्द में सब कहूं तो यही कहूंगा कि जितने प्यार से
अपने घर के ड्राइंग रूम व बैठक को सजाते हैं तथा साफ रखते हैं उस
अधिक ध्यान अपने धर्म-स्थान देवालय (यज्ञ शाला-वेद भवन) का रखें।

३४. प्रत्येक रविवार तथा अन्य वेद प्रवचनों व उत्सव के कार्यक्र
को समाचारपत्रों के 'आज क्या है' कालम में अवश्य ही छपने को दि
जाये। विशेष पर्वों, वेद प्रवचनों व उत्सवों के कार्यक्रमों को सार्वजनिक स्था
पर रखा जाये तथा उन्हें कम से कम एक सप्ताह पूर्व पूरे नगर तथा ग्राम
पोस्टरों, विज्ञापनों, चौराहों पर श्याम पट्टों, वस्त्र पटों, सिनेमा स्लाइ
तथा सार्वजनिक (माइक द्वारा) घोषणाओं से सुप्रचारित किया जाए
ऐसा करने से जहां उपस्थिति में आशाजनक वृद्धि होती है वहां नये-नये यु
भी आर्यसमाज के सम्पर्क में आते हैं तथा वेद की बात चन्द व्यक्तियों
ही सीमित न रह कर सर्वसाधारण तक पहुंच पाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपका स्वास्थ्य

चुस्त शरीर तथा लम्बी आयु के लिए

प्रातः लगभग ४ बजे उठ जायें। उठ कर ओ३म् का जप करें। कुल्ला करके थोड़ा जल पीयें। कुछ भ्रमण करके शौच जायें। कुछ आसन करें। कपड़े से मसल कर स्नान करें। इसके पश्चात् ध्यान योग, संध्या, स्वाध्या तथा हवन करें। प्रातः दूध-दलिया, फल व दही लें। दिन में लगभग १ बजे भोजन करें। सायं ५ बजे भूख हो तो दूध या किसी फल का रस लें। ध्यान रहे कि फल तथा दूध के अधिक सेवन करने से यौवन स्थिर रहता है।

रात्रि ८ बजे के लगभग भोजन करें। रात्रि का भोजन कुछ हलका करें। ध्यान रहे कि भोजन के पूर्व अथवा पश्चात् भूलकर भी पानी न पीयें। भोजन से पूर्व तथा पश्चात् तीन आचमन या केवल एक घूंट पानी पीयें। दूध के साथ नमक या खटाई न लें। जो चर्बी को घटाने की इच्छा रखते हैं वे अधिक मीठी, तली हुई, चाय-काफी तथा अधिक ठंडी वस्तु भी न लें।

दोपहर के भोजन के पश्चात् ८ श्वास दायें, १६ श्वास सीधे तथा ३२ श्वास बायें सोयें। रात्रि के भोजन के पश्चात् आहिस्ता-आहिस्ता लगभग आधा घण्टा भ्रमण करें।

मूत्रादि रोगों से बचने के लिए भोजन के पश्चात् कम-सेकम १०० कदम चल कर पेशाब अवश्य जायें।

भोजन सदा प्रसन्नता के साथ और भोजन के गुणों को स्मरण कर करें। स्वास्थ्य और सुन्दरता के लिए सदा आनन्दित तथा व्यस्त रहें। □

भारत उनका जो भारत के। विदेशी पादरियों को देश से निकाला जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वरपुत्र कौन ?

१. जो श्रद्धापूर्वक पञ्चमहायज्ञों एवं वानप्रस्थादि वैदिक सिद्धांतों पर चलता हो तथा अपने परिवार को भी चलाने का प्रयास करता हो।
२. जो श्रद्धापूर्वक, परिवार सहित सत्संग में आता हो तथा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में समय देता हो।
३. जो श्रद्धापूर्वक प्रतिमास अपनी आमदनी का कम से कम सौवां भाग दान-दक्षिणा में देता हो तथा धर्म से धन कमाता हो।
४. जो श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन श्रेष्ठ-साधु विद्वानों को भोजन खिलाने को तैयार रहता हो तथा सत्यंग-भवन को अपने घर के तुल्य साफ रखता हो।
५. जो सदा सात्त्विक भोजन करता हो तथा तम्बाकू, शराब, नशा, मांस, अण्डा तथा उनसे बने पदार्थों का सेवन न करता हो।

हंसी का फव्वारा

एक क्लर्क ने छुट्टी के लिए आवेदन पत्र में लिखा—'मेरी पत्नी बहुत बीमार है अतः मुझे उसे देखने ससुराल जाना है।'

अधिकारी ने आवेदन पत्र पढ़ कर कहा—'पर कल ही तो तुम्हारी पत्नी का पत्र दफ्तर को मिला है, जिसमें लिखा है कि तुम उसे पैसे नहीं भेजते इसलिए वह परेशान है।'

क्लर्क बिना कुछ कहे जाने लगा तो अधिकारी ने पूछा—'तुमने जवाब नहीं दिया ?'

'क्या जवाब दूं साहब ? मैं तो समझता था, मैं ही झूठ बोलने में माहिर हू पर आप तो मुझसे भी आगे हैं। सच बात तो यह है कि अभी तक मेरी शादी हो नहीं हुई।' कह कर क्लर्क चल दिया।

मालिक—'हमें अपने दफ्तर के लिए एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत है, जो निडर, निर्भीक, साहसी और बहादुर हो। किसी की बात पर ध्यान न धरे। बस, अपनी धुन का पक्का हो। सदा अपने रास्ते चले और किसी रुकावट से न डरे।'

मैनेजर—'जनाब, मैं कल ही एक ऐसा व्यक्ति लेकर आऊंगा, जिसमें ये सब गुण होंगे।'

मालिक—'कौन है वह ?'

मैनेजर—'वह बस का ड्राइवर है और तेज गाड़ी चलाने के अपराध में कई बार पकड़ा जा चुका है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानव-निर्माण के लिए संस्कारों का महत्त्व

—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु के रूप को बदल देना या उसे नया रूप देना। वैदिक संस्कृति में मानव जीवन के लिए १६ संस्कारों का विधान है। जैसे सुनार अशुद्ध सोने है अग्नि में डाल कर उसका संस्कार करता है, वैसे ही बालक के जन्म लेते ही संस्कार करता है, वैसे ही बालक के जन्म लेते ही उसे संस्कारों की अग्नि के द्वारा उसमें दुर्गुणों को निकाल कर सद्गुणों को डालने के प्रयत्न को ही वैदिक विचारधारा में संस्कार कहा गया है।

बालक जब जन्म लेता है, तब अपने साथ दो प्रकार के संस्कार लेकर आता है। एक प्रकार के संस्कार हैं वे जिन्हें वह अपने जन्म जन्मान्तर से साथ लाता है और दूसरे प्रकार के संस्कार ही वे जिन्हें वे अपने माता-पिता से प्राप्त करता है। वे अच्छे भी हो सकते हैं, बुरे भी हो सकते हैं। संस्कारों का प्रयोजन यह है कि बालक को ऐसा परिवेश प्रदान किया जाये जिससे उसमें अच्छे संस्कार पनप सकें और बुरे संस्कार निर्बीज हो जायें। राष्ट्रीय स्तर पर जितनी योजनाएं हम बनाते हैं वे सब भौतिक होती हैं। वैदिक ऋषियों ने संस्कारों की आध्यात्मिक योजना मानव-निर्माण के लिए बनाई है। बांध बांधने, नहरें खोदने या सिचाई के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं मानव निर्माण के अभाव में व्यर्थ हो जाती हैं। यदि सब जगह रेलों का तांता बिछ जाये, मोटरें घर-घर पहुंच जायें और जमीन के हर खण्ड के लिए सिंचाई की व्यवस्था हो जाये तथा उत्पादन में असीम वृद्धि हो जाये, परन्तु इस सब का उपभोग करने वाला मानव बेईमान, दुराचारी और भ्रष्टाचारी हो, तो यह सब समृद्धि किस काम आयेगी ? आज चारों तरफ वैभव जितना बढ़ता जा रहा है, उतना ही मानवता का पतन भी होता जा रहा है।

हमारे कर्म किसी रजिस्टर में नहीं लिखे जाते न वे चित्र गुप्त के बहीखाते में दर्ज होते हैं। कर्म तो अपनी लकीर खींचते चले जाते हैं—जो-लकीर हमारे मस्तिष्क पर पड़ती है। मस्तिष्क में इन रेखाओं के पड़ जाने को मनोवैज्ञानिक परसी नन ने नेमे "Mneme" नाम दिया है। उदाहरण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के लिए बाजार में चलते हुए जब हम अपने एक मित्र को देखते हैं, तब हम उसे पिछले संचित संस्कारों के कारण ही एकदम पहचान लेते हैं। जैसे भोजन के फलस्वरूप शरीर बनता है, वैसे ही कर्म भी हमारा मानसिक भोजन है, जिसके फलस्वरूप हमारे संस्कार बनते हैं। ये संस्कार ही हमारे कर्मों का लेखा हैं।

एक बार कर्म जिस मार्ग पर चल चुका हो, जिसका हल्का-सा भी संस्कार पड़ गया हो, अगली बार उस मार्ग से चलना आसान हो जाता है। धीरे-धीरे वह मार्ग स्वाभाविक हो जाता है। यह स्वभाव क्या है? स्वभाव प्रत्येक कर्म का योगफल है। इस योगफल का नतीजा क्या निकलता है? पहली बार चोर ने डरते-डरते चोरी की थी। उसे भय तो लगा था, परन्तु पकड़ा नहीं गया, इसलिए चोरी करने का संस्कार उसमें पड़ गया। दूसरी बार भय कम लगा, तीसरी बार चोरी दिलेरी से की, चौथी बार पकड़ा गया। इस प्रकार संस्कारों के इस योगफल ने उसको कारागार तक पहुंचा दिया। पहली बार चोरी कर चुकने के बाद न पकड़े जाने पर यह समझना कि हमने चोरी तो कर ली और उसके फल से बच गये, सरासर भूल है। चूंकि अंत में जो काल-कोठरी मिली है वह शुरू में की गयी चोरी का ही संस्कार-दर-संस्कार पड़ते रहने का जोड़ ही जमा हो गया है।

प्रश्न यह है कि ये संस्कार रहते कहां हैं? भौतिकवाद के अनुसार यह कहा जा सकता है कि कर्मों की निशानी या उनकी लकीर हमारे मस्तिष्क पर पड़ती रहती है। परन्तु जो लोग पुनर्जन्म को मानने वाले हैं उनसे यह पूछा जा सकता है कि मरने के बाद मस्तिष्क तो भस्म हो जाता है, फिर उन संस्कारों का निवास कहां होता है?

संस्कार सूक्ष्म शरीर में रहते हैं

भारतीय दर्शन ने स्थूल शरीर के भीतर एक सूक्ष्म शरीर भी माना है। आत्मा अभौतिक है। इसका भौतिक स्थूल शरीर से सीधा सम्बन्ध नहीं होता। माध्यम के तौर पर अभौतिक आत्मा तथा भौतिक शरीर के बीच में सूक्ष्म शरीर आता है। प्रकृति के तत्त्वों से बना होने के कारण यह सूक्ष्म कहलाता है। यह भौतिक भी है और अभौतिक भी। प्रकृति के सूक्ष्म तत्त्वों से बने होने ; ण यह भौतिक के समान है और आत्मा से सीधा सम्बन्ध होने के कारण यह अभौतिक के समान है। जब मस्तिष्क पर पड़ने वाली रेखाएं 'स्वभाव' बन जाती हैं तब वे मस्तिष्क से चल कर सूक्ष्म शरीर में आ पहुंचती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तब हमारे संस्कारों का निवास स्थान मस्तिष्क न रह कर सूक्ष्म शरीर बन जाता है, जो भौतिक देह के मरजाने पर भी नहीं मरता और संस्कारों के सार को अर्थात् हमारे स्वभाव को जन्मजन्मांतर में अपने साथ लिए फिरता है।

सूक्ष्म शरीर की सत्यता में शास्त्रीय प्रमाण तो हैं ही, इसके अलावा यह हम सब के अनुभव का विषय भी है। जब हम सो जाते हैं तब स्वप्न में इस स्थूल शरीर की आंखों के बिना हम देखते हैं, स्थूल शरीर के कानों के बिना हम सुनते है और स्थूल शरीर के पांवों के बिना हम भागते हैं। बिना आंख के देखने वाला, बिना कान के सुनने वाला और बिना पांव के भागने वाला सूक्ष्म शरीर के सिवाय और कोई नहीं है।

वैदिक संस्कृत का कहना है कि आत्मा के इस सूक्ष्म शरीर में जन्म धारण कर लेने के बाद तो संस्कार पड़ते हैं, जन्म लेने से पहले भी जब बालक माता के पेट में होता है, तब भी नये संस्कार डाले जा सकते हैं। वे संस्कार एक तरह के बीज होंगे जो इस जन्म में फूटेंगे। यही संस्कारों की पद्धति का रहस्य है।

पुराने संस्कार बदले जा सकते हैं

वैदिक विचारधारा के अनुसार नव-मानव का निर्माण करने के लिए, उसके जन्म देने से पूर्व जब वह माता के गर्भ में ही होता है, तब उस बालक को जन्म लेने वाले स्त्री-पुरुष अपने विचारों के वेग से उस बालक में नवीन संस्कार डालने का यत्न करते हैं। जैसे बीज के भीतर उसकी रचना में ऐसा परिवर्तन किया जा सकता है कि उससे उत्पन्न होने वाला पौधा उत्कृष्टतर हो, वैसे ही बालक के जन्म लेने से उसके सूक्ष्म शरीर में माता-पिता अपने सबल विचारों द्वारा ऐसा परिवर्तन कर सकते हैं जिससे पुराने संस्कारों को बिल्कुल बदल कर सर्वथा नये मानव का निर्माण किया जा सके। जिस प्रकार के विचार माता-पिता के होंगे उसी प्रकार के स्वभाव वाला बालक उत्पन्न होगा। नव मानव के निर्माण का यह पहला उद्योग है जिसे 'वंश' या 'हेरेडिटी' कह सकते हैं।

दूसरा उद्योग बालक को ऐसे परिवेश से आवृत कर देना है, जिससे उसका हमारी इच्छा के अनुसार समान रूप से विकास होता जाये। इसके लिए अन्य सब संस्कारों की रचना की गयी थी। वैदिक संस्कृति कर्मों के लेख को ऐसा दुर्भेद्य दुर्ग नहीं समझती जिसमें कैद होकर व्यक्ति बाहर ही न निकल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सके या जन्म जन्मांतर तक वह अपने माथे को पीटता ही रहे। अगर वैदिक धर्म कर्मों की दीवार को अभेद्य समझता और यह मानता कि एक-एक कर्म का जब तक पूरा भोग नहीं कर लिया जाता तब तक आगे नहीं बढ़ा जा सकता, तो संस्कारों की यह पद्धति कभी प्रचलित नहीं होती। कर्म भोगे जाते हैं परन्तु संस्कारों के रूप में और इसी लिए संस्कार द्वारा उन्हें बदला भी जा सकता है। माता-पिता के संस्कार भी कर्मों के एक लम्बे-चौड़े चक्र में पड़ कर बने होते हैं। उन्होंने अनेक कर्म किये, अच्छे भी—बुरे भी। उन सब से उनके संस्कार बने, उनकी रुचि बनी, प्रवृत्ति बनी, जीवन की दिशा बनी। संस्कार-परम्परा के द्वारा माता-पिता से आशा की जाती है कि जब वे किसी नवीन जीव का आह्वान करें तब वे अपने संस्कार ऐसे प्रबल और सशक्त बनायें जिससे वे अपनी संतति को अपने विचारों द्वारा प्रभावित करके सुपथ पर चला सकें। एक-एक व्यक्ति अपने प्रयत्नों और संस्कारों से दूसरे के संस्कारों को बदल सकता है। इसी में संस्कार-पद्धति द्वारा मानव के नव निर्माण का रहस्य छिपा हुआ है।

हम क्योंकि पुनर्जन्म को मानते हैं और यह मानते हैं कि आत्मा जन्म-जन्मांतर से कर्मों के बोझ को उठाये फिरती है इसलिए विभिन्न जन्मों के कर्मों को इस एक जन्म के संस्कारों से कैसे प्रभावित किया जाता है—इस शंका का समाधान करने के लिए हमें यह सब लिखने की आवश्यकता हुई। परन्तु जो लोग पुनर्जन्म को, जन्म-जन्मांतर को या कर्मों के बखेड़े को नहीं मानते और इसी जन्म से शुरू करके इसी जन्म में सब-कुछ समाप्त कर देते हैं, उनके लिए सारी समस्या बहुत सरल है। उनके लिए वंश या हेरेडिटी और सामाजिक परिवेश मात्र ही रह जाता है। अर्थात् माता-पिता के जैसे संस्कार होंगे और जैसी परिस्थिति में बच्चे रखे जायेंगे, वे वैसे ही बनते चले जायगे। इसीलिए वे लोग भौतिक परिस्थिति के सुधार पर जितना जोर देते हैं, उतना अन्य किसी चीज पर नहीं। यह ठीक है कि समाज के नव-निर्माण के लिए नये समाज की रचना करनी होगी परन्तु समाज तब बदलेगा जब एक-एक मनुष्य बदलेगा। और एक-एक मनुष्य तब बदलेगा, जब उसके निर्माण के लिए पहले से नक्शा बनाकर उसके हिसाब से निर्माण किया जायेगा। जैसे मकान जब बनाया जाता है तब मकान बनाने से पहले उसकी पूरी रूपरेखा बना ली जाती है और उसके बाद उसी के अनुसार एक-एक ईंट चिन-चिन कर रखी जाती है। वैसे ही जब पहले मानव के निर्माण की रूपरेखा बनेगी और उस रूपरेखा के अनुसार उसकी रचना होगी, तभी यह सदा विकासमान एक नया संसार होगा। अब तक संसार में जितनी भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृतियां हुई हैं, उनमें से वैदिक संस्कृति के कर्णधारों ने ही मानव के रूपान्पान्तरण का स्वप्न लिया था और उस रूपान्तरण के लिए संस्कारों की पद्धति को जन्म दिया था।

मनुष्य में आमूलचूल परिवर्तन करने के लिए ही वैदिक धर्म ने १६ संस्कारों का विधान किया है, जिनमें से कुछ बालक के जन्म धारण करने के पहले से शुरू हो जाते हैं और कुछ जन्म ग्रहण करने के बाद। जन्म ग्रहण करने से पहले किये जाने वाले संस्कारों में सब से पहला संस्कार 'गर्भाधान' है, जिसे आज का जड़वादी जगत् भोग का साधन मात्र समझता है किन्तु वैदिक ऋषि उसे नवीन आत्मा के आह्वान का एक पवित्र यज्ञ मानते थे।

संस्कार पद्धति का ध्येय मानव का ही रूपान्तरण नहीं, बल्कि मानव के रूपान्तरण द्वारा हर दशक के बाद पूरे युग को ही बदल देना था। आज जो बच्चे जन्म लेते हैं, २० वर्ष बाद वे युवा हो जाने वाले हैं, वे जैसे होंगे वैसा ही युग होगा। अगर संस्कार-पद्धति के रहस्य को समझ कर हम माता-पिता यह प्रण कर लें कि वे अपनी संतान में ऐसे संस्कारों का आधान करेंगे जिससे वे हर दृष्टि से अपने माता-पिता से उत्कृष्ट कोटि के हों, तो हर २०-२५ साल के बाद एक नयी पीढ़ी का और एक नये युग जा आगमन होगा। माता-पिता के पतनोन्मुख संस्कारों में पली हुई नई पीढ़ी के संस्कारों के कारण ही आज हर २० साल के बाद संसार में विषयलोलुपता, स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार की बाढ़ आयी हुई हैं। अगर भावी पीढ़ी के निर्माता इन्हीं संस्कारों की दिशा को उर्ध्वगामी बना दें, तो हर २०वें साल समाज का धरातल ऊपर-ऊपर बढ़ता चला जाये। □

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में सहयोग दीजिए। अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइए।

आज ही ५०१ रुपया भेजिए।

यह मेरी प्रार्थना है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आह्वान

जगो वीर हिन्दुओं, जागो भारत माता के रखवालो
देशद्रोहियों-गद्दारों का मूलोच्छेद अब कर ही डालो ।।

अखण्डता पर चोट नित नये
आज कर रहे यवन-ईसाई,
कटती गौवें मंदिर गिरता
घूम रहे निर्भीक कसाई,

छिपे कहां हैं शत्रु देखो ढूंढ़ निकालो,
देशद्रोहियों-गद्दारों का मूलोच्छेद अब कर ही डालो ।।

आज मिटाने की है साजिश
हिन्दू सभ्यता और संस्कृति को,
दिए जा रहे नाम मुगलिया
प्राचीन भारतीय कृति को,

सांपों को अब से न कभी आस्तीन में पालो,
देशद्रोहियों-गद्दारों का मूलोच्छेद अब कर ही डालो ।।

दंगो से सड़कें सूनी हैं
जलती हैं अनगिन ललनाएं,
फैल रहा आतंकवाद अब
सहमी-सहमी हुई दिशाएं,

करो तांडव शिव-सा प्रलयंकारी त्रिशूल सम्भाले,
देशद्रोहियों-गद्दारों का मूलोच्छेद अब कर ही डालो ।।

जुल्म हो रहे राष्ट्रभक्तों पर
वतनफरोशों की चांदी है,
देश-धर्म पर कहर के बादल,
हिन्दुत्व पर आग्नेय आंधी है,

क्रांति करो, हुंकार भरो, रिपुदल को संगीनों से उछालो,
देशद्रोहियों-गद्दारों का मूलोच्छेद अब कर ही डालो ।।

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज राम और कृष्ण शिवा
दयानन्द प्रताप की शक्ति जागे,
जागे देश का हिन्दू-हिन्दू,
काली-दुर्गा रणचण्डी जागे,
पार्थसारथी बनो, चलो अब चक्र सुदर्शन आप उठालो,
देश द्रोहियों-गद्दारों का मूलोच्छेद अब कर ही डालो।

संकल्प

चंद गुस्ताख हवाओं से टकराना है,
जोर अब बाजुए कातिल को दिखलाना है।
रहे न एक भी अब नाग वतन में अपने,
जहर के दांतों को जड़-मूल से मिटाना है।
हमारी बिल्ली जो हमीं से म्याऊं करती है,
उसे भी असली मुकाम तक पहुंचाना है।
वतन की शान में गुस्ताख लफ़्ज़ निकले तो,
जुबान खींच कर गद्दारों को दिखाना है।
यहां की धरती हवा पानी सबका सेवन कर,
रहे यहां तो बस यहीं के हीं गुण गाना है।
अब भी है जाग रही भगवती तलवार वही,
अभी प्रताप के भालों का फल दिखाना है।
वेद-गीता और गंगा को बचाने के लिए,
सभी आततायियों का सर कुचलते जाना है।
लाख तुम छिपके रहो पर न बचोगे सुन लो,
हिन्द के दुश्मनो, दोजख में तुमको जाना है।

—बृजकिशोर 'अश्क'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषाई विवाद खड़ा न करे

—बृजकिशोर अश्क

एक बार फिर उर्दू के मुहाफिज भाषा की आड़ में साम्प्रदायिकता की आग जलाकर अपने स्वार्थ की रोटी सेकने के लिए सक्रिय हो उठे हैं। कभी उत्तर में हिन्दी का विरोध कर अकाली दल वाले अपनी राजनीति का घोड़ा दौड़ाते हैं तो कभी दक्षिण में द्रविण मुनेत्र कड़गम् द्वारा हिन्दी विरोध की पृष्ठ भूमि में भाषाइ भावनाओं को उभार कर पार्टी को मजबूत हथकंडा अपनाया जाता है। देश भर में तरह-तरह से हिन्दी विरोध की आड़ में अपने प्रभाव को स्थापित करने की स्पर्धा में उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम सभी क्षेत्रों के कथित नेता सम्मिलित रहे हैं। कहने का मतलब यह कि भाषा विवाद को खड़ा कर कुछ लोग ऐसा तनाव पैदा करना चाहते हैं जिसकी दरार से गुजर कर वे महत्त्वाकांक्षा की घाटी में पहुंच जायें।

विगत् ३० मई को उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ में हिन्दी पत्रकारिता दिवस के अवसर पर खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री प्रो०वासुदेव सिंह ने जब यह कहा कि "संविधान की धारा ३४५ के अनुसार अगर कोई प्रदेश अपनी प्रांतीय भाषा को सरकारी जबान बनाले तो उसे हक नहीं रह जाता है कि किसी और भाषा को दूसरी राजभाषा का दर्जा दे।"

इस पर कुछ उर्दू अखबारों ने सत्य से परे हट कर यह हल्ला मचाया कि प्रो. वासुदेव सिंह उर्दू के विरोध में अ-र्गल प्रलाप कर रहे हैं। उर्दू के दुश्मन हैं। एक उर्दू के अखबार ने लिखा कि वासुदेव सिंह ने कहा है कि "जो लोग राज्य में उर्दू को दूसरी सरकारी जबान बनाए जाने की मांग कर रहे हैं, उनका मुंह काला कर के सड़कों पर घुमाया जाये, और जो सरकारी कर्मचारी इस तरह की मांग कर रहे हैं उन्हें कान पकड़ कर नौकरियों से निकाल बाहर किया जाना चाहिए।"

उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी की अध्यक्ष बेगम हबीबुल्ला समेत लगभग ग्यारह पदाधिकारियों ने प्रो. वासुदेव सिंह के वक्तव्य के विरोध में अपना इस्तीफा दे दिया। इतना ही नहीं श्री आनन्द नारायण मुल्ला की अध्यक्षता में एक संघर्ष समिति का भी गठन कर डाला गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रो० वासुदेव सिंह जैसा प्रबुद्ध एवं जिम्मेवार व्यक्ति खुले मंच से उर्दू के विरुद्ध ऐसा भाषण दे सकता है (जैसाकि अकादमी वाले कहते है) यह बात किसी व्यक्ति के गले के नीचे उत्तर ही नहीं सकती और न ही इस संदर्भ में कोई प्रमाण ही सामने आया है। परन्तु उत्तर प्रदेश में घटित होने वाली इस छोटी-सी विवादास्पद घटना को पटना के एक उर्दू अखबार अजीमाबाद एक्सप्रेस ने उभारा। अपने सम्पादकीय में उक्त अखबार ने उर्दू अकादमी वालों के इस्तीफे का समर्थन करते हुए भड़काने वाले अंदाज में लिखा कि "यह कहना पड़ेगा कि उर्दू वालों की गैरत अभी खत्म नहीं हुई। उनकी आंख का पानी नहीं भरा है। उर्दू के दुश्मन प्रो० वासुदेव सिंह के उर्दू विरोधी और हतक भरे वचन पर उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी के चेयरमैन और सचिव सहित कार्यकारी समिति के सभी सदस्यों ने राज्य के मुख्यमंत्री को अपने इस्तीफे दे दिए हैं।"

देश या विदेश में घटित होने वाली प्रत्येक घटना पर उर्दू अखबारों का अपना एक अलग हीं नजरिया होता है जो कम से कम पूर्ण राष्ट्रीयता से ओतप्रोत तो नहीं ही होता है।

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि हिन्दी पत्रकारिता दिवस से चार दिन पूर्व उर्दू अकादमी की अध्यक्षता बेगम हबीबुल्ला का एक बयान अखबारों में आया था कि उर्दू को उत्तर प्रदेश की दूसरी राजभाषा का दर्जा दिया जाये। प्रो० वासुदेव सिंह ने सम्भवतः इसी बयान पर यह कहा था कि "उर्दू अकादमी एक सरकारी संगठन है जिसके पदाधिकारी सरकार से वेतन और सुविधाएं पाते हैं। इस कारण ऐसे लोगों को इस तरह के मुद्दे नहीं उठाने चाहिए।"

लखनऊ में आयोजित 'कौमी जिन्दगी और अदब की समस्याएं' विषय पर बोलते हुए ख्वाजा अहमद अब्बास ने उर्दू की तुलना पर से निकली एक ऐसी औरत से की जिसे उत्तर प्रदेश, बिहार पंजाब, कश्मीर कहीं भी कोई पनाह देने वाला नहीं था और अपनी इस विवशता के कारण उर्दू पाकिस्तान की सीमा पर अपना हाथ फैलाकर खड़ी है।" जब ख्वाजा अहमद अब्बास जैसा जिम्मेदार व्यक्ति ऐसी बात कह सकता है, तो सामान्य व्यक्तियों के बारे में क्या गारंटी दी जा सकती है कि वे नहीं बहकेंगे। भारत में उर्दू को जितनी प्राथमिकता और सुविधाएं दी जा रही हैं वे अपेक्षा से कम नहीं। फिर भी उर्दू के प्रश्न को तोड़-मरोड़ कर अपना उल्लू सीधा कर लेने की प्रायः होड़-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ी लगी है। ख्वाजा अहमद अब्बास साहब के इस भड़काऊ उद्बोधन पर
ाहौल खराब हो गया था, जिसे अध्यक्ष अमृतलाल नागर ने अपने सद्भावना
ूर्ण वक्तव्य से सयत और शांत किया।

उर्दू को प्राथमिकता दिलवाने के प्रश्न को लेकर २२ मई १९५१ को अखिल भारतीय अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू के अध्यक्ष डा० जाकिर हुसैन के ेतृत्व में सात सदस्यों का एक प्रतिनिधिमण्डल उत्तर प्रदेश के तत्कालीन शिक्षा मंत्री डा० सम्पूर्णानन्द से मिला था और इस विषय पर वार्ता की थी। ्रतिनिधि मण्डल ने कुछ व्यक्तियों के हस्ताक्षर भी दिये। ज्ञापन में कहा गया था कि बच्चों को उर्दू में शिक्षा दी जाए। बाद में सन् १९५९ में विधान परिषद् में ए० जे० फरीदी ने उर्दू को मान्यता दिलवाने के लिए एक गैर-सरकारी विधेयक विधान परिषद् में विचार के लिए प्रस्तुत किया जो नौ के मुकाबले बाईस मतों से विचार के लिए अस्वीकृत हो गया। लेकिन इसके बावजूद उर्दू का निरन्तर विस्तार और विकास होता रहा।

सन् १९५३ में अंजुमन तरक्की ए-उर्दू के प्रतिनिधि मण्डल तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद से मिलकर जो ज्ञापन दिया था, उसमें की गई ग्यारह मांगों में से अधिकतर मानी जा चुकी हैं। उर्दू को अन्य सुविधायें भी मिल रही हैं। फिर यह प्रो० वासुदेव सिंह के वक्तव्य का बहाना बना कर हो हल्ला करने की आवश्यकता उर्दू अकादमी को क्यों पड़ी? प्रो० वासुदेव सिंह के विवादास्पद वक्तव्य को उछालने वाले कितने धरातलहीन हैं यह इस बात से पता चलता है कि किसी ने उक्त समारोह के अध्यक्ष से इस सौंदर्य में जानने की आवश्यता ही महसूस नहीं की। हिन्दी पत्रकारिता दिवस समारोह के अध्यक्ष का यह कथन उर्दू के नाम पर तूफान खड़ा करने वालों की पोल खोल देता है कि "उर्दू अकादमी के सदस्य या बयानबादी करने वाले लेखक वर्ग ने मुझसे एक बार भी यह मानने का प्रयास नहीं किया कि क्या वासुदेव सिंह ने वैसा भाषण दिया था (जैसा कि वे सब लोग कहते हैं)।

इस मुद्दे पर अखबारों की राय है कि उस समय (जब विधान सभा में उर्दू विधेयक का विरोध हुआ था) इस्तीफे इसलिए नहीं दिए गये क्योंकि पदाधिकारियों की कार्यविधि तब लम्बी थी अर्थात् उन्हें अभी कुछ वर्षों तक पद पर बने रहना था। अब इस्तीफे इसलिए पेश कर दिए गए कि पदाधिकारियों का कार्यकाल शीघ्र ही समाप्त हो रहा था और सम्भवतः उर्दू अकादमी को पठन-पाठन पर खर्च करने के लिए प्राप्त लगभग २३ लाख रुपये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिकारियों की बन्दरबांट में समाप्त भी हो गये थे। इस कारण इन समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए तथा इससे अपनी गोटी लाल करने के लिए बिना बात की बात पैदा कर दी गई।

सन् १९५० में उत्तर प्रदेश विधान मंडल ने संविधान के अनुच्छेद ३४५ के अन्तर्गत, जिसमें यह कहा गया है कि "राज्य के राजकीय प्रयोजनों में से सब या किसी एक के लिए राज्य में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अनेक को या हिन्दी को अपनाया जा सकता है।" हिन्दी को देवनागरी लिपि अपना लिया तो भाषा संबन्धी विवाद रह ही कहां गया। इसके बावजूद भाषा विवाद खड़ा करना भाषाई एकता पर कुठाराघात नहीं तो और क्या है ?

संविधान के अनुच्छेद ३४७ में ३४५ को ही मजबूत करने के लिए भाषा संबन्धी निर्णय के लिए निम्नलिखित व्यवस्था है "तद विषयक मांग किए जाने पर यदि राष्ट्रपति का समाधान हो जाये कि किसी राज्य के जनसमुदाय का पर्याप्त जन अनुपात चाहता है कि उसके द्वारा बोले जाने वाली किसी भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाये तो वह निर्देश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को उस राज्य में सर्वत्र अथवा उसके किसी भाग में इस्तेमाल के लिए जैसा वह उल्लिखित करे मान्यता (राजकीय) दी जाये।"

उपरोक्त कथन में पर्याप्त जन अनुपात एक महत्त्वपूर्ण शब्द है जिसकी कसौटी तैयार करने के लिए सन् १९८१ के अगस्त में मुख्य मंत्रियों एवं केन्द्रीय मंत्रियों की एक बैठक हुई जिसमें कुछ ठोस निर्णय लिए गए। उसके अनुसार" कोई राज्य उस स्थिति में एक भाषी माना जायेगा (जाता है) जब वहां के लगभग ६० प्रतिशत या उससे ज्यादा जनसंख्या एक ही भाषा बोलती है और यदि उस राज्य में अल्प संख्यकों की संख्या ३० प्रतिशत या ज्यादा है तो उसे द्विभाषी राज्य माना जायेगा। जिलों में यदि ६० प्रतिशत जनसंख्या उस राज्य की राज भाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा बोलती है या व्यवहार करती है तो उस भाषा को जिले में अतिरिक्त सरकारी भाषा की मान्यता प्रदान की जा सकेगी।"

यहां उल्लेखनीय है कि उक्त सिफारिशों के अनुसार द्वितीय राज भाषा के लिए उत्तर प्रदेश उर्दू बोलने वालों की संख्या ३० प्रतिशत या किसी जिले में ६० प्रतिशत होनी चाहिए। परन्तु विगत जनगणना के अनुसार राज्य भर में केवल १० प्रतिशत लोगों ने उर्दू को अपनी महाभाषा स्वीकार किया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

। इतना ही नहीं, तीन-चार जिलों को छोड़कर (अधिकतम जनसंख्या २० श. से ३२ प्र. श.) बाकी सभी जिलों में उर्दू भाषी ५ प्र. श. से कम । इस तरह उत्तर प्रदेश राज्य में या किसी जिले में भी उक्त सिफारिशें गू हो ही नहीं सकतीं । फिर उर्दू को द्वितीय राज भाषा का दर्जा दिलाने नाम पर यह ताम-झाम और बखेड़ा सर्वथा निन्दनीय एवं भाषाई एकता विरुद्ध है ।

इसके बावजूद सरकार उर्दू को हर तरह से सुविधाएं प्रदान कर ही नही । रेडियों से लेकर टी० वी० तक, बुलेटिन से लेकर पत्रिकाओं तक और ड़क से लेकर संसद् तक सर्वत्र उर्दू में कार्य हो रहे हैं और इसका विस्तार हो हा है ।

प्रो० वासुदेव सिंह को मुद्दा बनाकर उर्दू समर्थन और विस्तार को आड़ भाषाई विवाद एवं वैचारिक विद्वेष की नींव डालकर उस पर अपने स्वप्न हल खड़े करने वालों से न सिर्फ प्रशासन वरन् आम शान्तिप्रिय नागरिकों भी सतर्क रहने की आवश्यकता है । हमारे समक्ष उपस्थित इतिहास के ठ कह रहे हैं कि भाषा विवाद ने हमें दारुण कष्ट दिया है ।□

हिन्दू राष्ट्र के सजग प्रहरी

जन-ज्ञान मासिक का नमूना

मुफ्त मंगाएं

केवल ५० पैसे का डाक टिकट भेजकर

१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौल बाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना ।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ॥
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिमुर तिह पूरन होवहिं काम ॥
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ॥
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल ॥
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार ।
कह नानक थिर कुछ नहिं सुपने जियुं संसार ॥
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियुं जात ।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ।
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की ।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयो धन की ॥
संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ ।
कहु नानक एहू विपत में टेक एक रघुनाथ ॥

—श्री गुरु नानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है ।
ते सब नरक कुंड महिं परि है ॥

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, वालकेश्वर मार्ग, तीनबत्ती, बम्बई-४००००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी०टी ५. वरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, वांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने सांताक्रुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड
बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या तेजमहालय ही ताजमहल है ?

—स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती

लखनऊ के संग्रहालय में सुरक्षित 'बटेश्वर शिलालेख' जो आगरा के पास बटेश्वर नामक स्थान पर एक स्तूप की खुदाई में जनरल कनिंघम को १९०० ई० में प्राप्त हुआ था के ३४ श्लोकों में यमुना तट पर दो राजमन्दिरों—विष्णुप्रासाद और तेजमहालय (चन्द्रमुकुटधारी भगवान् शिव का मन्दिर) का उल्लेख है। उक्त शिलालेख के श्लोक संख्या २५, २६, और ३४ विशेष हैं, शेष श्लोकों में चन्द्रात्रेय (चन्देल) वशीय राजाओं का यमूनेगान है।

'राजा परमादिदेव द्वारा निर्मित तेजमहालय'

चन्देल राजा परमार्दिदेव ११६५ ई० तक आगरा सहित विस्तृत भूभाग पर शासन करता था। श्लोक २६ के अनुसार—

'अकारयच्च स्फटिकावदातं सावित मन्दिरमिंदुः मौलेः।
न जातु यस्मिन्नवसन्स देवः कैलाश वासाय चकार चेतः।

अर्थात् उस राजा (परमादिदेव) ने चन्द्रमुकुटधारी भगवान् शिव की आराधना हेतु स्फटिक श्वेत प्रस्तर (संगमरमर) का एक अन्य मन्दिर बनाया। उस मन्दिर (तेजमहालय) में प्रतिष्ठित होने के बाद अत्यधिक प्रसन्न शिवजी महाराज ने अपने स्थायी निवास कैलाश पर जाना स्थगित कर दिया।

तेजमहालय की सजावट में विशाल स्वस्तिक ओ३म्, कमल, बेल-बूटों आदि अलंकरणों का प्रयोग किया गया है। प्रवेश द्वार दक्षिणाभिमुखी है। सुरक्षा हेतु किलेबंदी, खाई, संकटकालीन गुप्त मार्ग है।

पक्ष पक्ष मुखादित्य संख्ये विक्रम वत्सरे।
अश्विनी शुक्ल पंचस्यां वासरे वासवे शितुः (३४)।

अर्थात् यह शिलालेख आश्विनी शुक्ल पंचमी रविवार सं० १२१२ का है। तेजमहालय ११५५ ई० में बनकर तैयार हुआ था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहलोल लोदी का तेजमहालय-आवास

सत्ता संघर्ष में राजा परमादिदेव के उत्तराधिकारी तेजमहालय पर अपना अधिकार न रख सके। लोदी वंश संस्थापक बहलोल लोदी ने तेजमहालय को अपना आवास बताया।

मुगलवंश संस्थापक बाबर लिखता है कि "१० मई" १५२६ ई० की दोपहर को मैंने आगरा में प्रवेश किया तथा लाल पत्थरों के किलेदार सफद पत्थरों के आलीशान इब्राहीम लोदी के राजप्रासाद में अपना डेरा डाला एवं निवास बनाया और यहीं से मैंने जंग जीती।"

"ईद के कुछ दिनों बाद अर्थात् ११ जुलाई १५२६ को इब्राहीम लोदी के राजभवन में जो विशाल गुम्बदयुक्त (मुख्य ताजभवन) जो केवल सफेद पत्थरों का बना है... में एक विशाल भोज का आयोजन किया था।"

इब्राहीम लोदी से तेजमहालय बाबर के हाथ में आया

बाबर ने पानीपत के युद्ध में इब्राहीम लोदी को हटाकर दिल्ली, आगरा आदि पर अधिकार जमाया और तेजमहालय को विजयोपरान्त प्राप्त किया।

तेजमहालय हुमायूं के हाथ में

बाबर की पुत्री गुलबदन अपने संस्मरण में (पृष्ठ १०९ व ११० पर) लिखती है कि मेरे अब्बाजान बाबर की मृत्यु २६ दिसम्बर १५३० को हिन्दुस्तान के आगरा स्थित यमुना तटीय सफेद पत्थरों से बने विशाल गुम्बद वाले भवन में हो गई और उनकी मृत्यु को तब तक गुप्त रखा गया जब तक भाई हुमायूं राजसिंहासनासीन न बना। ३० दिसम्बर १५३० को हुमायूं गद्दीनशीन हुए तब शव काबुल ले जाया गया।

पूर्व अधिग्रहणकर्ता जयपुराधीश के हाथ में

तेजमहालय कुछ दिनों हुमायूं के अधिकार में रहने के बाद पूर्व अधिग्रहणकर्त्ता जयपुराधीशों के हाथ में आ गया। उन्होंने इसे पुनः राजमन्दिर का पूर्व स्वरूप प्रदान किया और 'राजा मानसिंह का राजमन्दिर' के नाम से विख्यात हुआ। बाद में राजा जयसिंह के अधिकार से शाहजहां के हाथ में आया।

शाहजहां द्वारा तेजमहालय के नाम ताजमहल प्रसिद्ध हुआ

शाहजहां की एक बेगम का देहान्त ७ जून १६२९ को हुआ, जो आगरा में ६०० मील दूर बुरहानपुर में दफनाई जा चुकी थी। उसकी याद में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तेजमहालय को शाहजहां की यादगार के रूप में प्राप्त करने के बारे में सोचने लगा। बीस वर्ष वाद तेजमहालय में नकली कब्र बनाकर उसका नाम ताज-महल प्रसिद्ध किया गया।

फ्रांस का जौहरी जॉन बौप्टिस्ट टैवर्नियर १६४८ ई० में भारत आया और १६६८ ई० तक रहा। उसकी पुस्तक "ट्रैवेल्स इन इण्डिया" के भाग-१ पृष्ठ १०६-१११ पर लिखा है कि "आगरा की समस्त इमारतें, जिन्हें लोग देखने आते हैं...जैसा कि बताया गया है कि यह शाहजहां की वेगम मुमताज

जिस "तेजमहालय" का जन्म ११५५ ई० में हुआ, वह ४९४ वर्षों के काल में विभिन्न नाम पाता हुआ १६४९ ई० में ताजमहल के रूप में मकबरा बना। इतिहास में इस भौतिक संस्कृति का नाम अमर है।

की कब्र पर बन रहा है। यद्यपि निर्माण कार्य अभी पूर्णस्वरूप से प्रारम्भ नहीं हुआ है, किन्तु होने जा रहा है। यह निर्माण कार्य किसी पूर्वनिमत इमारत पर अंश परिवर्तन के रूप में चल रहा है। शायद यह राजभवन हो सकता है मुमताज की कब्र पर कार्य कुछ चलकर समाप्त होने की सम्भावना है। पूछने पर मुझे बताया गया कि ताज में कुल व्यय से मचान में कई गुना व्यय हुआ। मैंने ताज स्मारक पर अंश परिवर्तन-कार्य का प्रारम्भ एवं अन्त अपनी आंखों से देखा है।

अब्दुल हमीद लाहौरी ने बादशाहनामा भाग-२ पृष्ठ ७१७ पर लिखा है कि सम्पूर्ण योजना ४० लाख रुपए की थी, जिसमें ५ लाख रुपये कब्र खुदाने में तथा ३५ लाख रुपये कुरान शरीफ की आयतें खुदाने में व्यय हुआ (मचानों के व्यय सहित)।

शाहजहां बादशाहनामा भाग-१ पृष्ठ ४०२-४०३ पर लिखा है कि "शव बुरहानपुर की कब्र से निकालकर आगरा लाया गया और हुक्म दिया गया कि प्रतिदिन शवयात्रा में असंख्य रुपए और मोहरें फकीरों और निर्धनों में बांटे जायें और उस महान् नगर के दक्षिण में एक भव्य सुन्दर हरे-भरे बागों से घिरी हुई इमारत में जो आजतक राजा मानसिंह का राजमन्दिर कहलाता था और वर्तमान में राजा जयसिंह के अधिकार में था—जो राजा मानसिंह का पौत्र है—वह इमारत उस मलका को दफनाने के लिए चुनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
गई जो अब स्वर्ग में है। यद्यपि राजा मानसिंह अपने पूर्वजों की उस संपत्ति बागों वाले राजमन्दिर को बहुत ही कीमती मानता था, तब भी राजा जयसिंह शाही काम के लिए निःशुल्क दे देगा। इस भव्य राजमन्दिर के बदले में राजा जयसिंह को 'शरीफाबाद' दिया गया। शाही हुक्मनामे के अनुसार नगर के अधिकारियों द्वारा गगनचुम्बी मकबरे के नीचे (वह शव) दफना दिया गया। (अब वह ताजमहल बन गया था)।

क्या आपको योग्य और संस्कारवान् वर-वधु की तलाश है ?

यदि हां तो जन-ज्ञान (मासिक) में विज्ञापन दीजिए

केवल २१ रु० की दक्षिणा के साथ अपना विज्ञापन लिख भेजिये और फिर देखिये सही वर-वधु की आपकी तलाश कितनी जल्दी पूरी होती है।

विज्ञापन व्यवस्थापक जन-ज्ञान (मासिक)
१५६७, हरध्यानसिंह रोड करौल बाग, नई दिल्ली-५

योग्य वर चाहिए

२६ वर्षीय, सुन्दर स्वस्थ गौरवर्ण, कद ५ फुट ३॥ इन्च, इकहरा बदन, एम० ए० (संस्कृत), बी० एड० टीचर कन्या के लिए सेवारत, स्वस्थ सदाचारी शाकाहारी योग्य वर चाहिए। पत्रव्यवपार का पता—रामनारायण गुप्त, रिटायर्ड हैडमास्टर, डडवाड़ा, कोटा जंकशन, कोटा (राजस्थान)

२५ वर्षीय, कद ५ फुट, बी० एस-सी' बी० एड०, बैंक में सर्विस, वेतन १००० रु० मासिक, कन्या के लिए सुशिक्षित शाकाहारी योग्य वर चाहिए। जाति बन्धन नहीं। पत्रव्यवहार का पता—श्री मदन मोहन, चीफ बुकिंग अफसर, रेलवे स्टेशन, करतार पुर (जिला जालन्धर)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र जीवन में आर्य तत्त्व के प्रतिष्ठाता—महर्षि दयानन्द

—योगिराज अरविंद

भावी पीढ़ियों की आंखों में जो महान् आकृतियां भारतीय पुनरुज्जीवन में चोटीपर दिखालायी देंगी, उनकी महान् संगति में एक अपने-आप विशेष और ऐकान्तिक प्रतिष्ठा के साथ अलग-अलग खड़ा दिखलाई देता है। वह अपने प्रारूप में और साथ ही अपने कार्य में अनोखा और अनन्य है। यह ऐसा है मानो हम लंबे समय तक कम या ज्यादा ऊंचाइयों तक उठती हुई पर्वत-शृंखला-के बीच चलते रहें, सभी में मंत्र मुग्ध करने वाली गिरती-उभरती रेखायें हैं जो अपने हरित परिधान में अपनी सबसे अधिक सुस्पष्ट और प्रभावशाली ऊंचाइयों में आंखों को मोहित करती हैं। लेकिन उन सब के बीच एक पहाड़ी अपने विशुद्ध बल में अलग-थलग खड़ी है, एक नग्न और शक्तिशाली ग्रेनाइट की राशि। उसके शिखर पर हरियाली है, एकाकी देवदारु नील नभ में उभर रहा है, शुद्ध, ओजभरा, उर्वर जल-प्रपात उसके बल में से, स्वयं जीवन और स्वास्थ्य के झरने की तरह घाटी में फूट निकला है। मेरे मन पर दयानन्द का ऐसा संस्कार बनता है।

इस सशक्त पुनरुद्धारक और नवसर्जक को काठियावाड़ ने जन्म दिया था और उस भूमि विशेष की आत्मा और उसका स्वभाव, गिरनार और अन्य पहाड़ियों और चट्टानों का कुछ अंश उन तटों पर टकराने वाले सागर के शब्द और उसकी शक्ति का कोई भाग और उस मानवजाति की कोई चीज जो प्रकृति की अछूती और अविकृत सामग्री से बनी हुई मालूम होती है, जो शरीर में सुन्दर और बलवान् है, जिसमें ताजी आदिम ओजस्विता भरी है, जो अनगढ़ तो है पर अपने विकसित स्वभाव में प्रसन्न वदन सृष्टि की महान् शक्ति बनने योग्य है, उसकी आत्मा और उसके स्वभाव का कुछ अंश दयानन्द की आत्मा में प्रवेश कर रहा था।

जब मैं अपने-आपको अपने मनोभाव का हिसाब देना चाहता हूं और अपने प्राप्त किये हुए संस्कार को ठीक रूप देना चाहता हूं तो मैं अपने-आपको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस पुरुष के जीवन और कार्य की दो प्रमुख विशेषताओं से आरंभ करता हुआ पाता हूं जो इसे अपने समकालीन और समकक्ष लोगों से एकदम अलग चिह्नित कर देती हैं। अन्य महान् भारतीयों ने जाति की मनोवैज्ञानिक सामग्री में अपने-आपको उंडेलकर, प्रवाही, अनियमित जनसमूह की राशि में अपना आध्यात्मिक संयोजन कर दिया जो एक दिन गाढ़ा होकर जम जायेगा और प्रकृति के एक महान् विधिवत् जन्म के रूप में दीखेगा। वे एक प्रकार के खमीर के रूप में, एक अस्पष्ट-से आंदोलन की शक्ति और जामन के रूप में प्रविष्ट हुए जिसके परिणामस्वरूप कुछ रूप निकलने चाहिए। हम उन्हें महान् आत्माओं और महान् प्रभावों के रूप में याद रखते हैं जो भारत की आत्मा में निवास करते हैं। वे हमारे अन्दर हैं और उनके बिना हम वह न होते जो आज हैं। लेकिन हम किसी ठीक-ठीक रूप के बारे में यह नहीं कह सकते कि उस आदमी का यह मतलब था, यह तो और भी नहीं कि यह रूप उस आत्मा का ठीक-ठीक शरीर था।

एक विशाल और जटिल निर्माण काल के लिए ठीक इसी प्रकार के इतने अधिक आवश्यक काम के उदाहरणस्वरूप महादेव गोविन्द राणडे मेरे मनके आगे उपस्थित होते हैं। अगर कोई विदेशी हम से पूछे कि मराठा अर्थशास्त्री, सुधारक, देशप्रेमी ने ठीक-ठीक ऐसा कौन-सा काम किया था कि हम उसे अपनी स्मृति में इतना ऊंचा स्थान देते हैं तो जवाब देने में हमें कुछ कठिनाई होगी। हमें जन साधारण के उन क्रिया कलापों की ओर इशारा करना पड़ेगा जिनमें उसकी आत्मा और उन विचार वस्तुओं के अरूप निर्माता के रूप में उपस्थित थे, आज के भारतीय जन-जीवन के उन महान् व्यक्तियों की ओर इशारा करना पड़ेगा जिन्होंने उसी आत्मा का श्वास पाया था और अंत में हमें यह उल्टा प्रश्न करना होगा, "महादेव गोविन्द राणड़े के बिना आजका महाराष्ट्र क्या होता और महाराष्ट्र के बिना आजका भारत क्या होता और वस्तुओं पर अपने दबाव में कम अनाकार और विसरशील थे, अधिक स्पष्ट ऊर्जा और क्रियावाले कार्यकर्ताओं के साथ भी में मौलिक रूप से इसी संस्कार तक पहुंचता हूं। अगर दुनिया में कोई भी सामर्थ्यवान् व्यक्ति हुआ है तो वे थे विवेकानन्द। मनुष्यों में पूरे सिंह। लेकिन उन्होंने जो निश्चित कार्य अपने पीछे छोड़ा है वह, उनकी सृजनात्मक शक्ति और ऊर्जा के बारे में हम पर जो छाप है उसके अनुपात में बिलकुल अपर्याप्त है। हम अब भी उनके प्रभाव को भीमकाय रूप में कार्य करते हुए देखते हैं। हमें ठीक पता नहीं वैसे, हमें ठीक पता नहीं कहां किसी ऐसी चीज में जिसने अभीतक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ठीक आकार नहीं पाया है, कुछ सिंह सदृश, विशाल, अंतर्भासात्मक, ऊपर उभरती हुई चीज भारत की आत्मा में प्रवेश कर गयी है और हम कहते हैं, "देखो, विवेकानन्द अब भी अपनी मां और उसकी संतान की आत्मा में जीवित हैं।" सभी के साथ यही बात है। न केवल यह कि मनुष्य अपने निश्चित कार्य से बड़े हैं बल्कि उनका प्रभाव इतना विस्तृत और अमूर्त है कि उसका उनके किसी भी ओपचारिक कामके साथ बहुत कम संबंध है जो वे अपने पीछे छोड़ गये हैं।

दयानन्द की कार्यपद्धति बहुत भिन्न थी। यह एक ऐसा पुरुष है जिसने, अपने-आपको अनौपचारिक रूप से वस्तुओं की अनिश्चित आत्मा में नहीं उंडेला बल्कि मनुष्यों और वस्तुओंपर मानो कांसेपर अमिट छाप की तरह अपनी मुहरें लगादी। यह एक ऐसा पुरुषहै जिसके औपचारिक कार्यउसके आध्यात्मिक शरीर की संतान हैं, सुन्दर, बलवान् और जीवन शक्ति से भरे हुए बालक, जो अपने स्रष्टा की मूर्ति हैं। यह एक ऐसा पुरुष था जो निश्चित और स्पष्ट रूपसे उस काम को जानता था जिसे करने के लिये उसे भेजा गया था, उसने अपनी सामग्री चुनी, आत्मा को प्रभुत्वसंपन्न अंतर्दृष्टिद्वारा अपनी परिस्थितयां निश्चित कीं और अपनी कल्पनाको जन्मजात कार्यकर्ता के सशक्त प्रभुत्व के साथ कार्यान्वित किया। जब मैं भगवान् के कारखाने में इस दुर्जेय कारीगरी की आकृति को देखता हूं, मेरे अंदर प्रतिमाओं की भीड़ लग जाती है जिनमें सारी की-सारी युद्ध और कार्य, विजय और विजयशील परिश्रम की हैं। मैं अपने-आपसे कहता हूं यह रहा ज्योति का यथार्थ सैनिक, भगवान् के जगत् का सिपाही, मनुष्यों और संस्थाओं का मूर्तिकार, आत्मा के आगे जड़ भौतिक द्रव्य जो कठिनाइयां उपस्थित करता है, उनका तूफानी और वीर विजेता। और इस सारी चीजका योग मेरे आगे आध्यात्मिक व्यावहारिकता के रूप में अपनी सशक्त छाप डालता है। ये दो शब्द जो साधारणतः हमारी कल्पना में एक-दूसरे से बिलकुल अलग होते हैं, इन्हींका संयोग मुझे दयानन्द की ठीक परिभाषा मालूम होताहै।

उन्होंने जो काम किया अगर हम उसकी वास्तविक प्रकृतिका हिसाब न भी करें तो भी केवल यह तथ्य कि उन्होंने इस भाव से और इस परिणाम के लिए किया, उन्हें हमारे महान् प्रवर्तकों में एक अद्वितीय स्थान देता है। राष्ट्रीय जीवन में प्राचीन आर्यतत्त्व को लाते हैं। यह तत्त्व, मैं जिन विशिष्टताओं को देखता हूं उनमें से दूसरी प्रदान करता है और वही पहली का रहस्य है। हम अन्य लोग प्रभावों की धारों में रहते हैं। हम उन्हें अपने द्वारा उंडेले जाने और हमें ढालने देते हैं। कोई चीज रूप लेती है और परिणाम स्वरूप उसमें किंचित् कार्य होता है और शेष फिर से प्रभावों की धारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जा गिरता है। हम अपनी दिशाओं में अनिश्चित हैं और अपने आपको परिस्थितियों और परिवेश के अनुकूल बना लेते हैं। जब लड़ाकू और दुराग्रही होने का अभिनय भी करते हैं तो हम सचमुच द्रव और अवसरवादी होते हैं। दयानन्द के अंदर जो कुछ प्रवेश करता था वे उस सबको पकड़कर अपने अंदर रखते, वहां पूर्ण कौशल के साथ उसे गढ़ते और वह रूप देते जिसे वे ठीक मानते और फिर उन रूपों के साथ ढाल देते जो उन्हें ठीक लगते थे। उनके अंदर जो चीज हमें युद्धप्रिय या आक्रामक लगती है वह उनके आत्म-निश्चय के बलका भाग थी।

वे केवल प्रकृतिके महान् हाथके आगे सुनम्य नहीं थे बल्कि जीवन और प्रकृतिकी सुनम्य सामग्रीके रूप में उपयोग करने के अपने अधिकार और शक्तिपर भी दृढ़ रहते थे। पौरुष और क्रियाके अपने अपर्याप्त स्रोतके साथ हम कल्पना करते हैं कि अब भी उनकी आत्मा पुकार कर हमसे कह रही है, "सन्तुष्ट न हो, हे भारतीय, अनन्त रूपके होने और अस्पष्ट रूपसे बढ़ने से संतुष्ट न हो। देख, भगवान् तुझे क्या बनाना चाहते हैं, उनकी प्रेरणाके प्रकाश में निश्चय कर कि तू किस रूप में विकसित होगा। वह देख और उसे अपमे-आपमेंसे तराश। जीवनमेंसे तराश। विचारक बन, लेकिन साथमें कर्ता भी। अंतरात्मा बन लेकिन साथ ही पुरुष भी। भगवान्का दास बन पर साथ ही प्रकृतिका स्वामी भी।" क्योंकि वे अपने-आप ऐसे ही थे। एक ऐसे पुरुष जिसकी अंतरात्मामें थे भगवान्, आंखों में अंतर्दर्शन, और हाथोंमें जीवनको तराशकर अपने अंतर्दर्शनके अनुसार मूर्ति बनानेकी शक्ति। 'तराशना' ही ठीक शब्द है। वे अपने-आप ग्रेनाइट थे। वे ग्रेनाइटकी तरह ही बड़ी-बड़ी चोटें करके चीजोंके आकार गढ़ते थे।

दयानन्दके जीवनमें हम हमेशा इस आध्यात्मिक व्यवहारिकताकी सशक्त धाराको देखते हैं। उनके कार्यपर हर जगह एक सहज शक्ति और निर्णायकता की मुहर लगी है।और आरंभमें कैसी होगी व्यावहारिक अंतर्भासकी वह प्रभुत्वपूर्ण दृष्टि जो दृढ़ताके साथ भारतीय जीवन और संस्कृतिकी सीधी जड़में जा पहुंची, जो आमूल नवीन जन्मके लिये बीज लाने, प्रथम जन्मके पुण्यतक जा पहुंची। और कैसे भव्य बौद्धिक साहसका कार्य था उस वेदको हाथमें लेना जिसे अज्ञानभरे भाष्योंने बिगाड़ रखा था और उसके भावको भूलकर गलतफहमीने उसे बर्बरोंके प्राचीन अभिलेखके स्तरतक उतार दिया था। और ऐसे शास्त्रके रूपमें उसके सच्चे मूल्यको देखना जिसके अंदर उन पूर्वजोंकी गम्भीर ऊर्जा भरी आत्मा छिपी थी जिन्होंने इस देश और राष्ट्रको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनाया—उसे दिव्य ज्ञान, दिव्य पूजन और मर्मके शास्त्रके रूपमें देखना। मुझे मालूम नहीं दयानन्दका सशक्त और मौलिक भाष्य वेदके बारेमें निश्चित प्रमाणके रूपमें विस्तृत स्वीकृति पायेगा या नहीं, मेरा अपना ख्याल है कि इस गंभीर और आश्चर्यजनक अन्त:प्रकाशके दूसरे पहलू प्रकट करनेके लिये अभी और सूक्ष्म कामकी जरूरत है। लेकिन इसका बहुत मूल्य नहीं है। मुख्य बात यह है कि उन्होंने बिलकुल ठीक तरहसे वेदको भारतीय संस्कृतिकी चट्टानके रूपमें पकड़ा और उनके अन्दर इतनी साहसभरी कल्पना थी कि उनकी भेदक दृष्टिने उसमें युवाओंकी समस्त शिक्षा, संपूर्ण राष्ट्रीयताके दर्शन किये। राम मोहन राय, वे दूसरी महान् आत्मा और सशक्त कार्यकर्ता थे जिन्होंने बंगालपर अपना हाथ रख और उसे हिला डाला—कैसे महान् प्रयोजनोंके लिये—अपनी नदियों और धानके खेतोंके पास निष्क्रिय निद्रांमेंसे झकझोरकर बंगालको जगा दिया, वे उपनिषदोंपर आकर रुक गये। दयानन्दने उसके परे देखा और पाया कि हमारा सच्चा मौलिक बीज वेदमें है। उनके अंदर राष्ट्रीय सहज वृत्ति थी और वे उसे ज्योतिर्मय बना सके—सहज वृत्तिके स्थानपर अंतर्भास। अत: जो कार्य उनसे शुरू हुए हैं, चाहे वे चली आयी परम्परासे कितनी भी दूर क्यों न हों, निश्चित और गम्भीर रूपसे राष्ट्रीय होने चाहिये।

राष्ट्रीय होनेका अर्थ चुपचाप खड़े रहना नहीं है बल्कि भूतकालमेंसे किसी महत्त्वपूर्ण वस्तु को पकड़कर उसे आधुनिक जीवन की धारामें डालना ही नव सृजन और पुनरुद्धारका सबसे सशक्त उपाय है। आधुनिक सांचेको नया जीवन प्रदान करनेके लिये दयानन्द का कार्य भूतकालके ऐसे ही एक तत्त्व और भावोंको वापिस लाता है। और ध्यान रहे, कार्यमें और जीवनमें वह भूतकालकी निष्कलंक ओजस्विताकी प्रथम धार थी जिसे उन्होंने पकड़ा। वह धार अपने स्रोतोंसे शुद्ध रूपमें उतरी, जो अपने मौलिक तत्त्वके निकट थी अत: किसी शाश्वत और हमेशा नयी की जा सकनेवाली चीजके निकट थी।

और इन मनुष्यकी तरह इनकी कृतिमें भी हम उस सहज निश्चित परिश्रम और ओजपूर्ण रचनाकी क्षमता पाते हैं जो आंतरिक सिद्धान्तकी पूर्ण स्पष्टता, सत्य और निष्कपटतासे पैदा होती है। हमारी कुटिल, जटिल और लड़खडाती मानवजातिमें, अपने मनमें स्पष्ट होना, अपने साथ और औरोंके साथ पूरी तरह सरल और सच्चा होना, अपने श्रमकी सामग्री और अवस्थाओं के साथ पूरा-पूरा ईमानदार होना—यह बहुत ही विरल देन है। यह आर्य कार्यकर्ताकी भावना और ओजभरी सफलताका निश्चित रहस्य है क्योंकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकृति हमेशा अपने द्वारपर स्पष्ट, ईमानदार और अभिज्ञेय दस्तकको पहचानती है और उपयुक्त कर्तव्यनिष्ठा और अध्यवसायके साथ परिणाम देती है। और यह अच्छी बात है कि गुरुकी आत्मा अपने अनुयायियोंमें अपना चिह्न छोड़ा जाय, कि भारतमें किसी जगह कोई ऐसा संघ हो जिसके बारेमें यह कहा जा सके कि जब कोई काम आवश्यक और उचित दिखलायी दे तो आदमी सामने आयेंगे, सामग्री जुट जायेगी और कार्य निश्चित ही हो जायेगा।

सत्य एक बहुत सरल चीज मालूम होता है परन्तु वह है सबसे अधिक कठिन। सत्य ही वैदिक शिक्षाका गुरु-मंत्र था—अंतरात्मामें सत्य, अंतर्दर्शनमें सत्य, अभिप्रायमें सत्य और कार्यमें सत्य। व्यवहारिक सत्य, आर्जव, एक आंतरिक सरलता और प्रबल निष्कपटता, वाणी और कर्ममें स्पष्टता और आत्मा-सम्मान— यह है आर्य नीतिशास्त्रका स्वभाव। यह स्पष्ट, अविकृत ऊर्जाका रहस्य है, यह इस बातका चिन्ह हैं कि मनुष्य प्रकृतिसे दूर नहीं गया है। यह दिवस्पुत्र (स्वर्ग-तनय) के कौशलका चिन्ह है। दयानन्द अपने पीछे यही मोहर छोड़ गये। इसे उनका चिन्ह और प्रतिमा होना चाहिये जिससे उनके कार्य पितृत्वको पहचाना जा सके। ऐसा हो कि उनकी आत्मा भारतमें शुद्ध,अविकृत, अपरिवर्तित रूपमें काम करे, ह वव लौटा देनेमें मदद करे जिसकी हमारे जीवन में विशेष आवश्यकता है—शुद्ध ऊर्जा, उच्च स्पष्टता, भेदक नेत्र, कौशलपूर्ण हाथ, उदात्त प्रमुख सच्चाई तथा निष्कपटता। □

जन-ज्ञान [मासिक] में विज्ञापन दीजिए

- यह आपको एक लाख पाठकों से मिलवायेगा।
- आपके उत्पादन–संस्थान का उनसे परिचय करवायेगा।
- जन-ज्ञान केवल एक पत्रिका नहीं, एक आन्दोलन है।
- एक यज्ञ है यह, आप इसमें आहुति भी देंगे-- जब आप जन-ज्ञान में विज्ञापन देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नई शिक्षा नीति के सन्दर्भ में

—प्रो० धर्मवीर अजमेर

हमारी दृष्टि से शिक्षा उतनी ही पुरानी है जितना इस पृथ्वी पर मनुष्य। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के सामर्थ्य को संसार की वस्तुओं का अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकने के योग्य बनाना है। शिक्षा मनुष्य के नैमित्तिक ज्ञान को प्राप्त करने, उसे बनये रखने तथा उसमें प्रगति करने का अनिवार्य उपाय है। यह परम्परा आदि काल से चली आ रही है। वेद में **आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचा कृणुते गर्भमन्तः** अथवा **अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः खाव मनोजवेष्वासमाबभूवुः।** इन पंक्तियों में शिक्षा की आधारभूत बातों की ओर ही ध्यान दिला गया है। योग दर्शनकार ने **स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्** कह कर शिक्षा की अविच्छिन्नता की ओर ही इंगित किया है। आगे चलकर शिक्षा क्या है और उसके मुख्य आधार क्या हैं इसको तैत्तिरीयोपनिषद् में स्पष्ट किया गया है। वहां शिक्षा की परिभाषा करते हुए कहा है—**ओम् शिक्षाव्याख्यास्यामः वर्णः स्वरः मात्रा बलम् साम सन्तानः इत्तुक्तः शिक्षाध्यायः ॥**

इस प्रकार पांच वाक्यों में शिक्षा-स्वरूप समझा दिया गया है। वर्ण-अर्थात् अकारादि वर्णमाला, स्वर—उदात्त अनुदात्त स्वरित वर्णधर्म, मात्रा ह्रस्व दीर्घ प्लुत, बल-वाह्याभ्यान्तर प्रयत्न, साम उच्चारण में शांति, सन्तान वर्णों का पूर्वापर सम्बन्ध संहिता—यह है शिक्षा का मूल रूप। इस प्रकार किसी भी भाषा के ज्ञान के लिए ये सूत्र अनिवार्य हैं। इन से शब्द शिक्षा का द्वार खुलता है। इसके माध्यम से ही अर्थ शिक्षा अर्थात् विषय बोध होकर उपयोग करने की योग्यता बढ़ती है। शिक्षा के आधार की विवेचना करते हुये उपनिषत्कार कहता है—

आचार्यः पूर्वरूपम् अन्तेधास्युत्तररूपम् विद्या सन्धिः प्रवचनं सन्धानम्-इत्यधिविद्यम् ॥ किसी भी समय और किसी भी देश में शिक्षा का यही आधार होगा—आचार्य (अध्यापक वर्ग) पूर्वरूप है, अन्तेवासी उत्तर रूप है विद्या सन्धि और प्रवचन सन्धान है। इनमें से तीन बातों में कोई महत्वपूर्ण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिवर्तन नहीं हुआ है और वह ... की नहीं है। शिक्षा के लिये अध्यापक और विद्यार्थी सदा ही रहे हैं प्रवचन का क्रम भी चलता रहा है। परन्तु प्रवचन की विषय वस्तु में उन्नति, ह्रास, न्यूनाधिकता, विविधता सदा रही है और रहेगी। वस्तुतः शिक्षा पर विचार करते हुये सर्वाधिक विचारणीय विन्दु भी यही है। अध्यापक और विद्यार्थी के सम्बन्धों का क्या लक्ष्य होना चाहिये। इसका विश्लेषण आचार्य यास्क ने निरुक्त में आचार्य शब्द की निरुक्ति करते हुए किया है—**आचार्यः कस्मात् आचारं ग्राह यति, आचिनोति अर्थात्, आचिनोति बुद्धिमिति वा** अर्थात् आचार्य की शिक्षा का प्रथम अंग आचार, सदाचार सिखाना या संस्कारित करना। दूसरा अंग वस्तुओं के गुण कर्म स्वभाव का परिचय कराना। तीसरा अंग—संसार में वस्तुओं के गुण कर्म स्वभाव को स्वतः जान सकने की योग्यता उत्पन्न करना अर्थात् बुद्धि का विकास करना जिससे विवेक कर सके।

मनुष्य के सीखने का क्रम उसके उत्पन्न होने के साथ ही प्रारम्भ हो जाता है। दुनिया में वह जो भी कुछ देखता सुनता अनुभव करता है उससे अनुकूलता प्रतिकूलता का उसे बोध होता रहता है। इन परिणामों का संग्रह ही शिक्षा है। इस शिक्षा को देनेवाले गुरु प्रमुख रूप से तीन रहे हैं। आज भी और पहले समय में भी। इसको शतपथ ब्राह्मण ने इस प्रकार परिभाषित किया है—**मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद**। माता पिता और आचार्य की परम्परा शिक्षा की सीढ़ियां हैं। हम जाने-अनजाने इन्हीं से सीखते हैं। यदि ये सुशिक्षित हैं तो बच्चों की शिक्षा व्यवस्थित रूप से योजनाबद्ध एवं लक्ष्य की ओर उन्मुख होती है अन्यथा बच्चा जो कुछ जानता है या सीखता है उसे शिक्षा परिभाषा में समाविष्ट करना भी कठिन हो जाता है। माता-पिता, आचार्य कथन में एक व्यापक दृष्टिकोण है। इनके सम्पर्क में बालक अधिक समय तक तक रहता है या रहने के लिए बाध्य है। इसीलिये इस गिनती में तीन स्थान हैं। अन्यथा बच्चा जिसके भी सम्पर्क में आता है उसी से सीखता है इतना ही नहीं वह प्रकृति के सम्पर्क में भी निरन्तर सीखता रहता है। इसी कारण आज के शिक्षा शास्त्री बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को स्थान से विभाजित करते हैं इस प्रकार बच्चे के सीखने के तीन स्थान हैं घर, गली और स्कूल। वह घर के आंगन में घर के प्रत्येक सदस्य के सम्पर्क के आता है। इस प्रकार उसके जीवन में सीखने का पहला पड़ाव घर है। इसके पश्चात् वह बाहर कदम रखता है। तब उसका परिचय उसके सामाजिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
परिवेश से होता है और यह सीखने का दूसरा पड़ाव है। यह उसके जीवन में सबसे लम्बा और व्यापक होता है जिसे वह विद्यालय से प्रारम्भ करके महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और प्रयोगशालाओं तक सीखता रहता है। शिक्षा के इन पड़ावों में घर और समाज पर शैक्षिक प्रभाव डालना सरकार या शिक्षाशास्त्रियों के बस की बात नहीं। ये तो औपचारिक शिक्षा के परिणाम को प्रदर्शित करने के स्थान मात्र हैं। सुधार के केन्द्र औपचारिक शिक्षा के स्थल ही हो सकते हैं और इसका क्रम उन्हीं केन्दों से प्रारम्भ होगा जहां सरकार व शिक्षाशास्त्री अपने पूरे प्रयास कर सकते हैं।

आज संयोग से सरकार के मन में शिक्षा के प्रति सुधार का संकल्प है। ऐसा नहीं कि शिक्षा के बारे में इससे पहले विचार नहीं किया गया हो। समय-समय पर शिक्षाविदों ने और सरकार ने भी इस पर विचार किया है, आयोग बैठे हैं, नये-नये सुझाव दिए गए हैं। उनका किसी न किसी रूप में क्रियान्वयन का प्रयास हुआ है परन्तु इस सबके बाद समस्या का आंशिक समाधान भी नहीं हो पाया है। शिक्षा में किसी प्रकार का गुणात्मक परिवर्तन संभव नहीं हो पाया। अतः शिक्षा पर विचार करने की आवश्यकता निरन्तर बढ़ती रही। शिक्षा नीति कैसी हो इस पर विचार करने से पूर्व यह जान लेना भी प्रासंगिक होगा कि वर्तमान में देश में चल रही शिक्षा पद्धति ब्रिटिश शासन की देन है। इसके प्रवर्तन का श्रेय लार्ड मैकाले को है जिसकी योग्यता और वफादारी अपनी सरकार को समर्पित थी। न तो वह शिक्षाविद् था न अप्रतिबद्ध। ऐसी स्थिति में उसने वही किया जो उसे करना चाहिए था। उसका उद्देश्य ब्रिटिश सरकार और भारतीय जनता के मध्य ऐसे सेतु निर्माण का था जो इस देश की जनता को विदेशी सरकार के प्रति आस्थावान् बना सके। इसलिए उस व्यक्ति ने यहां काले अंग्रेज पैदा करने की कोशिश की जिनके मन में इस देश के साहित्य, संस्कृति और इतिहास के प्रति तुच्छ और हेय दृष्टि बनी रहे। वह स्वयं भी कहता है, सारे संस्कृत और अरबी साहित्य का इतना भी मूल्य नहीं जितना कि उसे लिखने या छपने में लगे कोरे कागज का। ऐसे व्यक्ति का तटस्थता से या शिक्षा से क्या सम्बन्ध हो सकता है। उसने सरकार से ऐसी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अनुदान देने को भी मना किया है। साथ ही ऐसी शिक्षा संस्थाओं को भी जिनमें इन भाषाओं की शिक्षा दी जाती है। उसकी दृष्टि में अरबी और संस्कृत में जितना भी ज्ञान है वह यूरोपियन लाइब्रेरी की अलमारी के एक हिस्से जितना भी नहीं। ये पंक्तियां उसके व्यक्तित्व व दृष्टिकोण की परिचा-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
यक है। उसी के द्वारा प्रवर्तित शिक्षा पद्धति आज भी हमारे देश के निर्माण की भूमिका है।

इस पद्धति को परिवर्तित करने के अनेक प्रयास हुए परन्तु, दो मुख्य प्रयास लम्बे समय तक क्रियान्वित किए गए। प्रथम प्रयास महर्षि दयानन्द ने किया और गुरुकुल प्रणाली के रूप में प्राचीन शिक्षा पद्धति की पुन:स्थापना की। स्वामी दयानन्द की शिक्षा को आर्यसमाज ने दो प्रकार क्रियान्वित किया। प्रथमत: जिस रूप में स्वामी दयानन्द ने जिस गुरुकुल के आदर्श को निरूपति किया था उसी रूप में तथा दूसरे वर्तमान शिक्षा पद्धति में कुछ विशेषता लाकर जिसे डी०ए०वी० आन्दोलन के रूप में हम देखते हैं। प्रथम प्रयास सफल और आदर्श होने पर सरकार और सामाजिक मान्यता के अभाव में व्यापक नहीं हो सका और दूसरा प्रयास व्यापक होने पर भी मैकाले की लीक पर चलने के कारण उससे अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सके। फिर भी इन प्रयासों में ऐसे तथ्य प्राप्त किये जा सके हैं जिनसे नई शिक्षा नीति के निर्धारण में दिशा मिल सकती है। दूसरी बार शिक्षा में परिवर्तन का विचार महात्म गांधी ने रखा जिसका उद्देश्य शिक्षा में व्यवसाय को प्राथमिकता दिया जाना रहा। उसे सरकार ने क्रियान्वित करने का प्रयास किया परन्तु उसे भी वह स्थान नहीं मिला जो मिलना चाहिये था। इस प्रकार इन दोनों प्रयासों को मिलाकर देखा जाये तो महर्षि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचार आदर्शोन्मुख थे तो महात्मा गांधी का दृष्टिकोण व्यवहारोन्मुख लगता है। आज इन दोनों को समन्वित कर आज के समाज के लिए उपयोगी शिक्षा पद्धति के निर्माण की आवश्यकता है।

नई शिक्षानीति बनाते हुए उन महत्त्वपूर्ण कमियों को ध्यान में रखना होगा जो आज की शिक्षा पद्धति में हैं। आज की शिक्षापद्धति के दोष-समस्याओं पर विचार करें तो पहला स्थान बेरोजगारी का आता है। जहां शिक्षा से व्यक्ति को जीवनयापन के योग्य बनना चाहिए वह अयोग्य बन जाता है। उसकी प्रवृत्ति सामान्य रूप से परिश्रम की नहीं होती और नौकरियां इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए सुलभ कराना न संभव है न उसका औचित्य ही है। वर्तमान शिक्षा हाथ से काम करने में हीनता का भाव भरती है। ऐसी परिस्थिति में जिन थोड़े-से लोगों को छोड़कर जो भाग्य या पहुंच के कारण नौकरी पाने में सफल हो जाते हैं, शेष लोग प्रयत्न में असफल होकर कुण्ठित, तिरस्कृत और आत्महीनता से ग्रसित होकर शिक्षा को व्यर्थ कर देते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज शिक्षा के प्रसार के साथ यह समस्या दिन प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। इस प्रकार का असफल व्यक्ति मजबूर होकर या सरल उपाय समझकर असामाजिक और अवैधानिक मार्गों का सहारा लेता हुआ भी देखा जा सकता है।

दूसरी समस्या आज की शिक्षा में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता है। इस अनुशासनहीनता ने शिक्षा क्षेत्र को समाज के लिए कण्टकों का संरक्षण केन्द्र बना दिया हैं। इस अनुशासनहीनता के दो मुख्य कारण हैं—प्रथम तो आज शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्य से नहीं अपित बैठे ठाले का धन्धा बन गया है। लड़के को नौकरी नहीं मिली इसलिए पढ़ता रहता है और लड़की शादी नहीं हो पाई इसलिए। इस तरह उद्देश्यहीन शिक्षण में तत्परता और परिश्रम की कमी होने से छात्र का व्यवहार स्तर से अनुकूल नहीं हो पाता। फिर क्या पढ़ना है इसका चुनाव करने की आवश्यकता भी हमारे यहां नहीं समझी जाती। मातपिता तो बच्चों को वे विषय पढ़ाना चाहते हैं जिसमें वे अधिक धन कमा सकें। विद्यार्थी अपने साथियों का साथ देने के लिए अथवा अधिक नम्बर लाने के लिए सरल विषय का चुनाव करते हैं। इससे विषय और पात्र में सामंजस्य नहीं हो पाता और समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। अनुशासनहीनता का दूसरा कारण राजनैतिक दलों की दखलन्दाजी है। विद्यालयों विश्वविद्यालयों और शिक्षा संस्थाओं में छात्र संगठन राजनैतिक दलों के अश्रय स्थल हैं जो वातावरण को दूषित करने के लिए सबसे बड़े जिम्मेदार हैं। या तो छात्र संगठनों को इन संस्थाओं से समाप्त कर दिया जाना चाहिए अथवा इनकी सदस्यता स्वैच्छिक रखनी चाहिए अनिवार्य नहीं। इस प्रकार अनुशासनहीनता पर बहुत अंश में अंकुश लगाया जा सकता है।

तीसरी समस्या के रूप में आज की शिक्षा पद्धति का दोष है अर्थ की प्रधानता। शिक्षा प्राप्त करना मनुष्य का मौलिक अधिकार है। शिक्षा का दायित्व समाज का और सरकार का है। इस कारण देश के प्रत्येक बालक को शिक्षा की समस्त सुविधायें प्रदान की जानी चाहिए। परन्तु आज तक हमारी सरकार शिक्षा तो दूर की बात है साक्षरता के अवसर भी इस देश के बालक को नहीं दे सकी है। शिक्षा का आधार आज अर्थ है, जिनके पास साधन हैं वे महंगे स्कूलों में में महंगी शिक्षा दिला सकते हैं। इस प्रकार अपने स्तर से वे और ऊंचे उठ सकते हैं परन्तु जिनके पास साधन नहीं हैं वे अपने अधिकार का उपयोग करने में समर्थ नहीं हो पाते। जहां प्राथमिक स्तर पर शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य और समान होनी चाहिए, वहां उच्च

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिक्षा पर से पैसे के अधिकार को समाप्त कर दिया जाना चाहिए। नहीं तो शिक्षा को पूंजीवादी रास्ते पर जाने से कोई नहीं रोक सकता। उच्च शिक्षा पर आज पैसे का एकाधिकार है आज डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, तकनीशियन वह नहीं बनता जिसे बन्ना चाहिए अपितु वह बनता है जिसके पास पैसा है। इसका यह अभिप्राय नहीं कि पैसे वालों को पढ़ने का अधिकार नहीं अपितु उनका अधिकार प्राथमिकता के आधार पर नहीं होना चाहिए। पहला स्थान प्रतिभा को मिलना चाहिए। वह भी आरक्षण आदि के आधार पर नहीं, सभी को प्रतिभा के आधार पर निःशुल्क या यथासंभव कम मूल्य पर उच्च अध्ययन की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए। धनिक वर्ग शिक्षित होना चाहे तो पूर्ण शुल्क से वह शिक्षा प्राप्त करे परन्ते सार्वजनिक साधनों का व्यय राष्ट्रीय प्रतिभा को विकसित करने में ही होना चाहिए।

चौथी समस्या शिक्षा में भाषा की है। आज जो भी शिक्षा का माध्यम है वह मैकाले का दिया है। हम आज तक नहीं समझ पाये कि हम स्वयं को अपनी भाषा में ही समझ सकते हैं दूसरे की भाषा में नहीं। इस देश की समस्याओं को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक शिक्षा का माध्यम हमारी अपनी भाषा नहीं। इस मिट्टी की समस्यायें यहीं के माध्यम में ही जानी जा सकती हैं। आज उच्च शिक्षा में जिन समस्याओं पर खोज की जा रही है वे इस धरती की नहीं। इन समस्याओं के समाधान में हमारा दोहरा नुकसान हो रहा है, एक तो हम अपना पैसा, श्रम, समय और प्रतिभा का अपव्यय कर दूसरों की समस्या हल करने में लगे हैं या उस तकनीक सीखने की खोज करते हैं जिसे विकसित देश छोड़ चुके हैं। इस तरह हम उनके पुराने सामान का बाजार भर बन गये हैं। आज हमारे उच्च संस्थानों में हिन्दी और भारतीय भाषायें हीन दृष्टि से देखी जाती हैं। यह इस चलती शिक्षा पद्धति की देन है। मातृभाषा में शिक्षा देना शिक्षा की प्रथम आवश्यकता है। इस समस्या को लोग यह कहकर टालना चाहते हैं कि भारत बहुभाषी देश है इसलिए इसमें यह बात संभव नहीं। यह तो कुछ ऐसा समाधान है जिसमें दो बिल्लियों के लड़ने की संभावना है इसलिए लड़ने से पहले ही रोटी बन्दर को दे दी जाय। कोई समस्या इसलिए समस्या नहीं होती कि वह सदा के लिए समस्या बनी रहे अपितु समस्या समाधान के लिए होती है। मातृभाषा में शिक्षा देने की समस्या में पहली बात प्रत्येक प्रान्त की भाषा में प्राथमिक शिक्षा देना। इसमें एक बाधा हर प्रान्त में इतर भाषाभाषी लोगों के माध्यम की है। इसका समाधान बहुजन हिताय के आधार पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करना होगा जैसे आजकल किया भी जाता है। जब निर्धारित प्रतिशत तक उनकी संख्या हो तब यह व्यवस्था की जा सकती है। मातृभाषा के साथ एक राष्ट्रीय भाषा सीखने की बात है जो सम्पर्क भाषा हो। इसमें हिन्दी को ही वह स्थान मिलेगा इसलिए नहीं कि इसके प्रति कोई पूर्वाग्रह है अपितु इस देश में सबसे अधिक संख्या इस भाषा के बोलने व समझने वालों की है। इसके साथ ही जब हम शिक्षा में इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं तब शास्त्रीय भाषा के रूप में संस्कृत भाषा को कहां स्थान देंगे इसका समाधान करना होगा। इतना होने पर पर हमारे अंग्रेजी मोह का क्या होगा ? जबकि चीन, जापान, रूस और दूसरे देशों की शिक्षा उनकी अपनी भाषा में होती है—चाहें वह विज्ञान की हो या तकनीकी हो परन्तु हमारे यहां तो हम समझ बैठे हैं हम अंग्रेजी के बिना जीवित ही नहीं रह सकते। हम काम अंग्रेजी में करते हैं फिर उपकार की दृष्टि से उनका हिन्दी अनुवाद करते हैं। किसी भाषा की मौलिकता नष्ट करना और हत्या करना दोनों बातें बराबर हैं। ऐसी हिन्दी सेवा की इस देश को आवश्यकता नहीं। ये विष फल इसी वर्तमान शिक्षा नीति की देन हैं। आज के समझदार लोगों ने हिन्दी-अंग्रेजी संघर्ष को हिन्दी और भारतीय भाषाओं में बदलने की कुचेष्टा की है जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता रहा है। हमें शिक्षा में वे बातें स्थापित करनी हैं जिनसे इन बातों का निराकरण किया जा सके। जब किसी समस्या के समाधान का अवसर आता है। तब इस उस प्रान्त के लोगों की नाराज होने की बात की जाती है। यह एक छलावा है जिसे असलियत बनाने की कोशिश पिछले चालीस सालों से हो रही है। इस प्रकार भाषा का चुनाव करते हुये मातृभाषा में शिक्षा, राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा और शास्त्रीय भाषा को रखना होगा। योग्यता व लाभ के लिए भार-व अधिक से अधिक विदेशी भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था की जानी चाहिए। भारतीय भाषाओं में शिक्षा के प्रश्न पर एक विवाद और खड़ा किया जाता है-विषयों की जानकारी व पाठ्यक्रम की पुस्तकों का अभाव। यह भी एक बहाना है। हमारे प्रयत्न इस ओर शिथिल हैं और संकल्प निर्बल। अन्यथा जापान के प्रोफेसर ने जानकारी देते हुए बताया था कि विश्व के किसी भी कोने में प्रकाशित होने वाली महत्त्वपूर्ण पुस्तक छः मास के भीतर जापानी में उपलब्ध हो जाती है। अतः पाठ्यक्रम व पुस्तक निर्माण हम नहीं करेंगे तो कई शताब्दियों में भी यह नहीं होगा। शिक्षा में भाषा की समस्या प्रस्तुत करते हुए हिन्दी में उचित और अपेक्षित शब्दों को कमी की बात की जाती है। कोई आविष्कार जहां जन्म लेता है वहीं की भाषा में प्रायः उसका नाम-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करण और प्रयोग की शब्दावली बनती है। वास्तव में उपयुक्त शब्द न हों तो उन्हें स्वीकार किया जा सकता है परन्तु शब्दों के लिए जितना क्षेत्र हमारे पास है उतना और किसी के पास नहीं हो सकता। हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत का विशाल शब्द भण्डार हमारी अभिव्यक्ति को वास्तविक रूप प्रदान कर सकता है। इसके साथ ही जब तक भारतीय भाषाओं से शब्द प्राप्त हो सकते हैं तब इधर-उधर दौड़ना दरिद्रता की आत्म-स्वीकृति के अतिरिक्त क्या हो सकता है ?

पांचवीं समस्या के रूप में इस समय की शिक्षा पद्धति में पाठ्यक्रम का बढ़ता बोझ है। पुराने समय में गणित और भाषा की पुस्तक के साथ पढ़ाई प्रारम्भ होती थी और बच्चों को विद्यालय में भेजने की भी माता पिता को बहुत जल्दी नहीं होती थी परन्तु आज स्थिति बिल्कुल विपरीत है। माता पिता व्यस्त हैं। पहले की भांति संयुक्त परिवार आज नहीं रहे जहां बच्चों को संभालने की चिन्ता नहीं होती थी और संचार साधनों की त्वरित गति से बच्चों के बौद्धिक विकास का स्तर बढ़ गया है। उनकी जिज्ञासाओं को शांत करना उतना सरल नहीं रहा, अतः माता पिता भी बच्चों को जल्दी स्कूल भेजने लगे हैं। इसके अतिरिक्त भी बहुत-से कारण हैं। परन्तु इन सबका दुष्प्रभाव पाठ्य पुस्तकों के बोझ के रूप में हमारे सामने है। आज इतने विषय हैं कि उनकी पढ़ाई स्कूल में तो पूरी हो ही नहीं पाती और यदि पठित माता-पिता न हों तो बच्चे का पढ़ना कठिन हो जाता है। विद्यालय के अतिरिक्त घर पर इतना समय पढ़ने के लिए देना पड़ता है कि बच्चों को मनोरंजन, खेलकूद, व्यायाम के अभाव में शारीरिक स्वास्थ्य से वंचित हो जाना पड़ता है। महापण्डित राहुल ने रूस की शिक्षा की चर्चा करते हुए अपनी पुस्तक में लिखा है—रूस के विद्यालयों में स्वास्थ्य पाठ्यक्रम का अनिवार्य विषय है इसमें अनुत्तीर्ण होने पर बच्चे को अनुत्तीर्ण होना पड़ता है। जबकि हमारी शिक्षा स्वास्थ्य को चौपट करने वाली है। यह ठीक है ज्ञान की शाखाओं का दिन प्रतिदिन विस्तार हो रहा है परन्तु शारीरिक एवं बौद्धिक सामर्थ्य और ज्ञान के विस्तार में एक उचित सामञ्जस्य हमको बैठना होगा क्योंकि न ज्ञान की उपेक्षा की जा सकती है और न स्वास्थ्य की।

छठी समस्या के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक सम्मान की कमी और जीवन-यापन की सुविधाओं का अभाव है शिक्षा में जैसी बात अध्ययन के क्षेत्र में है वैसी बात अध्यापन के क्षेत्र में भी है। अधिकतर व्यक्ति प्राथमिकता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के आधार पर इस व्यवसाय को नहीं चुनते अपितु अन्य उचित व्यवसाय के अभाव में इधर आ जाते हैं। ऐसे लोग कार्य से कभी सन्तुष्ट नहीं हो पाते। परिणामस्वरूप उचित अवसर मिलने पर छोड़कर चले जाते हैं या इसी के साथ कोई अन्य व्यवसाय करने का यत्न करते हैं। यदि ऐसा नहीं भी कर सके तो असन्तुष्ट भाव से काम करते रहते हैं। उनकी दृष्टि में अध्यापक होने के स्थान पर बैंक क्लर्क बनना या किसी कम्पनी में सेल्समैन बनना ज्यादा उचित है। वे पुलिस के सिपाही का अधिक महत्त्व समझते हैं — एक महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में अध्यापक होने के स्थान पर। इसके पीछे दो कारण मुख्य रूप से काम करते हैं—एक आर्थिक लाभ न्यून होना और दूसरा समाज में शिक्षक का सम्मान न होना। आज शिक्षक से एक अभिनेता, राजनेता, एक तस्कर का सम्मान समाज और सरकार में अधिक है। अतः प्रतिभाशाली वर्ग शिक्षा क्षेत्र से दूर होता जाता है। नई नीति में इस भेद को घटाने का प्रयत्न करना होगा। इस समस्या का समाधान एक दम या कानून से ही नहीं होने वाला परन्तु प्रयत्न करने पर इसमें सुधार संभव है।

सातवीं समस्या के रूप में शिक्षा क्षेत्र में एक बिडम्बना है। आजकल उचित व्यवसाय मिले या न मिले परन्तु शिक्षा अपने आप में अच्छा व्यवसाय बन गया है। शिक्षा की दुकानदारी आज किसी से छिपी हुई नहीं है। राज्य सरकारें भी इंजीनियरिंग व मेडिकल कालिज खोलने की अनुमति देती हैं ताकि संचालक उससे लाखों रुपये बिना कुछ किए प्राप्त कर सकें। इससे अतिरिक्त सरकार ने अनुदान प्राप्त करने वाली अधिकतर संस्थायें, छात्रों अध्यापकों का शोषण कर के और हिसाब के घोटाले कर सरकार को लाखों रुपये का चूना प्रति वर्ष लगा रही हैं। इसके लिए सरकार को दुकानदारी बन्द करने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे या शिक्षा का राष्ट्रीयकरण करना होगा।

इस प्रकार शिक्षा पद्धति के दोषों का निराकरण करते हुए शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने का उपाय करना होगा। शिक्षा से एक नागरिक को समाज में सम्मानपूर्वक जीवनयापन करने का सामर्थ्य प्राप्त होना चाहिये। इसके लिए शिक्षा का व्यवसायोन्मुखी होना आवश्यक है। इसके लिए सैकण्डर स्तर तक की शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क होनी चाहिए। सुधार की दृष्टि से शिक्षा में दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा से बालक में राष्ट्रीय भावना आनी चाहिये आज देश में जितने भी संकट हैं—वह चाहे पंजाब का हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

या असम का, भाषा का हो या सम्प्रदाय का वास्तविक संकट इन राज्यों पर या भाषा पर नहीं, संकट तो इस देश पर है यह हम नहीं समझ पा रहे। इसलिए टुकड़े–टुकड़े समाधान करने का प्रयन्त करते हैं और समस्या सुलझने के स्थान पर उलझ जाती है। हमने अपने को टुकड़ों में बड़ा बनाने की कोशिश की है यदि देश को सर्वोपरि स्थान दें तो सब कुछ स्वतः बड़ा बन जायेगा। यही भावना नई पद्धति में प्रमुखता लिये होनी चाहिए।

नई नीति में सांस्कृतिक मूल्य और इतिहास की जानकारी पर बल देने की बात कही गई है। इन दोनों ही विषयों में हमारी दृष्टि तथ्यपरक और आदर्शोन्मुख होने के स्थान पर तुष्टीकरण की हो जाती है। ऐसी-ऐसी तथ्यहीन बातें को हम इतिहास के नाम पर पढ़ाते हैं जिनसे निश्चित रूप से देश के प्रति आस्था और एकता का भाव नहीं आ सकता। आज भी आर्य बाहर से इस देश में आये, और आदिवासी जैसे शब्दों की विद्यमानता एक दुरभिसन्धि के परिमाणों को ओर ही हमको ले जा रहे है। तभी तो एक ईसाई संसद् सदस्य ने आर्यों को विदेशी कहा और संस्कृत को विदेशी भाषा क्या ऐसे ही इतिहास को हम नई पद्धति में स्थान देगें ? फिर पुरानी ही क्या बुरी है। हमें ध्यान रखना होगा कि स्वस्थ शिक्षण की परम्परा ही उन्नत संस्कृति की जनक है।

शिक्षण में सुधार के लिए परीक्षा पद्धति को समाप्त करने या डिग्री को नौकरी से पृथक् करने पर संभव है परीक्षा का बोझ अवश्य कम हो जाय परन्तु परीक्षा किसी भी रूप में रहेगी। प्राचीन समय में भी परीक्षा होती थी, सभी विद्वानों को आमन्त्रित किया जाता था और कोई भी विद्वान् शास्त्र को शलाका से खोल कर प्रश्न करता था और सम्यक् उत्तर से सन्तुष्ट करने पर छात्र उत्तीर्ण घोषित किया जाता था। इस परीक्षा को शलाका परीक्षा कहते थे। आज सब क्षेत्रों की भांति शिक्षा ओर परीक्षा क्षेत्र में भी वास्तविक संकट चरित्र का संकट है। इसे दूर किये बिना कोई पद्धति सफल नहीं हो सकती। आज परीक्षा को पास बुक्स सीरीज से उत्तीर्ण करना, नकल करना-करवाना, डरा-धमका कर रिश्वत देकर या पहुंच करके अंक प्राप्त करना, ये सब केवल तभी रुक सकते है जब हम इन्हें करने में भय या लज्जा अनुभव कर सकें। आज तो नकल करने के लिए पढ़ने की भी आवश्यकता नहीं। पुस्तक के साथ प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने वाला भी लाना पड़ता है। ऐसा क्यों ? विदेशों में आज भी एक अध्यापक उत्तीर्ण कह दे तो समाज में उसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कथन को पूरा सम्मान मिलता है और हमारे यहां डिग्रियां भी जाली दी जाती हैं। ऐसा क्यों ? इसका उत्तर है चारित्रिक संकट। इसे दूर करने पर कोई भी पद्धति अपनायी जा सकती है।

जहां तक शिक्षा की एकरूपता का प्रश्न है बड़े स्तर पर तो यह सम्भव है परन्तु माध्यमिक स्तर तक स्थानीय क्षेत्र भाषा के परिवेश की भिन्नता रहते हुये भी स्तर की समानता को बनाये रखने का प्रयत्न किया जा सकता है।

नई शिक्षा नीति में एक विरोधाभास को प्रमुख रूप से स्थान मिला है—पब्लिक स्कूलों को। सरकार का विचार है कि वह सरकारी क्षेत्र में पब्लिक स्कूलों की श्रृंखला बनायेगी। ऐसा सभवत: इसलिए हुआ हो कि आज की हमारी सरकार पब्लिक स्कूल की उपज है। वास्तव में तो यह पाखण्ड इस देश से जितना जल्दी समाप्त हो उतना अच्छा है। इन स्कूलों के कारण इस देश में एक ऐसा वर्ग निरन्तर पनप रहा है जो देश की सामान्य जनता से अपने को विशिष्ट समझता है। असलियत में देखा जाय तो उसमें कोई अतिरिक्त योग्यता नहीं है अपितु माध्यम की भिन्नता से जो प्रतिस्पर्धा करोड़ों में होनी चाहिए वह कुछ हजारों में होती है परन्तु अधिकार और लाभ करोड़ों का मिल जाता है।

यह एक देश की वास्तविक उन्नति चाहने वाली सरकार का उचित कदम नहीं कहा जा सकता। कुछ लोगों का विचार है कि हमने अंग्रेजी पढ़कर स्वतन्त्रता पायी है। यह उतना ही सत्य है जितना मुझे मेरे गांव जाने के लिए अंग्रेज ने रेल चलाई है। शिक्षा उसने अपने उद्देश्य से दी यह अलग बात है शिक्षित होकर उनकी भाषा में उन्हें हमने समझाने की कोशिश की। आज का अंग्रेजी पढ़ा अंग्रेजी में योग्य हो सकता है परन्तु हिन्दी पढ़ने वाले से वह बड़ा नहीं हो सकता। यह बड़प्पन और अलगाव की बू इन पब्लिक स्कूलों की नस-नस में रची-बसी है। वह राष्ट्र को समानता और एकता की अनुभूति कैसे होने देगी ? अत: पैसों में बड़प्पन देखने वाली इन संस्थाओं पर अंकुश लगना चाहिये और उन्हें भी सबके साथ प्रतिस्पर्धा में भाग लेने का अवसर मिलना चाहिये। नहीं तो नई शिक्षा नीति अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकेगी।

इस प्रकार सबके लिए शिक्षा के समान अवसर, मातृभाषा में शिक्षा, वास्तविक इतिहास का परिज्ञान, सांस्कृतिक मूल्यों में आस्था, श्रम के प्रति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रद्धा, उत्तम स्वास्थ्य और राष्ट्रीय भावना को सर्वोपरि स्थान देने वाली नीति हमारी वास्तविक शिक्षा नीति हो सकती है। यदि ऐसा हम कर सके तो विश्व की मूल्यवान् और एकमात्र जीवित अपनी संस्कृति को चिरंजीवी और संसार के लिए आदर्श बना सकते हैं जिसमें कहा गया हो—

न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्।

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए

पवित्र धर्म-ग्रन्थ : परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिंदी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य : ५०० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

पुस्तकालय संस्करण : ३०० रु०

उपहार संस्करण : लागत मूल्य : १,००० रु०

अभी केवल ८०० रु० में लीजिये।

आदेश के साथ ५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

दूरभाष : ५६२६३६-५६४७४१-८०१२११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गड़बड़ी फैलाने के लिए पाक से धन

नई दिल्ली, २१सितम्बर। गुप्तचर एजेंसियों ने केन्द्रीय सरकार को आगाह किया है कि पाकिस्तान ने पंजाब के अलावा उत्तर भारत के कुछ अन्य क्षेत्रों में अशांति पैदा करने के उद्देश्य से कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं और संगठनों को व्यापक स्तर पर आर्थिक सहायता देने की पेशकश की है।

गुप्तचर एजेंसियों की सूचना के अनुसार पाकिस्तान सरकार ने "वीजा" देने की उदार नीति के नाम पर बड़ी संख्या में भारत के मुस्लिम नेताओं व्यापारियों और संदिग्ध व्यक्तियों को पाकिस्तान आने की सुविधा दे दी है। पाकिस्तान इन लोगों के माध्यम से भारत में, मुस्लिम पर्सनल ला' और इस्लाम की रक्षा के नाम पर मुस्लिम समुदाय को भारतीय समाज से अलग-अलग करने का कुप्रचार तथा दंगे करवाने का इरादा रखता है।

विदेशों में भारत विरोधी षड्यंत्र पर नजर रखने वाले गुप्तचर संगठन ने अपनी रिपोर्ट में जामा मस्जिद के इमाम मौलाना अब्दुला बुखारी द्वारा इसी महीने के प्रारम्भ में की गई पाकिस्तान यात्रा का उल्लेख भी किया है। रिपोर्ट के अनुसार शाही इमाम ने पाकिस्तान के नेताओं और पत्रकारों के बीच जाकर कहा कि भारत में हिन्दू, मुसलमानों और सिखों पर बुरी तरह अत्याचार कर रहे हैं। भारतीय मुसलमानों के पास इन जुल्मों के विरुद्ध संघर्ष करने के आवश्यक साधन नहीं हैं। इस काम के लिए पाकिस्तान सरकार और जनता को लड़ाई लड़ने के लिए आर्थिक और अन्य सहायता करनी चाहिए।

इमाम बुखारी ने खुलेआम यह भी कहा कि हम पाकिस्तान को ताकतवर देखना चाहते हैं। उन्होंने असम में ५० हजार और मुरादाबाद में पांच हजार मुसलमानों को मारे जाने तथा भारत में मुसलमानों के 'पर्सनल ला' के कुछ प्रावधानों के विरुद्ध अदालती फैसलों का उल्लेख करते हुए इस्लामी परम्पराओं की रक्षा की दुहाई भी दी है। इमाम की टिप्पणियों को पाकिस्तानी अखबारों ने सुर्खियों में छापा है। पाकिस्तानी नेताओं ने इमाम के साथ हुई गुप्त वार्ताओं में हर संभव सहायता के वायदे किये है।

गुप्तचर एजेंसियां पाकिस्तान के इरादों को विफल करने के लिए भारत में सक्रिय अन्य धार्मिक नेताओं की गतिविधियों पर भी कड़ी नजर रखे हुए हैं और इनके विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई करने की सलाह भी दे रही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

बताया जाता है कि आजमगढ़ के इमाम मौलाना ओबेदुल्ला खान के एक कट्टर साम्प्रदायिक और उत्तेजक भाषण के टेप को मुस्लिम क्षेत्रों में सुनवाने और मुफ्त बंटवाने की रिपोर्ट भी सरकार को दी गई है। राजस्थान के पाली कस्बे की मिल्लत में दिए गए इस भाषण में मौलाना ओबेदुल्ला खान ने मुस्लिम बीबी की परवरिश का खर्चा देने सम्बन्धी उच्च-तम न्यायालय के फ़ैसले का कड़ा विरोध करने और 'पर्सनल ला' के लिए खून की नदियां बहा देने की पुरजोर अपील की है।

इस भाषण में मौलाना ओबेदुल्ला खान ने कहा है कि मुस्लिम किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं हैं वे किसी कोर्ट में सफाई देने नहीं जाएंगे, लेकिन कुरान या पर्सनल ला के खिलाफ कोर्ट में जाने वालों का सफाया कर दिया जाएगा। यदि पर्सनल ला बदलने की कोशिश हुई तो बाला साहेब देवरस, अटलबिहारी वाजपेयी और राजीव गांधी को भी 'कलमा' पढ़ने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।

बताया जाता है कि इंटेलीजेन्स ब्यूरो की रिपोर्ट पर भोपाल में इस भाषण के टेप की प्रतियां जब्त कर ली गई हैं, लेकिन दिल्ली, उ०प्र० और बिहार के मुस्लिमबहुल क्षेत्रों में अब भी ये टेप धड़ल्ले से बट और बज रहे हैं। इन राज्यों के प्रशासन ने अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की है।

हिंदू राष्ट्र के सजग प्रहरी

जन-ज्ञान मासिक का नमूना

मुफ्त मंगाएं

केवल ५० पैसे का डाक टिकट भेजकर

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौल बाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृष्ण के सद्गुणों को अपनाएं

—राकेशरानी

दिल्ली, ६ सितम्बर "योगिराज श्री कृष्ण का जीवन भारतवासियों के लिए ही नहीं, समस्त मानव-जाति के लिए अनुकरणीय है। आज आवश्यता है कि हम उनके सद्गुणों को अपनाएं। समाज में फैली कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष कर। देश व धर्म की रक्षा के लिए तत्पर हों।" ये उद्गार आर्य नेत्री पण्डिता राकेशरानी ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा आयोजित विशाल श्री कृष्ण जन्माष्टकी (किशनगंज रेलवे स्टेशन स्थित गणेश लाइन मैदान) की सभा में कहे।

समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी शक्तिवेश ने युवकों का आह्वान किया कि वे समाज में व्याप्त अज्ञान, अन्याय और अभाव के विरुद्ध संघर्ष करें। संगीतकार श्री ओमप्रकाश रेडियो टी.वी. कलाकार श्री जी. आर. गुप्त, श्री पी. पी. पारवानी श्रीमती प्रकाश आर्या श्रीमती कृष्णा चड्ढा और श्री अनिल कुमार आर्य ने भी सभा को सम्बोधित किया।

जन-जागृति सप्ताह के अन्तर्गत आर्य समाज डी. सी. एम. रेलवे कालोनी किशनगंज मिल एरिया, नयाबांस (खारी बावली), पुलबंगश, कबीर बस्ती, राणा प्रताप बाग, सदर बाजार और आर्य पुरा में भी श्री कृष्ण जन्माष्टमी सभाएं सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि हुए। □

महात्मा वेद भिक्षुः द्वारा स्थापित दयानन्द संस्थान महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार कर रहा है। उदारतापूर्वक दान दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ५००)
२.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	५०)
३.	वेद ज्योति	२५)
४.	वेदांजलि : ३६५ मन्त्रों की व्याख्या	३५)
५.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति)	
६.	ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार	१५)
७.	संस्कारविधि [सजिल्द] :	१५)
८.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३०)
९.	अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार)	२०)
१०.	सत्यार्थ-प्रकाश (१०-१५ इंच) स्थूलाक्षर	१५१)
	आर्ट पेपर पर	२५१)
११.	ज्योति स्तम्भ :	१०)
१२.	वैदिक सम्पत्ति	८१)
१३.	योगासन :	२)
१४.	योग और ब्रह्मचर्य :	३)
१५.	Concept of God	५.०)
१६.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश :	२५)
१७.	LIGHT OF TRUTH	५०)
१८.	प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री	६)
१९.	अथर्ववेद परिचय :	६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर

१५६७, हरध्यान सिंह मार्ग,

करौलबाग, नई दिल्ली-५.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आषाढ़ अंक से आगे

हत्यारों का इतिहास

शहर आग और तलवार का शिकार हो गया, मस्जिद के मीनार और गुम्बद आग पकड़ चुके स्तम्भों और गुम्बदों की तरह चमकने लगे। मस्जिदों और स्नानागारों की छतों से पिघला सोना और सीसा बहने लगा, जिससे आसपास के खजूर और सरू के कुंजों को आग लग गई। महलों की जटित दीवारें सितारों की तरह गिर-गिरकर धराशायी होने लगीं उन राक्षसों की तरह, जिन्होंने स्वर्ग की दीवारें फांदने का प्रयत्न किया था। मकबरों में शेखों और पवित्र इमामों के पार्थिव अवशेष और अकादमियों में महान् और विद्वान् पुरुषों की अमर रचनायें खाक में मिल गईं। पुस्तकें आग में फेंक दी गईं और जहां आग दूर थी व तिगरीस नदी समीप थी, वहां तिगरीस नदी के पानी में बहा दी गईं। बड़े लोगों के महलों और रसोईघरों से सोने और चांदी के बर्तन इतनी मात्रा में अनजान मंगोलों के हाथ लगे कि उन्होंने पीतल और टीन की तरह उन्हें तोलकर बेचा। एशियाई शान और कला के खजाने, जो शताब्दियों से खलीफा के शहर में जमा थे, बर्बर लोगों की लूट का सामान हुए। ईरानी और चीनी सुनहरी महीन कपड़ों, अरबी घोड़ों, मिस्री खच्चरों, यूनानी और अबीसीनियन दासों और दासियों, सिक्कों के रूप में ढाले गये और सोने, चांदी, मोतियों और हीरों की इतनी बड़ी मात्रा मिली कि साधारण सैनिक सेनापतियों और स्वयं खान से भी अधिक धनी हो गये। यह सब तब हुआ, जब खलीफा के महल को छुआ भी नहीं गया, क्योंकि खान ने उसे अपने लिए रख लिया था।

चार दिन की लूट के बाद वह सफीर महीने की नवीं तारीख को खलीफा के साथ उसके महल में गया, जहां खान ने अतिथि के नाते अपने आतिथेय से कहा कि वह चाहता है कि उसका आतिथेय उसे जो कुछ देने योग्य है, दे। खान की इस नम्रता से खलीफा इतना आतंकित हो गया कि उसका सारा शरीर कांपने लगा और क्योंकि न तो उसके पास चाबियां थीं और न उसे मिल सकीं, उसने आदेश दिया कि चटखनियां और ताले तोड़ डाले जाएं। दस हजार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कीमती पोशाकें, दस हजार अशरफियां और अनेक हीरे-जवाहरात बाहर लाये गये, जिन्हें देखे बिना ही खान ने अपने साथियों में बांट दिया और तब उसने इन शब्दों में खलीफा को सम्बोधित किया—"तुम्हारा खुला खजाना मेरे सेवकों का है। अब अपना गुप्त खजाना पेश करो।" मस्त आजम ने एक स्थान की ओर इशारा किया, जिसे खोदने पर खजाने के दो हौज मिले। खलीफाओं के इतिहास में ये हौज बहुत प्रसिद्ध हैं। दोनों सोने की छड़ों से अटे पड़े थे। प्रत्येक का वजन १०० मिस्काल था। नसीरुद्दीन अल्लाह की बुद्धिमत्तापूर्ण अर्थव्यवस्था ने इन दोनों हौजों को भरना शुरू किया था, मस्तनजर के अपव्यय ने उन्हें खाली कर दिया और मस्त आजम की कंजूसी ने उन्हें पुनः भर दिया।

खलीफाओं के अन्तिम शासन काल के इतिहास की एक कहानी बताई जाती है कि जब मस्तनजर पहली बार इस खजाने को देखने आया, तब उसने ऊंची आवाज में प्रार्थना की कि "मालिक, मेरे अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी करो कि मैं इस योग्य होऊं कि अपने शासनकाल में इन दोनों हौजों को खाली कर दूं।" खजानची मुस्कराया और जब उससे इसका कारण पूछा गया, तब उसने कहा कि "जब तुम्हारा दादा इस खजाने को देखने आया था, तब उसने अल्लाह से यह दुआ मांगी थी कि उसका शासनकाल तभी तक चले, जब वह इन दोनों हौजों को भर ले, जब कि तुम इससे बिलकुल उलटी प्रार्थना कर रहे हो।" मस्तनजर ने इस सोने का इस्तेमाल उपयोगी संस्थाओं की स्थापना में किया, जिससे उसका नाम अमर हो गया—विशेषतः प्रसिद्ध अकादमी की स्थापना से। इस अकादमी का नाम उसी के नाम पर मस्तनजरिया रखा गया। इस अकादमी के अतिरिक्त उसने उम्म उल मदारिस (विद्यालयों की माता) भी स्थापित की। दूसरी ओर मस्तआजम ने अपनी कंजूसी से सोना जमा कर लिया, जब कि यदि वह अपने धन का इस्तेमाल समझदारी के साथ करता, अपने सैनिकों को वेतन और खिराज देता, तो वह अपने शासन को विनाश से बचा लेता।

हलाकू ने मस्तआजम के प्रति जो क्रूरता दिखाई, उसने सम्राट् मिडाज की इच्छाओं से सम्बन्धित यूनानी कहानी को सत्य कर दिखाया। उसने आदेश दिया कि भोजन की बजाय सोने से भरी तश्तरियां उसके सामने रखी जायें और जब खलीफा ने देखा कि उसके सामने भोजन नहीं, अपितु सोना पड़ा हुआ है, तब हलाकू ने एक दुभाषिये के माध्यम से उससे कहा कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"अकेले इस कारण कि यह भोजन नहीं, तुमने इसने अपनी रक्षा के लिए अपने सैनिकों में अथवा मुझ सन्तुष्ट करने के लिए मेरे सैनिकों में क्यों नहीं बांटा ?"

बहुत देर हो चुकी थी, जब मस्तआजम को अपनी कंजूसी के परिणामों पर पश्चात्ताप हुआ। रात भर जागते रहने के बाद और भूख व आत्मा की कचोट की यातना सह कर उसने प्रातःकाल कुरान के शब्दों में अल्लाह से दुआ की—"ओ मालिक, मेरे अल्लाह, सर्वशक्तिमान्, आप जिसे देना चाहते हैं, उसे देते हैं, और जिससे लेना चाहते हैं, उससे ले लेते हैं। आप अपनी इच्छा के अनुसार किसी को ऊपर उठा देते हैं और किसी को नीचे गिरा देते हैं। सब अच्छाइयां आपके हाथ में हैं और आप सब चीजों पर हावी हैं।"

हलाकू ने खलीफा के भाग्य के सम्बन्ध में विचार करने के लिए अपनी मन्त्रिपरिषद् की बैठक बुलाई। मन्त्रियों में इस बारे में सर्वसम्मति थी कि खलीफा को जीवित रखने से युद्ध और विद्रोह के खूनी बीज जीवित रहेंगे और उसकी हत्या करके खिलाफत का अधिराज्य समाप्त किया जा सकता है। फैसला हुआ कि खलीफा की हत्या कर दी जाये। लेकिन क्योंकि हलाकू स्वयं इस बात को अनुपयुक्त समझता था कि खलीफा को सामान्य अपराधी की तरह दंडित किया जाय और तलवार से हजरत मुहम्मद के उत्तराधिकारी का खून बहाया जा , इसलिए मस्तआजम को एक मोटे कपड़े में लपेटा गया और मार-मार कर उसकी हत्या कर दी गई। खलीफा के पवित्र व्यक्तित्व के लिए मजहबी लोगों में सम्मान की भावना इतनी अधिक थी और सम्राटों को मृत्युदण्ड देने के मामले में भी पूर्वी देशों का शिष्टाचार इस सीमा तक जाता था। सम्मान की इसी भावना के फलस्वरूप जब ओटोमन सुलतानों को विद्रोह के कारण अपने प्राण देने पड़ते हैं, तब उन्हें गला घोंटकर नहीं मारा जाता, अपितु उनके अंडकोश कुचलकर उनकी हत्या की जाती है—मृत्यु दण्ड देने वाले की कोमलहृदयता के अनुपम और व्यापक स्वभाव का क्या शानदार नमूना है !

जैसे खलीफा के देहान्त से चार दिन पूर्व बगदाद की लूट-पाट प्रारम्भ हुई थी, उसी प्रकार चालीस दिन बाद तक जारी रही; यहां तक कि अन्ततः बर्बर लोगों ने थक कर अपनी तलवारें गिरादीं और आग लगाने के लिए ईंधन भी न बचा। यदि हम अपमानित मानवता की सामान्य भयानकताओं को छोड़ दें, जो प्रत्येक लूटे गये नगर में दोहराई गईं और बगदाद में जिन्हें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
केवल विशालता के उच्चतम बिन्दु तक ले जाया गया, तो हम बगदाद की विजय के लिए, मस्जिदों को आग लगाने के लिए, मकबरों को अपवित्र करने के लिए, विशाल कोशों के विनाश के लिए और सोने-चांदी के बर्तन पिघलाने के लिए—यहां तक कि पवित्रता के गढ़ों के विध्वंस और खलीफा को राजगद्दी पलटने के लिए उतना दोषी न ठहरायेंगे, जितना पुस्तकालयों को तहस-नहस करने और हजारों-लाखों पुस्तकों की क्षति के लिए, जो आग की ज्वालाओं की शिकार हो गईं।

उनमें अरबी साहित्य के भंडार थे, जो लगभग ५०० वर्ष में जमा किये गये थे। इनके साथ फारसी साहित्य के स्मृति चिह्न थे, जो मदेन के विनाश से बचे थे। जैसे द्वितीय खलीफा ने मिस्र में अपने सेनापति को आदेश दिया था कि सिकन्दरिया के पुस्तकालय को नष्ट कर दिया जाये, उसी प्रकार उसने खुसरो वंश के निवास स्थान मदेन के पुस्तक भंडार को तिगरीस नदी में फेंकने का आदेश दिया। कुछ यूरोपियन इतिहास लेखकों ने उमर को इस घोर साहित्यद्रोह के दोष से मुक्त करने का विफल प्रयत्न किया है। उस पर आग और पानी द्वारा यूनानी और ईरानी पुस्तकालय के दोहरे विनाश का दोहरा अपराध लगाया जाता है। ५०० वर्ष पूर्व जैसे दो वर्ष में अरबों ने इन पुस्तकालयों को नष्ट किया, वैसे ही और उतने ही समय में मंगोलों ने अलामुत और बगदाद के अरबी के पुस्तकालयों को नष्ट किया। इस दोहरे विनाश के साथ उसी शताब्दी में त्रिपोली, निशावर और काहिरा के महान् पुस्तकालयों का विनाश भी हुआ। इस प्रकार एक ही राशि में सात ग्रहों के एकत्र हो जाने से (कुछ ज्योतिषियों के कथनानुसार जो इस बात का संकेत था कि संसार भर में जल प्रलय आयेगी और कुछ अन्य ज्योतिषियों के कथनानुसार संसार भर में विनाश होगा) सही तौर पर यह माना जा सकता है कि ये मंगोलों के डूब जाने और पुस्तकालयों के जलाये जाने के संकेत थे।

अलामुत और बगदाद के पुस्तकालयों के विनाश से एक अत्यन्त शोकजनक बात सामने आती है। वह यह है कि दोनों का पतन सुशिक्षित व्यक्तियों के अपराध के फलस्वरूप हुआ। अलामुत के पुस्तकालय का विनाश नक्षत्रवेत्ता नसीरुद्दीन की धोखेबाजी के कारण हुआ और बगदाद के पुस्तकालय का विनाश इब्न अल कामी की धूर्तता के कारण। दोनों ही प्रतिशोध की बलि-वेदी पर चढ़ गये। अब हम इन दोनों विद्वान् राजनेताओं के भाग्य की चर्चा करेंगे, जो अपनी महती प्रतिभा और दुष्ट हृदय के कारण विशिष्ट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थे, जिन्होंने हशीशिनों और खिलाफत का तख्ता पलटा। कुछ शब्द लिखना ही पर्याप्त होगा। बगदाद की विजय के बाद नसीरुद्दीन ने मराग़ा में प्रसिद्ध वेधशाला स्थापित की। इस वेधशाला और उसकी खगोल विज्ञान तालिकाओं के ही कारण उसका और हलाकू का नाम खगोल विज्ञान के इतिहास में अमर है। इस प्रकार इस विज्ञान ने कम से कम उन अनेक बुराइयों से कुछ लाभ उठाया, जिनमें ज्योतिष विज्ञान को उसकी बांदी बना दिया गया है। सुशिक्षित पुरुष और वजीर इब्न अल कामी ने अपनी आशा के अनुरूप इनाम हासिल करने की बजाय गद्दार को मिलने वाला फल भोगा। इस प्रकार मंगोलों ने उसके साथ अत्यन्त तिरस्कारपूर्ण बरताव किया और वह कुछ ही दिनों में पश्चात्ताप और निराशा का शिकार होकर मर गया। बगदाद के निवासियों ने प्रत्येक दीवार, कारवां, सराय और विद्यालयों के मुख्य द्वारों पर संगमरमर पर बड़े अक्षरों में यह खुदवाया कि "जो इब्न अल कामी पर लानत न भेजे, उस पर अल्लाह की लानत।" इब्न अल कामी के एक पक्षधर ने, जो शिया था, इन खुदाइयों में से एक में से "न" शब्द निकलवा दिया। उसके तलवों पर सत्तर बेंत लगाये गये। हशीशिनों और खिलाफत के पतन के इतिहास में इब्न अलकामी का नाम नसीरुद्दीन के नाम के साथ घनिष्ठता से गुंथा हुआ है। छुरे के साम्राज्य और हजरत पैगम्बर साहब के डंडे के डर से एशिया चिरकाल तक कांपता रहा।

बगदाद की विजय ने हमारा ध्यान हमारे वास्तविक विषय से करीब-करीब दूर कर दिया है—न केवल विषय की आन्तरिक महत्ता से अपितु इस कारण भी कि इसका हशीशिनों के अन्त से घनिष्ठ सम्बन्ध है। (हशीशिनों के पतन ने खिलाफत के पतन के लिए मार्ग प्रशस्त किया।)

जब रोदबार और कोहिस्तान में हशीशिनों के किले जमींदोज कर दिये गये और अनेक हशीशिन मार डाले गये या तितर-बितर कर दिये गये, उन्होंने चौदह वर्ष तक सीरिया की पहाड़ियों में मंगोलों, फ्रांसीसियों और मिस्री सुलतान बीबर्स की सेनाओं के विरुद्ध अपना प्रतिरोध जारी रखा। बीबर्स मिस्र के सिरकासियन ममलूकों के सबसे महान् राजाओं में से एक था।

इस राजा की, जिसने उत्साहपूर्वक उच्चतम सत्ता प्राप्त करने का प्रयत्न किया, प्रवृत्ति इस ओर न थी कि हशीशिनों के बचे-खुचे संघ के साथ मिलकर सत्ता का उपयोग किया जाये। हशीशिनों का संघ ईरान की पहाड़ियों से खदेड़ दिया गया था। उसके शासन काल में फ्रांसीसी और अरब जहाजों ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजदूतों के साथ मिस्री बन्दरगाहों पर लंगर डाला। ईसाई और अरब राजाओं ने उदाहरणार्थ जर्मन सम्राट् अरागान के अलफोंजो, यमन के सेनापति और अन्यों ने मूल्यवान् उपहारों के साथ उन्हें सीरियाई इस्राईलियों के पास भेजा था। बीबर्स ने यह दिखाने के लिए वह हशीशिनों के संघ से बिल्कुल नहीं डरता, इन सब उपहारों पर आम चुंगी लगा दी और सीरिया में बैठे वरिष्ठ अधिकारी को धमकियों और निन्दा से भरा एक पत्र लिखा। क्योंकि हशीशिन ईरान में अपने दुर्भाग्य के कारण आतंकित और अपमानित थे, इसलिए उन्होंने नम्रतापूर्ण ढंग से उत्तर दिया और प्रार्थना की कि फ्रांसीसियों से सन्धि करते समय सुलतान उन्हें न भूलेगा अपितु उन्हें अपना दास समझ कर सुलतान ने उनकी रक्षा का जो उत्तरदायित्व लिया है, उसके प्रतीक के रूप में उन्हें अपनी सन्धि में सम्मिलित कर लेगा। हुआ यह कि बीबर्स ने, जिसने उसी वर्ष सरदार हास्टिपलरों से सन्धि की थी, सन्धि की शर्तों में एक शर्त यह भी रखी कि इस्माईली जो खिराज अदा करते है, वह समाप्त कर दी जाये। अगले वर्ष इस्माईलियों का एक राजदूत उसके पास आया, जिसने इन शब्दो के साथ उसे एक धन राशि भेजी कि वह धन जो अब तक फ्रांसीसियों को दिया जाता था, भविष्य में सुलतान के खजाने में जाना चाहिए और उसका इस्तेमाल असली मजहब के रक्षकों को वेतन देने के लिए किया जाना चाहिए।

तीन वर्ष बाद, जब सुलतान बीबर्स सीरिया में फ्रांसीसियों के विरुद्ध आगे बढ़ रहा था, अनेक नगरों के सेनापति उसे खिराज देने आये। लेकिन हशीशिनों के परमाधिकारी नजमुद्दीन ने ऐसा करने की बजाय प्रार्थना की कि हशीशिनों का संघ फ्रांसीसियों की बजाय सुलतान को जो खिराज देता है, उसमें कमी कर दी जाये। इस्माईली दुर्ग अलीका के सेनापति सरमुद्दीन मुबारक ने पहले सुलतान का रोष सहेड़ा लेकिन सिहिन अथवा कुछ अन्यों के कथनानुसार हामा के शासक के हस्तक्षेप पर वह अधिसंख्य साथियों के साथ बीबर्स के समक्ष उपस्थित हुआ, जिसने उसके साथ मित्रवत् व्यवहार दिया और उसे सम्मानसूचक उपहारों से लाद दिया। उसने सीरिया में स्थित इस्माई-लियों के सब किलों की उच्चतम कमान उसे सौंप दी, जिस पर मिस्री सुलतान के नाम पर नजमुद्दीन का नहीं, अपितु सरमुद्दीन का शासन होना था। सुलतान की सम्पत्ति के रूप में मसीयत अमीर असदुद्दीन को कमान सौंप दी गई। उसके आदेशों के अनुकूल सरामुद्दीन इस किले की दीवारों के समक्ष प्रस्तुत हुआ, जिस पर उसने स्वयं अधिकार कर लिया—अंशत समरनीति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्वारा और अंशत: अनेक निवासियों की हत्या द्वारा हशीशिनों के संघ के भूतपूर्व अधिकारी नजमुद्दीन ने, जो सत्तर वर्ष का बूढ़ा था और उसके पुत्र ने सुलतान से दया की भीख मांगी उसने उस पर दया की और नजमुद्दीन को उसकी सत्ता लौटा दी। सरमुद्दीन ने भी उसके साथ सत्ता भोगनी थी। इसके बदले में दोनों ने एक लाख बीस हजार दिरहम की खिराज अदा करनी थी। सरमुद्दीन से दो हजार अशरफियों की मांग की गई और सरमुद्दीन ने अपनी आज्ञाकारिता और निष्ठा के वचन के रूप में अपने पुत्र को सुलतान के दरबार में छोड़ दिया।

इस बीच सरमुद्दीन ने मसीयत पर कब्जा करके सुलतान द्वारा नामजद शासक को निकाल बाहर किया लेकिन क्योंकि वह सुलतान की आगे बढ़ रही सेनाओं के विरुद्ध अपने स्थान की रक्षा न कर सका उसने अलीका के किले में छलांग लगा दी। असमुद्दीन दमिश्क से लौट आया, जहां उसने पुन: मसीयत में शरण ली थी और सुलतान के सैनिकों ने जिसकी कमान उसे सौंपी थी—जिन्होंने उसे एक सेना और अंगरक्षक भी दिया था। हामा के नरेश मलिक मंसूर ने जिस पर बीबर्स ने अमीर की वापसी और सरमुद्दीन को अपदस्थ करने का उत्तरदायित्व डाला था, सरमुद्दीन को बन्दी बना लिया और वह उसे सुलतान के समक्ष लाया, जिसने उसे एक कोठरी में डाल दिया। शेवाल के नवें दिन अलीका के किले ने सुलतान की सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

भूतपूर्व परममठाधिकारी नजमुद्दीन ने एक बार फिर सुलतान के नाम पर सीरिया में इस्माईली किलों की कमान संभाली। सुलतान ने शम्सुद्दीन को दरबार में रख लिया—उसके पिता की वफादारी के बन्धक के तौर पर। जब उस पर सन्देह प्रकट किया जाने लगा, वह स्वयं दरबार में आया और उसने अपने पुत्र शम्सुद्दीन के साथ सब किले सौंपने और भविष्य में मिस्र में रहने का पेशकश की। उसकी पेशकश मंजूर करली गई और शम्सुद्दीन कहेफ रवाना हो गया, ताकि वहां के निवासियों को प्रेरित कर सके कि वे बीस दिन के अन्दर आत्मसमर्पण करदें। जब उसकी अवधि समाप्त हो गई, वह तब भी न आया। इस पर सुलतान ने उसे पत्र लिखकर डांटा और उससे अपना वचन पूरा करने को कहा। शम्सुद्दीन ने यह इच्छा प्रकट की कि कोलाइया का किला उसके कब्जे में रहने दिया जाये। बदले में उसने वचन दिया कि वह शेष सब किले वापस कर देगा। सुलतान ने उसकी प्रार्थना मान ली और हामा के न्यायाधीश अलामुद्दीन संजार को भेजा, ताकि वह शम्सुद्दीन से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निष्ठा की शपथ और कहेफ की चावियां ले। लेकिन शम्सुद्दीन ने गुप्त रूप से वहां के निवासियों को भड़का दिया, जिसके फलस्वरूप उन्होंने राजदूत को किले में घुसने ही न दिया।

जब दूसरा राजदूत भेजने का भी कोई वेहतर असर न हुआ, तव बीवर्स ने आदेश दिया कि किले को घेर लिय जाये। इस पर शम्सुद्दीन कहेफ से चला आया और सुलतान के पास गया जिसने हामा के समक्ष डेरा डाल रखा था। उसका सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। लेकिन उसें एक पत्र में सूचना मिली कि कहेफ़ के निवासियों ने हशीशिनों को डेरे में घुसा दिया है, ताकि उसके मुख्य अमीरों की हत्या कर दी जाये। बीवर्स ने शम्सुद्दीन और उसके सब साथियों को गिरफ्तार करवा दिया और वह उन्हें मिस्र ले गया। उसी समय हशीशिनों के संघ के दो अधिकारी, जिन्होंने खवावी के किले में रहने वाले अपने मित्रों को सुलतान के समक्ष आत्मसमर्पण के लिए राजी किया था, सरमीन में पकड़ लिये गये। इस किले ने समझौता-वार्त्ता के लिए आत्मसमर्पण कर दिया, कोलाइया ने शक्ति के समक्ष झुक कर आत्म-समर्पण कर दिया और अगले वर्ष मनीका और कदमस के किले सुलतान के हाथों में जा पड़े। वहेफ़ के निवासियों ने अधिक समय तक प्रतिरोध का विरोध करना चाहा, लेकिन जब उन पर तंग घेरा डाल दिया गया और उनका दाना-पानी बन्द कर दिया गया, तब अन्ततः उन्होंने नगर की चाबियां बीवर्स को भेज दीं और सिलवाइद महीने की २२ तारीख को अमीर जलालुद्दीन अकोंसा किले में प्रविष्ट हुआ।

इस क्षण से बीवर्स उन सब छोटे-बड़े किलों का मालिक बन गया, जो इस्माईलियों के कब्जे में थे और उसने सीरिया में उनकी शक्ति नष्ट कर दी, जैसे हलाकू ने ईरान में उनकी शक्ति नष्ट की थी। मसीयत के बाद परमाधिकारी का निवास स्थान शिऊन हाल ही में सीरियाई इस्माईलियों में सबसे बड़े नायकों में से एक सेनापति हम्जा के वीरतापूर्ण कारनामों के कारण प्रतिष्ठित था। शिऊन एक चट्टान पर स्थित मजबूत जगह थी, जिसकी जल सप्लाई पर्याप्त थी और जो लटकिया से केवल एक दिन की यात्रा योग्य दूरी पर था। ऊपर हम ने जिस हम्जा की चर्चा की है उसे हजरत पैगम्बर के साथी और इस्लाम के शूरवीरतम नायकों में से एक हम्ज़ा के साथ उलझाया नहीं जाना चाहिए—न ही उस हम्जा के साथ जो ड्रूजिज के मजहब का संस्थापक था। हशीशिनों के अधिसंख्य युद्ध और उद्योग, जिहादियों अ मिस्री सुलतान बीवर्स की सेनाओं के विरुद्ध उनका वीरतापूर्ण प्रतिरोध

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और उनके सारे इतिहास का दुस्साहसपूर्ण स्वरूप सीरियाई प्रेम कथा लेखकों और कथावाचकों के लिए उपजाऊ स्रोत प्रस्तुत करता था और यह एक ऐसा स्रोत था, जिसका उन्होंने लाभ उठाथा।

यह हम्जानामा का मूल स्रोत था—एक प्रकार की क्षात्रधर्मी प्रेम कथा जो अन्तार, दुलहम्मत, बेनीहिलाल और अन्य मिस्री रचनाओं की शैली पर रचा गया था। ओटोमनों द्वारा सीरिया की विजय के बाद हम्जा के कमालों और कारनामों की कहानियां अरब कथावाचकों और कहवाघरों में भाषण देने वालों के मुंह से निकलकर तुर्कों तक पहुंच गईं और हम्जा ने सीद बट्टल के साथ जो हारूं रशीद द्वारा यूनानियों के घेरे के समय मारा गया था, तुर्क प्रेम कथाओं के लिए समृद्धतम सामग्री दी, जिनमें केवल हम्जा और सीद बट्टल के कमालों का वर्णन है। अनातोलियान संजक सुलतानगी का मकबरा आज भी एक ऐसा स्थान है, जहां तीर्थयात्री बार-बार जाते हैं। कानूनसाज सुलतान सुलेमान ने वहां एक मस्जिद, एक गिरजाघर और एक अकादमी खुलवा दी है।

मसीयत की विजय के बाद अलीका भी जीत लिया गया और अन्ततः दो वर्ष बाद वहेफ, मेनका, कदमस व एंटे-लेबनान में स्थित अन्य किले भी जीत लिये गये। इस प्रकार ईरान और सीरिया दोनों में इस्माईलियों का तख्ता पलट दिया गया। बताया जाता है कि हत्या की श्रृंखलाओं में उनका अन्तिम प्रयत्न फ्रांसीसी सम्राट् सेंट लुई की हत्या का था, लेकिन फ्रांसीसी लेखकों ने पहले ही इस कल्पना की असत्यता प्रदर्शित कर दी है।

अब ईरान और सीरिया दोनों में इस्माईलियों की सत्ता का अन्त हो चुका था। रोदबार में परमाधिकारी और कोहिस्तान व सीरिया में परम मठधिकारियों के किलों का पतन हो चुका था। हशीशिनों के गिरोहों का कत्लेआम हो चुका था और वे तितर-बितर हो चुके थे। उनके सिद्धान्त सार्वजनिक तौर पर निन्दित हो चुके थे। लेकिन फिर भी गुप्त रूप से उनकी शिक्षा दी जाती थी और हशीशिनों का संघ जेसुइटों के संघ की तरह उनके दमन के बाद भी चिरकाल तक जारी रहा। विशेष रूप से कोहिस्तान में उनके अवशेष अब तक कायम थे। कारण यह कि वह एक ऐसा क्षेत्र था जो अपने पर्वतीय स्वरूप के कारण आस पास के देशों की अपेक्षा अधिक अनुपयोगी था और संघ के अत्याचारियों का वहां पहुंचना अधिक कठिन था। इसलिए जेसुइटों के पक्षधरों को वह अधिक सुरक्षित शरणस्थल मिल गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अलामुत और बगदाद पर कब्जे के सत्तर वर्ष बाद हलाकू के आठवें उत्तराधिकारी अबूसईद बहादुर खां के शासन काल में सारा कोहिस्तान इस्माईलियों के घातक सम्प्रदाय के अर्पित कर दिया गया। (अबूसईद बहादुर खां के बारे में हम यह भी बता दें कि वह विद्याओं का महान् रक्षक था जिसे वसाफ़ ने अपनी इतिहास सम्बन्धी पुस्तक समर्पित की थी।) इस्लामवाद का सिद्धान्त पर्वतीय शिलाओं की तरह कठोर उनके हृदयों में प्रविष्ट न हो सका था। प्रान्त के शासक शाह अली सजस्तानी की सहमति से अबू सईद ने निश्चय किया कि इन शरारतियों और काफ़िरों के धर्मान्तरण के लिए एक प्रचारक दल भेजा जाये। इस दल में उत्साही धर्मगुरु सम्मिलित थे। इसका नेता शेख अहमदुद्दीन बुखारी था, जो प्रतिष्ठिततम विधिवेत्ताओं में से एक था। इस नगर के विध्वस्त होने पर वह कोहिस्तान भाग गया था। उसके पौत्र जलाली ने अपनी पुस्तक नासह उल मलूक तैमूर के पुत्र सुलतान शाहरुख को समर्पित की। उस पुस्तक में उनके पिता के मुंह से इस प्रचारक दल का इतिहास बताया गया है। वह अपने पिता के साथ कोहिस्तान गया था।

अहमदुद्दीन अपने दो पुत्रों हसामुद्दीन और नजमुद्दीन (जलाली के पिता) और चार अन्य उलेमाओं, कुल मिलाकर सात व्यक्तियों के साथ इस्माईलियों के मुख्य स्थान केन गया, जहां हसन द्वितीय के प्रकाशमान काल के बाद से मस्जिदें गिर चुकी थीं, पवित्र संस्थाएं क्षीण हो चुकी थीं जहां मिम्बर से कुरान का शब्द न सुना जाता था और न ही मीनार से अजान की आवाज आती थी। क्योंकि इस्लामवाद के कर्त्तव्यों में से प्रथम है दिन में पांच बार नमाज और इसके लिए पुकार ऊंची आवाज में वफ़ादारों के धर्मसार की घोषणा करता है, अहमदुद्दीन ने निश्चय किया कि अपना अभियान इसी के साथ प्रारम्भ किया जाये। फलस्वरूप वह अपने छह साथियों के साथ हथियारबन्द होकर केन के किले के छज्जे पर गया, जहाँ से उसने उसी क्षण चारों ओर पुकारा "ला इला इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह। नमाज के लिए उठ खड़े होओ, नेकी करने के लिए उठ खड़े होओ।" नगर के काफ़िर निवासियों ने चिर काल से यह पुकार न सुनी थी इसलिए वे इस पुकार पर मस्जिद में एकत्र होने की बजाय पुकारने वालों के विरुद्ध उत्तेजित होकर हुल्लड़ मचाने लगे। यद्यपि अहमदुद्दीन ने सावधानी के तौर पर अपने साथ हथियार ले लिये थे, उन्होंने अपनी रक्षा के लिए अपने प्राण देकर शहादत का ताज खरीदना उपयुक्त न समझा, अपितु उन्होंने एक नाली में शरण ले ली, जहां वे छिप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
गये। ज्यों ही लोग तितर-बितर हुए, वे पुनः छज्जे पर चढ़ गये और उन्होंने पुनः अजान दी और वे फिर नाली में छिप गये। इस प्रकार उनका हठीला उत्साह शासक की सत्ता के समर्थन से काफिरों के कानों को अजान के फार्मूले का अभ्यस्त करने में सफल हो गया। अन्ततः वह उन्हें नमाज के लिए अभ्यस्त करने में भी सफल हो गया। इस प्रकार उस ने कुफ्र और नास्तिकता की वंजर भूमि में इस्लामवाद के सच्चे सिद्धान्त के अच्छे बीज बोये।

जब अबू सईद की राजनैतिक बुद्धिमत्ता ईरान में इस्माईली सिद्धान्त के समूलोन्मूलन के लिए प्रयत्नशील थी, सीरिया में उसकी राख अब भी सुलग रही थी और समय-समय पर उससे विनाशकारी ज्वालायें निकलती थीं, जो कत्ल किये गये शिकारों के खून से बुझाई जाती थीं। क्योंकि इस सिद्धान्त का प्रादुर्भाव मिस्र में हुआ था और इसने फातिमियों के महत्त्वाकांक्षी इरादों के हथियार का काम किया था, इसलिए उस देश के सरकासियन सुलतानों ने बदला लेने और तलवार का प्रतिरोध करने वाले शत्रुओं पर छुरा आजमाने के लिए हत्यारी नीति के दूर-दूर तक फैले इस के अन्तिम फलों का लाभ उठाया। हमें ऐसे एक प्रयत्न का स्मरणीय उदाहरण अमीर कारा सोनकर के इतिहास में मिलता है, जो मिस्री सुलतानों के दरबार से चला गया था और मंगोलों के खान की नौकरी करने लगा था। □

जन-ज्ञान (मासिक)

की

१० प्रतियां केवल २०) की वी० पी० से मंगाएं और अपने मित्रों को भेंट करें। २० या २० से अधिक प्रतियां मंगाने पर मूल्य १.७५ पैसे प्रति होगा।

कागज–छपाई–डाक व्यय सब महंगे
पर प्रचार के लिए
हम जन-ज्ञान आज भी लागत से कम मूल्य पर
दे रहे हैं।

हिन्दू राष्ट्र घोषित कराने के लिए

हमारा साथ दीजिए।

जन-ज्ञान (मासिक), नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाये जाएं।

२. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना या किसी भी सरकारी विभाग में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. पंजाब, कश्मीर, असम व देश के अन्य भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यंत्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के स्थायी तौर पर बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ-पत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह लिखे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ग्राम, नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १९ साथी और बनाइये। इस प्रकार २० सदस्य बनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का बनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक बनाया जाए—वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय बना लैटर-हैड, रसीद बुक आदि छपवा लें। स्थापना के दो मास के भीतर आप एक कार्यकर्त्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य बनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य बांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद बने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे।

दान के रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे, किन्तु आप को सारा हिसाब नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंग कर नई समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र के गौरव, परम्पराओं, इतिहास और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। इसी भावना से सब कार्य करें, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं।

(प्रो०) धर्मवीर, प्रधानमंत्री
अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पैसे के पुजारी : गो मांस के व्यापारी

—क्षितीश वेदालंकार

देश में २८०० कसाई गृह चल रहे हैं।
प्रतिवर्ष सवा चार करोड़ पशु मारे जाते हैं।
सरकार गो-मांस का निर्यात कर रही है।
और हम कहते हैं अहिंसा परमो धर्मः !

गायें हमारी हैं, हम गायों के हैं, जहां गायें हों वहां हम हों। यह कहकर हमारे पूर्वजों ने गायों के साथ अपने अस्तित्व को इस प्रकार जोड़ दिया था कि गायों से अलग उसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। गायों के अन्दर समस्त देवताओं के निवास की कल्पना भी व्यर्थ नहीं है। जन जीवन के लिए गायों के महत्त्व को समझकर ही वेद ने यहां तक कहा था कि 'जो तुम्हारी गाय की हत्या करे, उसे गोली से उड़ा दो।' महात्मा गांधी और आचार्य विनोवा भावे देश में गोहत्याबन्दी का स्वप्न देखते-देखते चले गये, परन्तु उनका स्वप्न आज तक पूरा नहीं हुआ।

आर्थिक महत्ता

इस बारे में धार्मिक दृष्टि के अलावा आर्थिक दृष्टि भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। भारत में प्रतिवर्ष दुधारू गायों से साढ़े तीन करोड़ टन दूध मिलता है जिसकी कुल कीमत लगभग ६० अरब रुपये होती है। सात करोड़ बैलों के माध्यम से लगभग तीन करोड़ किलोवाट ऊर्जा मिलती है जिसकी कुल कीमत ५० अरब रुपये के आस-पास बैठती है। १६ करोड़ गायें और उनके वंशज तथा ६ करोड़ भैंसें और उनके वंशज लगभग ८४ करोड़ टन गोबर देते हैं। अगर उसका समुचित उपयोग गोबर व गैस संयंत्रों में किया जाय तो उससे भी ५० अरब रुपये की भोजन बनाने की गैस मिल सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस गोबर से जो खाद तैयार होगी, उसकी कीमत भी ३० अरब रुपये के आस-पास बैठेगी। इस प्रकार इन पशुओं से उपलब्ध सारी सामग्री का उपयोग किया जाए तो देश को लगभग दो खरब रुपयों की प्राप्ति होगी जो हमारे देश की सम्पूर्ण आय के १२ प्रतिशत के बराबर है। ये कितने चौंकाने वाले आंकड़े हैं।

विनाशकारी नीति

यदि इन पशुओं को कत्ल करके उनके स्थान पर ट्रक, ट्राली और ट्रैक्टर की व्यवस्था करनी हो तो उनको चलाने के लिए पैट्रोल और डीजल की भारी मात्रा में आवश्यकता पड़ेगी। गोबर के स्थान पर रासायनिक खाद पर जितनी राशि खर्च करनी पड़ेगी वह भारत की छठी पंचवर्षीय योजना से भी कहीं अधिक होगी।

यह पशुवध क्यों ?

भारत में गोवंश का नाश जिस तेजी से हो रहा है, वह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। प्रतिवर्ष ३० लाख पशु मारे जाते हैं। अहिंसा को परम धर्म मानने वाले इस देश में २८०० कसाई घर चल रहे हैं, जहां दिन-रात पशुओं की गर्दन पर कुठाराघात होता है। भारत का शासक वर्ग इतना धन लोलुप है कि गोवंश की हत्या करके धन अर्जन करने पर भी उसे कोई आपत्ति नहीं। गोमांस का उत्पादन प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। जब खाड़ी देशों में २५० रुपये प्रति किलो गोमांस बिकता हो तो गोमांस का निर्यात करके धन कमाने में किसी को लज्जा क्यों आये ?

हम कितने ईमानदार ?

कभी-कभी ऐसा लगता है कि गोरक्षा के प्रति स्वयं भारत की जनता भी ईमानदार नहीं है। जो लोग इस समस्या को केवल धार्मिक दृष्टि से देखते हैं, उनके लिए मानो तो यह जीवन और इस लोक से बाहर का विषय हो गया और जो केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं, उनके सामने केवल पश्चिम का अर्थशास्त्र है। इन अर्थशास्त्रियों को पाश्चात्य लोगों की तरह ही गोमांस का निर्यात करके धन कमाने के लिए गोवध करने में कोई बुराई प्रतीत नहीं होती। कितनी बड़ी विडम्बना है कि गाय की पूजा करने वाले देश में गाय की केवल पूजा होती है, उसकी रक्षा नहीं होती। अब स्थिति यहां तक पहुंच गयी है कि जिन्दा गाय की अपेक्षा मरी हुई गाय की ज्यादा कीमत उठती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यूरोप में दूध की नदियां

एक तरफ भारत जैसे धर्मपरायण देश में यह हालत है, और दूसरी ओर पश्चिमी यूरोप में इस साल के आखिर तक ५ लाख गायों की केवल इसलिए हत्या कर दी जायेगी क्योंकि वहां दूध और मक्खन इतना अधिक हो गया है कि उनके पास उसके रख-रखाव की पूरी तरह व्यवस्था नहीं है। जिन किसानों को पहले अधिक दूध उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता था, अब उन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। कि एक सीमा से अधिक दूध या दूध से बनी चीज़ों के उत्पादन पर उन्हें जुर्माना देना पड़ेगा। ग्रीस और इटली को छोड़कर सारे पश्चिम यूरोप में दूध और दूध से बनी घीजों की इतनी भरमार हो गई है कि वे बड़ी संख्या में गायों को मारने की बात सोच रहे हैं।

हिन्दू संस्थाओं का दायित्व

अब पता लगा है कि भारत सरकार यूरोप से बीस हजार गायें मंगा रही है। क्यों न आर्यसमाज सरकार से आग्रह करके सौ से लेकर हजार तक गायें प्राप्त करे और व्यवस्थित ढंग से डेयरी उद्योग को चलाये। यदि राधास्वमी लोग दयालबाग जैसे औद्योगिक नगर स्थापित कर सकते हैं तो आर्यसमाज क्यों न आर्य डेरी उद्योग नगर स्थापित करे? अन्य हिन्दू संस्थाओं को भी यही व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इससे जहां अनेक युवकों को रोजगार मिलेगा वहां देश की बहुत बड़ी कमी को पूरा करने का अवसर मिलेगा। □

भारत की अखण्डता भारत के महान् भविष्य के लिए आवश्यक

भारत स्वतन्त्र हो गया, पर अखण्डता प्राप्त नहीं कर सका। इस अखण्डता को प्राप्त करना है और इसे किया जाएगा। जैसे बने और जो भी उपाय अपनाना पड़े, इस विभाजन को मिटाना होगा। भारत की अखण्डता भारत के महान् भविष्य के लिए आवश्यक है।

—महायोगी श्री अरविन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन् १९८६ की वैदिक डायरी

सन्ध्या, हवन, यज्ञ के मन्त्र, प्रत्येक पृष्ठ पर वैदिक सूक्ति
मूल्य ८ रु०, दीपावली तक कम से कम दस प्रतियाँ लेने पर
मूल्य पाँच रुपये ही रहेगा।

सन् १९८६ का कलैंडर पाँच रंगों में

(दस धार्मिक नेताओं का)
मूल्य दो रुपये (१२५ रुपये सैकड़ा)
आदेश के साथ पूरा अथवा कम से कम
चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

पंडित रघुनन्दन शर्मा की अमर कृति

वैदिक सम्पत्ति

का नया संस्करण

वृहत्काय अमूल्य ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति
का नया संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।
इसका मूल्य १०१ रुपये होगा, लेकिन १२ नवम्बर (दीपावलि) तक
पूरा मूल्य अग्रिम भेजने वालों को केवल ७५ रु० में मिलेगा।
धन सहित अपना आदेश शीघ्र भेजें।
पूरा मूल्य अग्रिम प्राप्त होने पर प्रेषण व्यय हम देंगे।

दयानन्द संस्थान
१५९७, हरध्यान सिंह रोड,
करोलबाग, नई दिल्ली-५

प्रकाशक सम्पादक पंडिता राकेश रानी द्वारा 'जन-ज्ञान' मुद्रणालय में मुद्रित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन–ज्ञान
(मासिक)
P.O. अलीपुर दिल्ली-३६

कार्तिक
२०४२
नवम्बर १९८५

D-C-201
R.N. 107119/65

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दांतों का डाक्टर

दांत का दर्द

मुह की दुर्गन्ध

मसूड़ो की सूजन

ठंडा गर्म पानी ल

डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर
नई दिल्ली-110015 फोन : 539609.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi